Springboard ACADEMY

RAS FOUNDATION

राजस्थान कला एवं संस्कृति

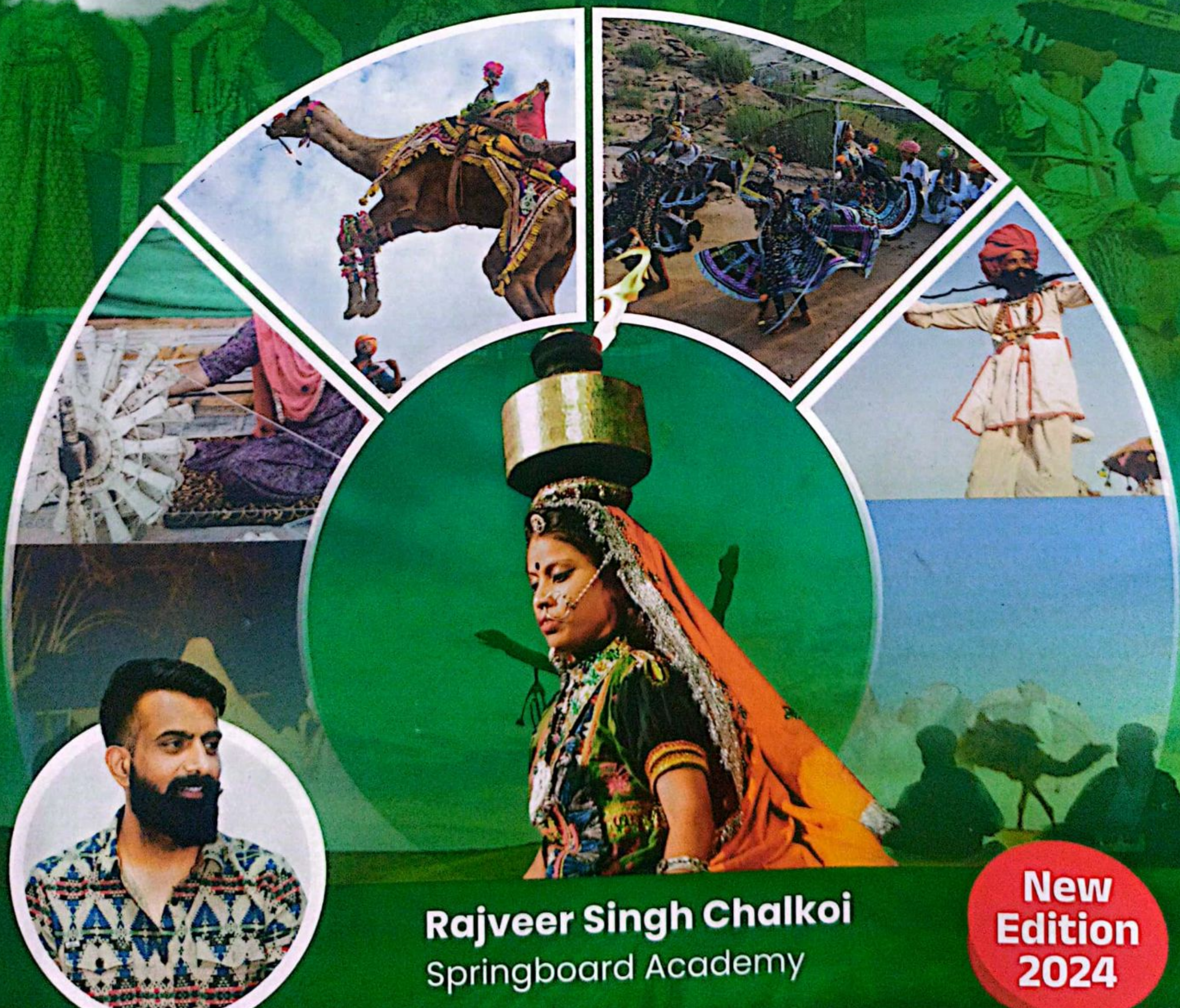

Rajveer Singh Chalkoi
Springboard Academy

New Edition 2024

CamScanner

MAHECHA
PUBLICATION

Springboard ACADEMY

राजस्थान कला एवं संस्कृति

RAS FOUNDATION

CLASS NOTES

Available @ JAIPUR • JODHPUR
www.thenoteshub.com

The Notes Hub

Contact Now : **7610010054, 7300134518**

All Right Reserved with the **MAHECHA PUBLICATION**

CamScanner

राजस्थान कला एवं संस्कृति

TABLE OF CONTENTS

Page No.

CHAPTER-1 राजस्थान के त्योहार एवं मेले .... [1-17]

CHAPTER-2 राजस्थान के लोक देवता एवं लोकदेवियाँ .... [18-40]

CHAPTER-3 सन्त एवं सम्प्रदाय .... [41-67]

CHAPTER-4 राजस्थान के लोकगीत एवं लोक गायन शैलियाँ .... [68-78]

CHAPTER-5 राजस्थान के लोक नृत्य .... [79-88]

CHAPTER-6 राजस्थान की चित्रकला .... [89-109]

CHAPTER-7 राजस्थान की हस्तकला .... [110-118]

CHAPTER-8 राजस्थान के आभूषण .... [119-121]

CHAPTER-9 राजस्थानी वेशभूषा एवं पहनावा .... [122-125]

CHAPTER-10 राजस्थान के लोकनाट्य .... [126-135]

CHAPTER-11 राजस्थान की जनजातियाँ .... [136-144]

CHAPTER-12 राजस्थान की साहित्य एवं बोलियाँ .... [145-162]

CHAPTER-13 राजस्थानी कला एवं साहित्य से संबंधित सस्थाएँ .... [163]

CHAPTER-14 राजस्थान की बोलियाँ .... [164-168]

CHAPTER-15 राजस्थान की स्थापत्य कला .... [169-206]

CHAPTER-16 राजस्थान के मेले, पर्व, उर्स एवं उत्सव .... [207-217]

CHAPTER-17 राजस्थान के वाद्य यंत्र .... [218-228]

CHAPTER-18 राजस्थान की रीति-रिवाज एवं रीति-रिवाज .... [229-233]

राजस्थान के त्योहार एवं मेले

- हिन्दू त्योहार विक्रमी संवत के अनुसार मनाए जाते है। यह एक चन्द्रमा आधारित कैलेण्डर है।
- प्रत्येक तीसरे वर्ष विक्रमी संवत में एक अतिरिक्त महीना जोड़ा जाता है, जिसे अधिक मास कहते है।

1. चैत्र	7. आश्विन
2. वैशाख	8. कार्तिक
3. ज्येष्ठ	9. मार्गशीर्ष
4. आषाढ़	10. पौष
5. श्रावण	11. माघ
6. भाद्रपद	12. फाल्गुन

"तीज त्योहारां बावड़ी ले डूबी गणगौर"

- नववर्ष = चैत्र शुक्ल एकम्
- प्रथम त्योहार = छोटी तीज (श्रावण शुक्ल तृतीया)
- अंतिम त्योहार = गणगौर (चैत्र शुक्ल तृतीया)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

1. श्रावण-

1. कृष्ण पक्ष

2. पंचमी - नागपंचमी

3. नवमी - निडरी नवमी
(नेवले की पूजा)

अमावस्या - हरियाली अमावस्या

- मेले - 1. फतेहसागर मेला, उदयपुर
  2. कल्पवृक्ष मेला, मांगलियावास (अजमेर)
  3. बुड्ढाजोहड़ मेला, श्रीगंगानगर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

शुक्ल पक्ष

1. तृतीया - छोटी तीज
जयपुर की छोटी तीज प्रसिद्ध है। यह पति-पत्नी के बीच के प्रेम का त्योहार है।

- सिंजारा - ससुराल पक्ष द्वारा नवविवाहिता को उपहार दिए जाते है।
- इसी दिन महिलाएँ लहरिया ओढ़नी ओढ़ती हैं।

2. पूर्णिमा - रक्षाबंधन

- नारियल पूर्णिमा
- इस दिन श्रवण कुमार की पूजा की जाती है।

भाद्रपद - सर्वाधिक त्योहार

कृष्ण पक्ष

1. तृतीया - बड़ी तीज

- अन्यनाम - • बूढ़ी तीज
  • कजली तीज
  • सातुड़ी तीज
- बूँदी की बड़ी तीज प्रसिद्ध है।

शुक्ल पक्ष

1. द्वितीया - रामदेव जयन्ती (बाबे री बीज)
मेला - रामदेवरा (जैसलमेर) (रूणीचा)

↳ द्वितीया से एकादशी तक यह मेला लगता है।
↳ इसे मारवाड़ का कुंभ कहा जाता है।
↳ बाबू महाराज का मेला - धौलपुर

२. षष्ठी (छठ) - ऊब छठ,
हल छठ

• बलराम जयन्ती

3. अष्टमी - कृष्ण जन्माष्टमी

4. नवमी - गोगानवमी

मेले - (i) ददरेवा (चुरू)
(ii) गोगामेडी (हनुमानगढ़)

• किसान अपने हल को नौ गाँठ वाली राखी बाँधते है।

5. द्वादशी / बारस - बछबारस

• इस दिन बछड़े की पूजा की जाती है।

• चाकू का प्रयोग नहीं।

6. अमावस्या - सती अमावस्या

• रानी सती मेला (झुन्झुनूं)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

२. चतुर्थी - गणेश चतुर्थी
शिव चतुर्थी
कलंक चतुर्थी
चतरा चौथ

• मेले - (i) त्रिनेत्र गणेश - रणथम्भौर (S.M)
(ii) चुंधी तीर्थ - जैसलमेर

• शुक्ल पक्ष में मनाई जाने वाली एकमात्र चतुर्थी।

3. पंचमी - ऋषि पंचमी

• सप्तऋषि की पूजा की जाती है।
• माहेश्वरी समाज का रक्षाबंधन।
• भोजनथाली मेला - कामां (भरतपुर)

• हरीराम जी का मेला - झोरड़ा (नागौर)

4. अष्टमी - राधाष्टमी

↳ मेला - सलेमाबाद (अजमेर)
निम्बार्क सम्प्रदाय

5. दशमी - तेजा दशमी

↳ मेला - परबतसर (नागौर)
↳ यह एक पशु मेला है।

6. एकादशमी - जल-झूलनी एकादशी
देव-झूलनी एकादशी

↳ भगवान कृष्ण की मूर्तियों को स्नान करवाया जाता है।

• मेला - चारभुजा मेला (गढबोर, राजसमंद)

7. चतुर्दशी - अनन्त चतुर्दशी

↳ गणेश विसर्जन किया जाता है।

8. पूर्णिमा - श्राद्ध प्रारम्भ

CamScanner

आश्विन

कृष्ण पक्ष (श्राद्ध)

- सांझी (पार्वती) की पूजा की जाती है। (16 दिन)
- नाथद्वारा में केले की सांझी बनाई जाती है।
  सामान्यतः मिट्टी + गोबर
- मत्स्येन्द्रनाथ मंदिर (उदयपुर) को सांझी का मन्दिर कहते है।
- सांझी के अन्तिम दिन 'थम्बुडा व्रत' किया जाता है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

शुक्ल पक्ष

1. एकम → शरद नवरात्र प्रारम्भ
2. अष्टमी → दुर्गाष्टमी
   होमाष्टमी
3. दशमी → विजयादशमी (दशहरा)
   → कोटा का दशहरा मेला प्रसिद्ध (महाराव उम्मेद सिंह के काल में लोकप्रिय)
   - इस दिन हथियारों की पूजा होती है।
   - उस दिन टीका दौड़ करवाई जाती थी। (छोटा युद्ध)
   - उस दिन खेजड़ी की पूजा की जाती है।
   - इस दिन लीलटांस पक्षी के दर्शन शुभ माने जाते हैं।

   कन्हैयालाल सेठिया की रचना → लीलटांस
4. पूर्णिमा – शरदपूर्णिमा
   रास पूर्णिमा

   मेले
   - मारवाड़ (मांड) महोत्सव (जोधपुर)
   - मीरा महोत्सव (चित्तौड़)

कार्तिक

कृष्ण पक्ष

1. चतुर्थी - करवा चौथ
2. अष्टमी - अहोई अष्टमी
   - महिलाएँ संतान की लम्बी उम्र के लिए व्रत रखती है।
3. त्रयोदशी - धनतेरस (धन्वन्तरि जयन्ती)
4. चतुर्दशी - रूप चतुर्दशी
5. अमावस्या - दीपावली
   ↓
   भगवान महावीर तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती का निर्वाण दिवस

शुक्ल पक्ष

1. एकम - गोवर्धन पूजा
   - अन्नकूट महोत्सव
     ↓
     नाथद्वारा (राज.)
   - इस महोत्सव में भील जनजाति भाग लेती है।
2. द्वितीया - भाई दूज
   यम द्वितीया
3. अष्टमी - गोपाष्टमी
4. नवमी - आँवला नवमी (अक्षय नवमी)
5. एकादशी - देवउठनी एकादशी
   प्रबोधिनी एकादशी
   तुलसी एकादशी
   - पुष्कर मेला प्रारंभ होता है।
6. पूर्णिमा - सत्यनारायण पूर्णिमा
   ↓
   मेले
   - पुष्कर (अजमेर)
   - चन्द्रभागा (झालरापाटन)
     ↓
     - हाड़ौती का सुरंगा मेला
     - पशु मेला (मालवी नस्ल)
   - कोलायत (बीकानेर)
   - रामेश्वरम् (SM)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

पुष्कर मेला-

तीर्थों का मामा / कोंकण तीर्थ / तीर्थराज

→ ब्रह्माजी मंदिर, सावित्री मंदिर, गायत्री मन्दिर, रंगनाथ मन्दिर, 52 घाट, 500 मंदिर

- **कोलायत-** कपिल मुनि का आश्रम (सांख्य दर्शन के जनक)
- **रामेश्वरम्-** चम्बल, बनास, सीप नदियों का संगम
- **तीर्थों का भांजा-** मचकुण्ड (धौलपुर), तीर्थों की रानी - देवयानी (सांभर- जयपुर)

NOTE- मार्गशीष और पौष माह में कोई त्योहार नहीं आते।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

माघ

कृष्ण पक्ष

* चतुर्थी - तिल चतुर्थी
  - संकट हरण चतुर्थी
  - मेला - चौथ का बरवाड़ा (सवाई माधोपुर)
* एकादशी - षट् तिला एकादशी
* अमावस्या - मौनी अमावस्या
  - कुम्भ मेले का शाही स्नान

शुक्ल पक्ष

* एकम - गुप्त नवरात्र
* पंचमी - वसन्त पंचमी (सरस्वती जयन्ती)
  - इस दिन गार्गी पुरस्कार दिया जाता है।
* पूर्णिमा - बेणेश्वर मेला
  - नवाटापरा (डूँगरपुर)
  - यहाँ पर खण्डित शिवलिंग की पूजा की जाती है।
  - "आदिवासियों का कुम्भ"
  - "वागड़ का पुष्कर"
  - संगम - माही + सोम + जाखम
  - बेणेश्वर धाम की स्थापना → संत मावजी
  - जनक कुंवरी ने यहाँ विष्णु मंदिर बनवाया।
  - अजे तथा वजे ने यहाँ लक्ष्मीनारायण मंदिर बनवाया।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

फाल्गुन

कृष्ण पक्ष

* त्रयोदशी - महाशिवरात्रि
  ↳ घुश्मेश्वर महादेव मेला
  शिवाड़ (S.M)

शुक्ल पक्ष

* द्वितीया - फुलेरा दूज
* पूर्णिमा - होली
  ↓

- कोड़ामार होली – भिनाय (अजमेर)
- लट्ठमार होली – महावीर जी (करौली)
- पत्थर मार होली – बाड़मेर
- इलोजी की बारात – बाड़मेर
- बादशाह (टोडरमल की सवारी) – ब्यावर
- न्हाण – सांगोद (कोटा)
- जन्म-परण- मरण का त्योहार – जयपुर
- राजस्थान की पहली सहकारी समिति – भिनाय (1904)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

चैत्र

कृष्ण पक्ष

* एकम - धुलंडी
* अष्टमी - शीतलाष्टमी
  ↳ मेला - चाकसू (जयपुर ग्रामीण)
  ↓
  - गधों का मेला
  - बैलगाड़ी का मेला
* एकादशी - जौहर मेला (चित्तौड़)

शुक्ल पक्ष

* एकम - नववर्ष
  बसन्त नवरात्र प्रारम्भ
* तृतीया - गणगौर
  ↓
  जयपुर, उदयपुर की प्रसिद्ध
  - जेम्स टॉड ने उदयपुर की गणगौर का वर्णन किया।
  - सर्वाधिक लोकगीतों का त्योहार
  - लड़कियाँ अच्छे पति एवं अच्छी भाभी की कामना के लिए व्रत रखती है।

* चतुर्थी को जैसलमेर में केवल गवर की सवारी निकलती है।

* पंचमी - नाथद्वारा
    - गुलाबी गणगौर
    - चूनड़ी गणगौर

* अष्टमी - अशोक अष्टमी

* नवमी - राम नवमी

* पूर्णिमा - हनुमान जयंती
  (मेले)
    - सालासर (चुरू)
    - मेहन्दीपुर (दौसा)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

वैशाख

कृष्ण पक्ष

* तृतीया - धींगा गवर
    - मेला - जोधपुर एवं जोधपुर ग्रामीण

शुक्ल पक्ष

* तृतीया - अक्षय तृतीया (आखा तीज)
    - बीकानेर का स्थापना दिवस
    - उस दिन BKN में पतंगें उड़ाई जाती है।
    - सर्वाधिक बाल विवाह

* पूर्णिमा - बुद्ध पूर्णिमा
    - पीपल पूर्णिमा
    - मेले
        - बाणगंगा मेला (विराटनगर, जयपुर)
        - मातृकुण्डिया मेला (चित्तौड़)

- नक्की झील मेला - मा. आबू
- गौतमेश्वर मेला - अरणोद (प्रतापगढ़)
- गौतमीसागर मेला - झालरापाटन
    - पशु मेला - मालवी

CamScanner

सिन्धी त्योहार

1. चैत्र शुक्ल एकम (चेटीचण्ड) -

इस दिन झूलेलाल जी का जन्म हुआ।
→ इन्हें भगवान वरुण का अवतार माना जाता है।
→ भगवान वरुण समुद्र के देवता थे।

→ असूचण्ड (आश्विन शुक्ल एकम) -
झूलेलाल जी का निर्वाण दिवस

→ चालीहा - (16 July - 24 Aug. तक व्रत रखे जाते है।

→ थदड़ी सातम - भाद्रपद कृष्ण सप्तमी (जन्माष्टमी से एक दिन पूर्व)

सिक्ख त्योहार

→ गुरु नानक जयंती - कार्तिक पूर्णिमा

मेले
- 1. कोलायत (बीकानेर)
- 2. साहवा (चुरु)

→ उस दिन हिन्दू कोलायत में सत्यानारायण पूर्णिमा के मेले में आते है।

→ सिक्ख, हिन्दू एकसाथ = कोलायत

→ गुरु गोविन्द सिंह जयंती - पौष शुक्ल सप्तमी

→ लोहड़ी - 13 जनवरी

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

- वैशाखी - 13 अप्रैल
  - 13 अप्रैल 1699 ई. को गुरु गोविन्द सिंह ने आनन्दपुर साहिब में खालसा पंथ की स्थापना की थी।
  - 13 अप्रैल, 1919 (अमृतसर) - जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड

जैन त्योहार

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

1. ऋषभदेव / आदिनाथ जयन्ती - चैत्र कृष्णा नवमी
   - मेला - धुलेव गाँव, उदयपुर
   - भील जनजाति इसे केसरिया जी / कालाजी मानते है।
2. महावीर जयन्ती - चैत्र शुक्ल त्रयोदशी
3. रोट तीज - भाद्रपद शुक्ल तृतीय
4. सुगन्ध दसमी / धूप दशमी - भाद्रपद शुक्ल दशमी
5. दसलक्षण पर्व - चैत्र / भाद्रपद / माघ } माह की शुक्ल पंचमी से त्रयोदशी

"भाद्रपद के दसलक्षण पर्व को 'पर्यूषण' कहा जाता है"

दिगम्बर
- भाद्रपद शुक्ल पंचमी से चतुर्दशी तक
  ↓
- पड़वा ढोक - आश्विन कृष्ण एकम् (क्षमा याचना पर्व)

श्वेताम्बर
- भाद्रपद कृष्ण द्वादशी से भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी तक
  ↓
- संवत्सरी - भाद्रपद शुक्ल पंचमी (क्षमा याचना पर्व)

CamScanner

1. पौष - माघ → जनवरी
2. माघ - फाल्गुन → फरवरी
3. फाल्गुन - चैत्र → मार्च
4. चैत्र - वैशाख → अप्रैल
5. वैशाख - ज्येष्ठ → मई
6. ज्येष्ठ - आषाढ़ → जून
7. आषाढ़ - श्रावण → जुलाई
8. श्रावण - भाद्रपद → अगस्त
9. भाद्रपद - आश्विन → सितम्बर
10. आश्विन - कार्तिक → अक्टूबर
11. कार्तिक - मार्गशीष → नवम्बर
12. मार्गशीष - पौष → दिसम्बर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

मुस्लिम त्योहार

- 570 ई. में मक्का में पैगम्बर मोहम्मद साहब का जन्म हुआ।
- 622 AD में पैगम्बर मोहम्मद साहब मक्का से मदीना चले गए. इस घटना को 'हिजरत' कहा जाता है।
- इसी दिन हिजरी कैलेण्डर प्रारम्भ हुआ था।
  → चन्द्रमा पर आधारित कैलेण्डर परन्तु इसमें अधिकमास नहीं होता है।

CamScanner

* ६३२ AD में मदीना में मोहम्मद साहब की मृत्यु हुई।

1. मोहर्रम	७. रज्जब
२. सफर	८. शाबान
३. रबी-उल-अव्वल	९. रमजान
४. रबी-उस-सानी	१०. शव्वाल
५. जमात उल अव्वल	११. जिल्काद
६. जमात उल सानी	१२. जिल्हिज्ज

1. मोहर्रम-

* 10 तारीख → हुसैन की याद में ताजिये निकाले जाते है।
हुसैन करबला के युद्ध में शहीद हो गए थे। (ईराक)
हुसैन पैगम्बर मोहम्मद साहब के दोहिते थे।

२. सफर
* २0 तारीख → चेहल्लम (हुसैन की मृत्यु के 40 दिन बाद)

३. रबी-उल-अव्वल
* १२ तारीख – ईद-मिलादुल नबी (मोहम्मद साहब का जन्म)
बारावफात (मोहम्मद साहब की मृत्यु)

4. रबी-उस-सानी – कोई त्योहार नहीं।

5. जमात-उल-अव्वल-
कोई त्योहार नहीं।

6. जमात उस सानी-
कोई त्योहार नहीं।

THE NOTES HUB * Notes are Available * All Competition Books * 7300134518, 7610010054

7. रज्जब - २७ तारीख → शब-ए-मेराज

→ इस रात्रि को पेगम्बर मो. साहब की अल्लाह से मुलाकात हुई।

8. शाबान

14 तारीख– शब-ए-बरात

इस रात्रि को मुस्लिम अपने बुरे कर्मों के लिए माफी माँगते है।

9. रमजान-

→ सबसे पवित्र महीना

→ इस महीने में मुस्लिम रोजे रखे जाते है।

→ 27 तारीख - शब-ए-कद्र

इस रात्रि को कुरान धरती पर भेजी गई।

10. शव्वाल-

1 तारीख- ईद-उल-फितर (मीठी ईद)

→ भाईचारे का त्योहार

11. जिल्काद- कोई त्योहार नहीं

12. जिल्हिज- इस महीनें में मुस्लिम हज यात्रा करते है।

- 10 तारीख → ईद-उल-अजहा (बकर ईद)

→ कुर्बानी का त्योहार

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

ईसाई त्योहार

- ईसाई त्योहार ग्रिगेरियन कैलेण्डर के अनुसार मनाए जाते है।
- यह एक सूर्य आधारित कैलेण्डर है।
- 1538 ई. में पॉप ग्रेगरी III द्वारा इस कैलेण्डर को व्यवस्थित किया गया।

क्रिसमस- (25 dec.)

इस दिन ईसा मसीह का जन्म हुआ।

नववर्ष- (1 जनवरी)

- 4 वर्ष की आयु में ईसा मसीह को ज्ञान की प्राप्ति हुई इस घटना को प्रबोधन कहा जाता है।
- इस दिन से ईसाई धर्म का प्रारम्भ हुआ।

Good friday-

- इस दिन ईसा मसीह को फाँसी दी गई थी।
- यह easter से ठीक पहला शुक्रवार होता है।

↓ (easter)

- इस दिन ईसा मसीह का पुनर्जन्म हुआ
- यह रविवार के दिन आता है। (21 मार्च के बाद)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

Ascension Day- (असेंशन)

इस दिन ईसा मसीह वापस स्वर्ग चले गए।

- यह easter के 40 दिन बाद आता है।

मेले तथा त्योहारों का योगदान एवं महत्व

- मेले तथा त्योहार सामाजिक सौहार्द को बढ़ावा देते है।
- मेले तथा त्योहार पर्यटकों को आकर्षित करते हैं जिससे आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलता है।
- मेले तथा त्योहार लोगों में ऊर्जा का संचार करते है।
- मेले तथा त्योहार हमारी संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित करते हैं।
- जनजातीय मेले विवाह के केन्द्र होते है।
- मेले तथा त्योहार कलाकारों को मंच प्रदान करते हैं।
- मेलों तथा त्योहारों ने हमारी संस्कृति को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लोक प्रियता दिलाई है।
- मध्यकाल में मेले बाजार का कार्य करते थे।
- मेलों ने हमारी हस्तकला को बढ़ावा दिया है।
- मेलों ने हमारे खिलाड़ियों को प्रोत्साहन दिया है।
- मेले मनोरंजन का केन्द्र थे।
- मेले न्याय व्यवस्था के केन्द्र थे।
- स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान मेले तथा त्योहारों का सकारात्मक उपयोग किया था।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

MAHESH PUBLICATIONS

राजस्थान के लोकदेवता

"पाबू हड़बू रामदे, मांगलिया मेहा
पांचू पीर पधारज्यो, गोगाजी जेहा।"

THE NOTES HUB * Notes are Available * All Competition Books * 7300134518, 7610010054

1. पाबूजी – (राठौड़)

- जन्मस्थान – कोलूमण्ड (फलौदी)
- पिता - धाँधल जी (मारवाड़ के राव चूड़ के छोटे भाई)
- माता - कमलादे
- पत्नी - फूलमदे / सुप्यारदे (अमरकोट के सूरजमल सोढा की राजकुमारी)
- सहयोगी → चांदा, डामा } (भील बन्धु)
- मेला – चैत्र अमावस्या
- घोड़ी – केसर कालमी (देवल नामक चारण महिला से संबंधित)
- अपने विवाह के दौरान 3 फेरों के बाद पाबूजी गायों की रक्षा के लिए वापस आ गए थे तथा देचू (फलौदी) नामक गाँव में जींदराव खींची (जीजा) जायल के खिलाफ लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।
- पाबूजी को 'लक्ष्मण का अवतार' माना जाता है।
- पाबूजी ऊँट रक्षक देवता है।
- राईका / रैबारी / देवासी समाज इन्हें अपना मुख्य देवता मानता है।
- पाबूजी 'प्लेगरक्षक देवता' है।
- पाबूजी ने गुजरात के सात थोरी भाईयों की रक्षा की।

- भील भोपे 'रावणहत्था' वाद्ययंत्र के साथ पाबूजी की फड़ गाते है।
- पाबूजी की फड़ सर्वाधिक लोकप्रिय है।
- पाबूजी के पवाड़े (लोकगाथा) माट वाद्ययंत्र के साथ गाए जाते है।
- पाबूजी से सम्बन्धित पुस्तकें–
  1. पाबू प्रकास- आशिया मोड़जी
  2. पाबू जी रा छन्द- बीठू मेहाजी
  3. पाबू जी रा रूपक- मोतीसर बगतावर
  4. पाबू जी रा दूहा - लघराज
  5. पाबू जी रा सोरठा- रामनाथ
  6. पाबू जी रा गीत - बांकीदास

२. रामदेव जी तंवर

- जन्म स्थान – उडूकाश्मीर (बाड़मेर)
- पिता– अजमाल जी (पोकरण के सामन्त)
- माता– मैणादे
- पत्नी– नेतलदे (अमरकोट के दलेलसिंह सोढा की राजकुमारी)
- गुरु – बालीनाथ जी (मसूरिया पहाड़ी - जोधपुर)
- ग्रन्थ - चौबीस बाणियाँ
- घोड़ा - लीलो
- झण्डा - नेजा
- जागरण- जमो
- मेघवाल भक्त- रिखिया

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

- इन्हें विष्णु का अवतार माना जाता है।
- इन्हें 'पीरों का पीर' कहा जाता है।
- भैरव नामक साहूकार को पोकरण क्षेत्र से निकाल दिया था।
- रामदेव जी ने 'कामड़िया सम्प्रदाय' चलाया।
- कामड़िया सम्प्रदाय की महिलाएँ तेरहताली नृत्य करती है।
- भाद्रपद शुक्ल एकादशी को रामदेव जी ने रुणीचा में समाधि ली थी।
- भाद्रपद शुक्ल दशमी को 'डाली बाई मेघवाल' ने रुणीचा/ रामदेवरा में समाधि ली थी।
  ↓ 'रामदेव जी की धर्म बहिन'
- रामदेव जी के मन्दिर में 'पगल्ये' पूजे जाते हैं।

→ **प्रमुख मन्दिर–**

1. रुणीचा/ रामदेवरा – जैसलमेर
2. पोकरण – जैसलमेर
3. मसूरिया पहाड़ी – जोधपुर
4. बिरांटिया खुर्द – ब्यावर
5. हल्दिना – अलवर
6. छोटा रामदेवरा – गुजरात

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

→ परचा बावड़ी – रामदेवरा (परचा = चमत्कार)

3. गोगाजी चौहान

- जन्म स्थान – ददरेवा (चुरू)
- पत्नी – मेनलदे
- पिता – जेवरसिंह
- माता – बाछलदे

- गोगाजी ने महमूद गजनवी का सामना किया था अतः गजनवी ने इन्हें 'जाहिरपीर' (साक्षात् देवता) की उपाधि दी।
- गायों की रक्षा के लिए अपने मौसेरे भाइयों अरजन-सरजन के खिलाफ लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।
- इन्हें सर्परक्षक देवता के रूप में पूजा जाता है।
- गोगाजी के मन्दिर खेजड़ी के पेड़ के नीचे बनाए जाते है।
- प्रमुख मंदिर-
  1. शीर्षमेड़ी - ददरेवा (चुरू)
  2. धुरमेड़ी - गोगामेड़ी (हनुमानगढ़)
  3. गोगाजी री ओल्डी– खिलेरियों की ढाणी (सांचौर)
- गोगामेड़ी मन्दिर मकबरे की तरह बना हुआ है तथा इसमें 'बिस्मिल्लाह' शब्द लिखा गया है।
- बीठू मेहाजी की पुस्तक -'गोगाजी रा रसावला'

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

4. हड़बूजी सांखला

- जन्म- भूंडेल (नागौर)
- पिता- मेहराज जी
- पिता की मृत्यु के पश्चात् हरभमजाल (जोधपुर) नामक स्थान पर जाकर रहने लग गए थे।
- रामदेवजी इनके मौसेरे भाई थे।
- गुरु- बालीनाथ जी
- हड़बूजी भविष्यवक्ता थे।

- राव जोधा को मण्डोर जीतने का आशीर्वाद दिया था तथा अपनी कटार भेंट की थी।
- मण्डोर जीतने के बाद राव जोधा ने इन्हें 'बेंगटी' नामक गाँव दिया था। (फलौदी)
- हड़बूजी यहाँ गायों की सेवा करते थे।
- यहाँ हड़बूजी की बैलगाड़ी की पूजा की जाती है।
- जोधपुर महाराजा अजीतसिंह ने यहाँ मन्दिर का निर्माण करवाया था।
- इनका वाहन 'सियार' था।

5. मेहा जी मांगलिया

- मन्दिर - बापीणी (फलौदी)
- मेला - कृष्ण जन्माष्टमी
- घोड़ा - किरड़ काबरा
- ये मण्डोर के राणा रूपड़ा प्रतिहार तथा मारवाड़ के राव चूंडा के समकालीन थे।
- देक नामक गुर्जर महिला की गायों को बचाते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। (राणकदेव भाटी के खिलाफ लड़ते हुए)
- इनके भोपों की वंश वृद्धि नहीं होती है।

6. तेजाजी

- जन्म स्थान - खरनाल (नागौर)
- पिता - ताहड़ जी
- माता - रामकुंवरी
- पत्नी - पेमलदे (पनेर, अजमेर)
- घोड़ी - लीलण
- भोपा - घोड़ला

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- इनका जन्म एक जाट परिवार में हुआ था।
- लाछा नामक गुर्जर महिला की गायों को बचाते हुए तेजाजी घायल हो गए थे।
- सुरसुरा (अजमेर) नामक गाँव में साँप के काटने से इनकी मृत्यु हो गयी थी।
- इन्हें 'सर्परक्षक देवता' के रूप में पूजा जाता है।
- इन्हें 'काला-बाला का देवता' भी कहा जाता है।
- खेतों में हल चलाते समय तेजाजी के गीत गाए जाते है
- राजस्थान में 'लीलण एक्सप्रेस' नामक रेल प्रारम्भ की जा चुकी है। (जयपुर-जोधपुर)
- तेजाजी पर डाक टिकट जारी किया किया जा चुका है।

*** प्रमुख मन्दिर-**

1. परबतसर - डीडवाना (जोधपुर महाराजा अभयसिंह के काल में बना)
2. खरनाल (नागौर)
3. पतेर — अजमेर
4. सुरसुरा — अजमेर
5. सैंदरिया —— ब्यावर
6. भांवता —— अजमेर
7. बासी दुगारी - बूँदी

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

*** तेजाजी से संबंधित पुस्तकें-**

- तेजाजी रा ब्यावहला- बंशीधर शर्मा
- झुंझार तेजा - लज्जाराम मेहता

CamScanner

* **राजल बाई-**

- यह तेजाजी की बहिन थी।
- मंदिर- खरनाल (नागौर)
- अन्य नाम- बूंगरी माता

7. देवनारायण जी

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- जन्म स्थान- मालासेरी (आसीन्द)
- पिता- सवाई भोज
- माता- सेढू
- पत्नी- पीपलदे
- इनका जन्म 'बगड़ावत गुर्जर' परिवार में हुआ था।
- सवाई भोज भिनाय के राजा के खिलाफ लड़ते हुए मारे गए थे।
- गायों की रक्षा के लिए देवनारायण जी ने युद्ध में भिनाय के राजा की हत्या की एवं अपने पिता की हत्या का बदला लिया।
- इन्हें विष्णु का अवतार माना जाता है।
- इन्हें औषधि का देवता कहा जाता है।
- इनके मन्दिर में नीम के पत्ते चढ़ाए जाते है।
- इनके मन्दिर में मूर्ति की जगह ईंट की पूजा होती है।
- गुर्जर भोपे 'जन्तर वाद्ययंत्र' के साथ देवनारायणजी की फड़ गाते हैं।
- इनकी फड़ सबसे लम्बी है।
- देवनारायण जी + देवनारायणजी की फड़ → दोनों पर डाक टिकिट जारी

CamScanner

*** मन्दिर-**

- मालासेरी - आसीन्द
- देवमाली - ब्यावर
- देवधाम - जोधपुरिया (टोंक)
- देवडूंगरी - चित्तौड़
  - → राणा सांगा ने इस मन्दिर का निर्माण करवाया।

*** मेले-**

- भाद्रपद शुक्ल षष्ठी व सप्तमी
- माघ शुक्ल सप्तमी

*** पुस्तक-**

- बगड़ावत - लक्ष्मी कुमारी चूण्डावत

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

8. देवबाबा

- मन्दिर - नंगलाजहाज (भरतपुर)
- मेले - (i) भाद्रपद शुक्ल पंचमी
  (ii) चैत्र शुक्ल पंचमी
- यह पशु चिकित्सक थे।
- इन्हें खुश करने के लिए 7 ग्वालों को भोजन करवाना पड़ता है।

9. मल्लीनाथ जी

- मारवाड़ के राठौड़ राजा थे।
- राजधानी - मेवानगर
- मालवा के निजामुद्दीन की 13 सैनिक टुकड़ियों को हराया था।
- अपनी रानी रूपांदे के प्रभाव में थे सन्त बन गए।

- गुरु- उगमसी भाटी
- इन्होंने 'कुंडा पंथ' चलाया तथा समाज में छुआछूत एवं भेदभाव को मिटाने का प्रयास किया।
- यह 'भविष्यवक्ता' थे।
- 1399 AD में मारवाड़ में हरिकीर्तन का आयोजन करवाया था।
- इनके कारण बाड़मेर क्षेत्र को मालाणी कहा जाता है।
- मंदिर- तिलवाड़ा (बालोतरा)
- मेला - चैत्र कृष्ण एकादशी से चैत्र शुक्ल एकादशी
  ↓ (होली के अगले दिन से)
  ↳ यह एक पशु मेला है (मालाणी नस्ल)

10. मल्लीनाथ जी

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

- वास्तविक नाम - मोमादेव राठौड़
- ये मारवाड़ के राव चूण्डा के छोटे भाई थे।
- ये शेरगढ़ (जोधपुर) के सामन्त थे।
- इन्होंने अपने पिता वीरमदेव की हत्या का बदला लिया था।
- गुरु - जलन्धरनाथ
- मंदिर- पांचोटा (जालौर)
- इन्हें 'ओरण का देवता' कहा जाता है।
  ↳ मन्दिर के आस-पास पेड़-पौधों वाली भूमि जहाँ वृक्ष नहीं काटे जाते।

11. आलम जी

- मन्दिर - धोरीमन्ना (बाड़मेर)
- मेला - भाद्रपद शुक्ल द्वितीया
- इन्हें अश्वरक्षक देवता के रूप में पूजा जाता है।
- राठौड़ वंश की जैतमालोत शाखा से संबंधित थे।

12. बिग्गा जी

- मन्दिर - रीड़ी (BKN)
- पिता - महन जी
- माता - सुल्तानी
- गायों की रक्षा के लिए लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।
- जाखड़ समाज के कुलदेवता

13. खेतला जी

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- मन्दिर - सोनाणा (पाली)
- मेला - चैत्र शुक्ल एकम्
- यहाँ हकलाने वाले बच्चों का ईलाज किया जाता है।

14. हरिराम जी

- मन्दिर - झोरड़ा (नागौर)
- मेला - भाद्रपद शुक्ल पंचमी
- सर्परक्षक देवता के रूप में पूजा जाता है।

* इनके मन्दिर में सांप की बांबी (बिल) की पूजा की जाती है।

15. जुंझार जी

* जन्म- इमलोहा
* मन्दिर- स्यालोदड़ा

नीम का थाना

* मेला - रामनवमी
* मन्दिर में दूल्हा-दुल्हन एवं 3 भाइयों की मूर्तियाँ है।

16. मामादेव

* 'वर्षा के देवता'
* इनका मन्दिर नहीं होता है बल्कि गाँव के बाहर इनके तोरण की पूजा की जाती है।
* इन्हें खुश करने के लिए भैंसे की बलि दी जाती है।

17. वीर फत्ता जी

* मन्दिर- सांथू (जालौर)
* गायों की रक्षा के लिए लड़ते हुए मारे गए।
* मेला- भाद्रपद शुक्ल नवमी

THE NOTES HUB * Notes are Available * All Competition Books * 7300134518, 7610010054 *

18. केसरिया कुंवर जी

* यह गोगाजी के पुत्र थे।
* इन्हें भी सर्परक्षक देवता के रूप में पूजा जाता है।

19. झरड़ा जी

- ये पाबूजी के भतीजे थे।
- जींदराव खींची को मारकर अपने पिता व चाचा की हत्या का बदला लिया।
- अन्य नाम- रूपनाथ
- मन्दिर - (i) कोलूमण्ड (फलौदी)
  (ii) सिंभूदड़ा (बीकानेर)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- हिमाचल प्रदेश में इन्हें बालकनाथ के रूप में पूजा जाता है।

२० डूंगजी- जवाहरजी

- यह बाठोद- पाटोदा (सीकर) के सामन्त थे।
- कालान्तर में डाकू बन गए थे।
- अमीरों को लूटकर धन गरीबों में बाँटते थे।
- सहयोगी - 1. लोहट जी जाट/ लोठू जी निठरवाल
  2. करणा जी मीणा
  3. बालू जी नाई
  4. सांखू जी लोहार
- इन्होंने अंग्रेजों की नसीराबाद छावनी व आगरा की जेल लूट ली थी।
- जोधपुर महाराजा तख्तसिंह ने डूंगजी को गिरफ्तार किया तथा मेहरानगढ़ किले में रखा।
- बीकानेर महाराजा रत्नसिंह ने जवाहर जी को गिरफ्तार किया तथा जूनागढ़ किले में रखा।

CamScanner

राजस्थान की लोक देवियाँ

1. करणी माता-

- जन्म - सुआप (फलौदी)
- इनका जन्म एक चारण परिवार में हुआ था।
- बचपन का नाम - रिद्धि बाई
- मंदिर - देशनोक (बीकानेर)
  - चूहों का मन्दिर
  - चूहों को 'काबा' कहा जाता है।
  - सफेद चूहे के दर्शन शुभ माने जाते है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- देशनोक में 'नेहड़ी जी' का मन्दिर भी है, जहाँ करणी माता स्वयं रहती थी। (नेहड़ी - बिलौने की लकड़ी)
- करणी माता 'तेमड़ेराय माता' की पुजा करती थी अतः इनका मन्दिर भी देशनोक में बना हुआ है।
- मेहरानगढ़ किले की नींव करणी माता ने रखी।
- बीकानेर की स्थापना करणी माता के आशीर्वाद से हुई।
- करणी माता बीकानेर के राठौड़ वंश की इष्टदेवी है।
- बीकानेर महाराजा सूरतसिंह ने देशनोक में इनका मन्दिर बनवाया।
- गंगासिंह ने इस मन्दिर को वर्तमान स्वरूप दिया।
- अलवर महाराजा बख्तावर सिंह ने मंदिर में छत्र चढाया था।
- मंदिर में दो बर्तन रखे हैं जिन्हें सावन भादो कहा जाता है।

- अन्य नाम - दाढी वाली डोकरी
- प्रतीक - चील (संवली)

२. नागणेची माता-

- मन्दिर - नगाणा (बालोतरा)
- राव धूहड़ इनकी मूर्ति को कर्नाटक से लेकर आया था।
- राठौड़ वंश की कुलदेवी
- अन्य नाम- चक्रेश्वरी माता
- राव जोधा ने मेहरानगढ़ में नागणेची माता का मन्दिर बनवाया।
- राव बीका ने बीकानेर में नागणेची माता का मन्दिर बनवाया। (18 भुजा)

3. जीण माता-

- मंदिर - रैवासा (सीकर)
- चौहान राजा पृथ्वीराज-I के शासनकाल में 'हट्टड़ मोहिल' ने इस मंदिर का निर्माण करवाया था।
- चौहान वंश की इष्ट देवी।
- केन्द्रीय सत्ता द्वारा मंदिर को घी भेजा जाता था।
- मधुमक्खियों की देवी।
- औरंगजेब ने मन्दिर में छत्र चढ़ाया था।
- जीण माता का लोकगीत सबसे लम्बा है।
- कनफटे जोगी डमरू व सारंगी के साथ यह गीत गाते है।
- इस मन्दिर के पास जीण माता के भाई हर्ष का मन्दिर भी बना हुआ है।

  ↓ गूवक-I नामक चौहान राजा ने बनवाया था।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

4. सकराय माता-

- मंदिर- उदयपुरवाटी (नीम का थाना)
- चौहान वंश की इष्टदेवी
- खण्डेलवालों की कुलदेवी
- अन्य नाम- शाकम्भरी माता
- अन्य मंदिर- (i) सांभर (जयपुर ग्रामीण) → (Pre- 2013)
  (ii) सहारनपुर (U.P)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

5. आशापुरा माता-

- मन्दिर- नाडोल (पाली)
  ↳ नाडोल के लक्ष्मणराज चौहान ने बनवाया था।
- चौहान वंश की कुलदेवी
- बिस्सा ब्राह्मणों की कुलदेवी
- इनकी पूजा करते समय महिलाएँ हाथों में मेहन्दी नहीं लगाती है तथा घूँघट रखती है।
- अन्य मन्दिर- मोदरान (जालौर)

6. आई माता-

- मन्दिर- बिलाड़ा (जोधपुर ग्रामीण)
- सीरवी समाज की कुलदेवी
- आई माता रामदेवजी की शिष्या थी।
- इन्होंने हिन्दू मुस्लिम एकता बढ़ाने तथा छुआछूत कम करने के प्रयास किए।

- मुख्य मन्दिर- 'बड़ेर'
- अन्य मंदिर - दरगाह
- मंदिर में दीपक की ज्योति से केसर टपकती है।

7. सच्चियाय माता-

- मंदिर- ओसियां (जोधपुर ग्रामीण)
- ओसवालों (बनिया) व खर्रा (मारवाड़) की कुलदेवी
- ओसियां के अन्य मन्दिर – (i) पीपला माता मन्दिर
  (ii) सूर्य मन्दिर
  (iii) हरिहर मन्दिर
  (iv) महावीर मन्दिर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

8. लटियाल माता-

- मन्दिर- फलौदी
- कल्ला ब्राह्मणों की कुलदेवी
- अन्य नाम- खेजड़ बेरी राय भवानी

9. चामुंडा माता-

- मंदिर- मेहरानगढ़ (जोधपुर)
- राव जोधा ने बनवाया था।
- राव जोधा इस मूर्ति को मण्डोर से लेकर गए थे।
- पहले यह मण्डोर के प्रतिहारों की देवी थी।
- मेहरानगढ़ दुखान्तिका - 30 Sep. 2008
  - इस घटना की जाँच हेतु जसराज चौपड़ा आयोग बना।

10. सुन्धा माता-

- मन्दिर- जसवन्तपुरा हिल्स (भीनमाल)
- जालौर के चौहान राजा चाचिगदेव ने बनवाया।
- यहाँ रोप-वे स्थापित किया गया है (प्रथम)
- यहाँ पर भालू अभयारण्य स्थित है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

11. तनोट माता- मन्दिर - तनोट (जैसलमेर)

- BSF के सैनिक इनकी पूजा करते है।
- थार की वैष्णोदेवी
- रुमाल की देवी

12. स्वांगिया माता-

- मन्दिर- भादरिया (जैसलमेर)
- जैसलमेर के भाटी राजवंश की कुलदेवी।
- प्रतीक - सुगन चिड़ी
- स्वांग का शाब्दिक अर्थ - भाला
- जैसलमेर के राजचिह्न में सुगन चिड़ी के हाथ में मुड़ा हुआ भाला है।

* भादरिया में भूमिगत पुस्तकालय बना है।

13. आवड़ माता-

- मन्दिर- जैसलमेर
- जैसलमेर के भाटी राजवंश की इष्टदेवी।

14. माता रानी भटियानी-

- जन्म स्थान- जोगीदास (जैसलमेर)
- मन्दिर - जसौल (बालोतरा)
- मेला - भाद्रपद शुक्ल त्रयोदशी
- ढोली जाति के लोग इनकी पूजा करते है।
- अन्य नाम- बुआसा
- यहाँ पर लालसिंह का मंदिर भी बना हुआ है। (पुत्र)

(15.) रानी सती-

- मन्दिर- झुंझुनूं
- वास्तविक नाम- नारायणी देवी
- पति- तनधनदास अग्रवाल
- अन्य नाम- दादी सती
- मेले- (i) भाद्रपद कृष्णा नवमी/ भाद्रपद कृष्णा अमावस्या

16. नारायणी माता-

- मंदिर - बरवा पहाड़ी (अलवर)
- नाई जाति की कुलदेवी
- मीणा जाति के लोग इनकी पूजा करते हैं।

THE NOTES HUB Notes are Available All Competition Books 7300134518, 7610010054

CamScanner

17. कैलादेवी-

- मन्दिर - करौली
- करौली के जादौन राजवंश की कुलदेवी।
- इन्हें भगवान श्रीकृष्ण की बहिन माना जाता है।
- इनके भक्तों को लांगुरिया कहा जाता है।
- भक्तों द्वारा लांगुरिया गीत गाए जाते है।
- मेला - चैत्र शुक्ल अष्टमी (वर्ष में केवल एक बार) (लक्खी मेला)
- मन्दिर के सामने बोहरा भक्त की छतरी है जहाँ छोटे बच्चों का इलाज किया जाता है।

THE NOTES HUB

18. जमवाय माता-

- मंदिर - जमवारामगढ़ (जयपुर ग्रामीण)
- कच्छवाहा वंश की कुलदेवी
- कच्छवाहा राजा दूल्हेराय ने बनवाया।

19. शिला माता-

- मन्दिर- आमेर (जयपुर)
- आमेर के कच्छवाहा वंश की इष्टदेवी
- आमेर के राजा मानसिंह ने पूर्वी बंगाल के राजा केदार को हराया तथा वहाँ से शिला माता की मूर्ति लेकर आया था।

20. ज्वाला माता-

मन्दिर- जोबनेर (जयपुर)

- खंगारोतों की ईष्टदेवी (कच्छवाहा शाखा)

२१. छींक माता-

- मन्दिर- जयपुर ग्रामीण
- मेला- माघ शुक्ल सप्तमी

२२. शीतला माता-

- मन्दिर- चाकसू (जयपुर ग्रामीण)
- जयपुर महाराजा माधोसिंह-II ने मन्दिर बनवाया।
- चेचक रक्षक देवी।
- एकमात्र देवी जिनकी खण्डित मूर्ति की पूजा की जाती है।
- महिलाएँ सन्तान प्राप्ति के लिए इनकी पूजा करती है।
- कुम्हार जाति के लोग इनकी पूजा करते है।
- वाहन- गधा।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

२३. ब्राह्मणी माता -

- मन्दिर- सोरसन (बारां)
- एकमात्र देवी जिनकी पीठ की पूजा की जाती है।
- मेला- माघ शुक्ल सप्तमी (गधों का मेला)

२४. ब्रह्मणी माता-

- मंदिर - पल्लू (हनुमानगढ़)
- इस मन्दिर में कालिका माता की मूर्ति भी है।

२५. कैवाय माता-

- मन्दिर- किणसरीया (डीडवाना)

- चौहान राजा दुर्लभराज के शासनकाल में 'चच दहिया' ने इस मन्दिर का निर्माण करवाया था।
- 'दहिया राजपूतों' की कुलदेवी

२६. <u>दधीमती माता-</u>

- मन्दिर- गोठ मांगलोद (नागौर)
- दाधीच ब्राह्मणों की कुलदेवी

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

२७. <u>भंवाल माता-</u>

- मन्दिर- भंवाल (नागौर)
- मन्दिर में २½ प्याले शराब चढ़ाई जाती है।

२८. <u>बाणमाता-</u>

- मन्दिर- चित्तौड़
- मेवाड़ के गुहिल वंश की कुलदेवी।

२९. <u>बरवड़ी माता-</u>

- मन्दिर - चित्तौड़
- मेवाड़ के राणा हम्मीर सिसोदिया ने बनवाया।
- मेवाड़ के सिसोदियों (गुहिल) की इष्टदेवी।
- अन्य नाम- अन्नपूर्णा माता

३०. <u>आवरी माता-</u> (Pre- २०१२)

- मन्दिर- निकुम्भ (चित्तौड़)
- यहाँ पर लकवाग्रस्त व्यक्तियों का इलाज किया जाता है।

31. बड़ली माता-

- मन्दिर - आकोला (चित्तौड़)
- यहाँ दो तिबारियाँ बनी हुई है जहाँ छोटे बच्चों का ईलाज किया जाता है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

32. महामाया-

- मन्दिर- मावली (उदयपुर)
- शिशुरक्षक लोकदेवी

33. अम्बिका माता-

- मन्दिर - जगत (उदयपुर)
- इस मन्दिर को 'मेवाड़ का खजुराहो' कहा जाता है।

NOTE- खजुराहो के मन्दिर - (M.P) के चन्देल वंश के राजाओं ने बनवाए थे।

34. आमज माता-

- मन्दिर - रीछेड़ (राजसमंद)
- भील जनजाति के लोग इनकी पूजा करते हैं।

35. त्रिपुर सुन्दरी-

- मन्दिर - उमराई (तलवाड़ा, बाँसवाड़ा)
- लोहार जाति के लोग इनकी पूजा करते है।
- अन्य नाम - तुरताई माता

36. राजेश्वरी माता-

मन्दिर- भरतपुर (भरतपुर के जाट राजवंश की कुलदेवी)

CamScanner

37. हर्षद माता:

- मन्दिर- आभानेरी (दौसा)
- वास्तव में यह एक विष्णु मंदिर था।
- प्रतिहार शासनकाल में चौहानों ने इस मन्दिर का निर्माण करवाया था।
- मन्दिर के सामने चाँद बावड़ी बनी हुई है।

38. कंठेसरी माता-
- आदिवासियों की कुल देवी

अन्य देवियाँ

39. भदाणा माता – कोटा
40. नकटी माता – जय भवानीपुरा (जयपुर)
41. क्षेमकरी माता – भीनमाल (जालौर)
(खीमेल माता)
42. मरकंडी माता – निमाज (पाली)
43. जिलाढ़ी माता – बहरोड़
44. धौलागढ़ देवी – बहतु कलां (अलवर) → (मेला वैशाख कृष्ण 5-11)
45. घेवर माता – राजसमन्द
46. जल देवी – सांसेरा (राजसमन्द)
47. पिपलाद माता – ऊनवास (राजसमन्द)
48. भ्रमर माता – छोटी सादड़ी (प्रतापगढ़)
49. अर्बुद माता / अधर देवी - माउंट आबू
50. वाकल माता – वीरातरा (बाड़मेर)
51. हिंगलाज माता – लासवेला (पाकिस्तान)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

सन्त एवं सम्प्रदाय

1. दादू दयाल जी-

- जन्म स्थान - अहमदाबाद
- पालन-पोषण - लोदीराम नामक ब्राह्मण
- गुरु - ब्रह्मनन्द जी
- इन्होंने निर्गुण भक्ति का संदेश दिया था।
- इन्हें 'राजस्थान का कबीर' कहा जाता है।
- प्रारम्भ में साम्भर रहते थे परन्तु बाद में आमेर चले गए थे।
- 1585 AD में आमेर के राजा भगवन्तदास के साथ फतेहपुर सीकरी में अकबर से मुलाकात की थी।
- इन्होंने निपख आन्दोलन चलाया था।
- सत्संग स्थल - अलख दरीबा
- इन्होंने ढूँढाड़ी भाषा में उपदेश दिए थे।
- मुख्य केन्द्र - नरैना (जयपुर ग्रामीण)
- मेला - फाल्गुन शुक्ल पंचमी से एकादशी
- मन्दिर - दादू द्वारा
- मन्दिर में वाणी (BOOK) की पूजा की जाती है।

* दादू जी के अनुसार शव को दफनाना या जलाना नहीं चाहिए बल्कि खुले मैदान में पशु-पक्षियों के खाने के लिए छोड़ देना चाहिए।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- दादू जी का शव भैराणा की पहाड़ी (दूदू) में रखा गया था, इस स्थान को दादू खोल या दादू पालका कहा जाता है।

- दादू पंथ की शाखाएँ- (20 words- 2012 Mains)

1. खालसा	4. खाकी
2. विरक्त	5. नागा
3. उतरादे	

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- दादू जी के 52 मुख्य शिष्य थे जिन्हें 52 स्तम्भ कहा जाता है।
  - प्रमुख शिष्य-

(i) सुन्दरदास जी (बड़े)-

- वास्तविक नाम- भीमराज
- बीकानेर के राजा कल्याणमल के छोटे भाई थे।
- मुख्य केन्द्र- घाटड़ा (अलवर)
- उन्होंने नागा शाखा की शुरुआत की।
- नागा साधु अपने साथ हथियार रखते हैं।
- इनके रहने के स्थान को 'छावनी' कहते हैं।
- सवाई जयसिंह ने उन्हें जयपुर की सेना में शामिल किया।
- मराठा आक्रमणों के दौरान उन्होंने सवाई प्रतापसिंह की सहायता की थी।

(ii) रज्जब जी-

- सांगानेर के एक पठान परिवार में जन्म हुआ था। (जयपुर)

- दादूदयाल जी के उपदेश सुनकर उन्होंने विवाह नहीं किया था तथा आजीवन दूल्हे के वेश में रहे।
- मुख्य केन्द्र- सांगानेर
- ग्रन्थ- रज्जबवाणी
  सर्वंगी

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

(iii) <u>सुन्दरदास जी (छोटे)-</u>

- उनका जन्म दौसा के खण्डेलवाल परिवार में हुआ।
- उन्होंने अपना लम्बा समय फतेहपुर (सीकर) में बिताया था।
- उन्होंने 42 ग्रन्थ लिखे थे, जैसे- (i) सुन्दर सागर
  (ii) सुन्दर विलास
  (iii) ज्ञान समुद्र
- मुख्य केन्द्र- गेटोलाव (दौसा)

(iv) बालिन्द जी- आरिलो (पुस्तक)

(v) गरिबदास जी- दादू दयाल जी के उत्तराधिकारी

(vi) मिस्किनदास जी

(vii) माधोदास

(viii) बखना जी

(ix) सन्तदास जी

2. <u>जाम्भोजी-</u>

- जन्म स्थान- पीपासर (नागौर)
- पिता- लोहट जी
- माता- हँसा देवी

CamScanner

- बचपन का नाम - धनराज
- गुरु - गोरखनाथ जी
- मृत्यु - लालासर (बीकानेर)
- मुख्य केन्द्र - मुकाम
- मेले - आश्विन अमावस्या
  फाल्गुन अमावस्या
- इनका जन्म पँवार (राजपूत) परिवार में हुआ था।
- इन्हें भगवान विष्णु का अवतार माना जाता है।
- इन्हें 'वैज्ञानिक सन्त' भी कहा जाता है।
- 1485 ई. → समराथल नामक स्थान पर अपने अनुयायियों को 29 उपदेश दिये थे। इसलिए इनके अनुयायी बिश्नोई (20+9) कहलाते है।
- उपदेश स्थल - साथरी
- जोधा एवं बीका जाम्भोजी का सम्मान करते थे।
- अकाल के दौरान जाम्भोजी के कहने पर 'सिकन्दर लोदी' ने बीकानेर क्षेत्र के लिए चारा भेजा था।

* जाम्भोजी की मुख्य शिक्षाएँ-

- हरे पेड़-पौधे नहीं काटे जाने चाहिए (खेजड़ी)
- जीव हिंसा नहीं की जानी चाहिए। (हिरण)
- नीले वस्त्र नहीं पहने जाने चाहिए।
- विधवा विवाह को प्रोत्साहन दिया।

- ग्रन्थ-
  - (i) जम्भ सागर
  - (ii) जम्भ संहिता
  - (iii) बिश्नोई धर्म प्रकास
- अन्य मन्दिर
  - (i) जांगलू (बीकानेर)
  - (ii) जाम्भा (फलोदी)
  - (iii) रामड़ावास (जोधपुर)

मेहोजी गोदारा-

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- ये बिश्नोई सम्प्रदाय के सन्त थे।
- उन्होंने राजस्थानी भाषा में रामायण लिखी थी।

जसनाथ जी–

- जन्म स्थान- कतरियासर (बीकानेर)
- पिता- हम्मीर जी
- माता - रूपादे
- गुरु - गोरखनाथ जी
- इनका जन्म ज्याणी जाट परिवार में हुआ।
- मुख्य केन्द्र - कतरियासर
- मेला - चैत्र शुक्ल सप्तमी
  आश्विन शुक्ल सप्तमी
  माघ शुक्ल सप्तमी
- 1500 AD में गोरखमालिया (बीकानेर) में उन्होंने जाम्भोजी से मुलाकात की थी।
- सिकन्दर लोदी ने उन्हें 'मालासर' नामक गाँव दिया था।
- उन्होंने लूणकरण को बीकानेर का राजा बनने का आशीर्वाद दिया।
- अपने अनुयायियों को 36 उपदेश दिए थे।

- गले में काले रंग का धागा पहनते हैं।(अनुयायी)
- अनुयायियों द्वारा अग्नि नृत्य किया जाता है।
- अनुयायी जाल वृक्ष तथा मोर पंख को पवित्र मानते है।
- इनकी पत्नी कालदे की भी पूजा की जाती है।
- ग्रन्थ - ① सिंभूदड़ा
  ② कोंडा

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- अन्य केन्द्र- मालासर
  पूनरासर
  लिखमादेसर
  बम्बलू
  पाँचला सिद्धा (नागौर)→ जसनाथी सम्प्रदाय की मथुरा

जसनाथी सम्प्रदाय के प्रमुख-

- लालनाथ जी— जीव समझोतरी (Book)
- रामनाथ जी— यशोनाथ पुराण (Bible)
- रूस्तम जी — औरंगजेब ने इन्हे नगाड़ा व झण्डा देकर सम्मानित किया।
- समाधि स्थल— बाड़ी (84)

चरणदास जी-

- जन्म स्थान - डेहरा (Alwar)
- पिता - मुरलीधर
- माता - कुंजोबाई
- बचपन का नाम - रणजीत
- गुरु- शुकदेव
- मुख्य केन्द्र- दिल्ली
- मेला - बसन्त पंचमी

- इन्होंने अपने अनुयायियों को '५२ उपदेश' दिए।
- इनके अनुयायी पीले रंग के वस्त्र पहनते है।
- इन्होंने मेवाती भाषा में उपदेश दिए थे।
- इन्होंने निर्गुण तथा सगुण दोनों प्रकार की भक्ति का संदेश दिया।
- भगवान कृष्ण की पूजा सखी भाव से करते हैं।
- नादिरशाह के आक्रमण की भविष्यवाणी की थी।
  ↳ (1739, ईरान का शासक)
- जयपुर महाराजा सवाई प्रतापसिंह ने इन्हें 'कोलीवाड़ा नामक गाँव' भेंट दिया।
- ग्रन्थ- (i) धर्म जहाज
  (ii) भक्ति पदारथ
  (iii) नासकेत लीला
- प्रमुख शिष्याएँ-
  (i) दयाबाई – दयाबोध
  विनय मलिका
  (ii) सहजोबाई – सहज प्रकास / प्रकाश

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

5. हरिदास जी -

- जन्म स्थान- कापड़ोद (डीडवाना)
- वास्तविक नाम- हरिसिंह साँखला
- यह पहले डाकू थे परन्तु बाद में सन्त बन गए थे।
- हरिदासी / निरंजनी सम्प्रदाय चलाया था।

CamScanner

- 'निर्गुण तथा सगुण' भक्ति दोनों का सन्देश दिया।
- मुख्य केन्द्र- गाढ़ा (डीडवाना)
- ग्रन्थ- (i) हरिपुरुष जी की वाणी
  (ii) मन्त्र राज प्रकास/ प्रकाश

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

6. <u>सन्त मावजी:</u>

- जन्म - साबला (डूँगरपुर)
- भगवान कृष्ण को निष्कलंक अवतार मानते थे।
- निष्कलंकी सम्प्रदाय चलाया।
- वागड़ी भाषा में उपदेश दिए।
- इनके अनुयायी इन्हें भगवान विष्णु का कल्कि (10th) अवतार मानते है।
- ग्रन्थ - चौपड़ा ⟶ 1. प्रेम सागर
  2. मेघ सागर
  3. साम सागर
  4. रत्न सागर
  5. अनन्त सागर
- यह ग्रन्थ वाद - विवाद शैली में लिखा गया है।
- इस ग्रन्थ को दीपावली के दिन पढ़ा जाता है।
- इसमें भविष्यवाणियाँ की गई हैं।
- 3rd विश्व युद्ध की भविष्यवाणी है।
- मुख्य केन्द्र - साबला
- अन्य केन्द्र - पुंजपुर, दालावाला (डूँगरपुर), शेषपुर (उदयपुर), पालोदा (बाँसवाड़ा)

- बेणेश्वर धाम की स्थापना- संत मावजी

संत धन्ना जी-

- जन्म- धुआं कलां (टोंक)
- इनका जन्म जाट परिवार में हुआ।
- गुरु - रामानन्द
- इन्होंने राजस्थान में भक्ति आन्दोलन प्रारम्भ किया था।
- निर्गुण भक्ति का संदेश दिया
- पंजाब में भी इनका प्रभाव है।
- मन्दिर - बोरानाड़ा (Jodhpur)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

सन्त पीपा-

- वास्तविक नाम- प्रतापसिंह खींची
- गागरोन के राजा थे।
- गुरु- रामानन्द जी
- अपनी द्वारिका यात्रा के दौरान रामानन्द जी गागरोन आए थे।
- उस समय प्रतापसिंह ने अपनी रानी सीता के साथ सन्यास धारण कर लिया था तथा अपने छोटे भाई अचलदास खींची को राजा बना दिया था।
- निर्गुण भक्ति का संदेश दिया था।
- दर्जी समुदाय इन्हें अपना मुख्य देवता मानता है।
- मन्दिर- समदड़ी (बालोतरा) गुफा- टोडा (केकड़ी)

CamScanner

- गुफा / छतरी - गागरोन
- मेला - चैत्र पूर्णिमा (हनुमान जयंती)
- संत पीपा के प्रभाव में टोडा के राजा शूरसेन ने अपनी सारी सम्पत्ति गरीबों में बाँट दी थी।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

9. <u>बालनन्दाचार्य-</u>

- केन्द्र - लोहार्गल (नीम का थाना)
- ये अपने साथ सेना रखते थे अतः उन्हें लश्कर सन्त कहा जाता है।
- इन्होंने औरंगजेब के खिलाफ हिन्दू - देवी-देवताओं की 52 मूर्तियाँ बचाई थी।
- अपनी सेना भेजकर मेवाड़ के राजसिंह तथा मारवाड़ के दुर्गादास राठौड़ की औरंगजेब के खिलाफ सहायता की।

<u>नवलदास जी-</u>

- जन्म - हरसीलाव (नागौर)
- पिता - खुशालराम
- ग्रन्थ - नवलेश्वर अनुभववाणी
- एकेश्वरवाद का समर्थन
- नवल सम्प्रदाय चलाया गया था।
- मुख्य केन्द्र - जोधपुर
- मेला - भाद्रपद कृष्णा अष्टमी (जन्माष्टमी)
- ये मारवाड़ी भाषा में उपदेश देते थे तथा ये राजा मानसिंह के समकालीन थे।

<u>स्वामी लाल गिरी-</u>

- जन्म - सुलखनिया (चुरू)
- ग्रन्थ - अलख प्रस्तुति प्रकास
- अलखिया सम्प्रदाय चलाया था।
- केन्द्र - बीकानेर

सन्त दास जी-

- केन्द्र - दाँतड़ा (भीलवाड़ा)
- उन्होंने गूदड़ सम्प्रदाय चलाया।

राजाराम जी-

- केन्द्र- शिकारपुरा (जोधपुर ग्रामीण)
- पर्यावरण संरक्षण का सन्देश दिया था।
- पटेल समुदाय इन्हें अपना मुख्य देवता मानता है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

मलूकदास जी-

- अलवर के प्रमुख सन्त थे।
- ये गरीबदासी सम्प्रदाय से सम्बन्धित थे।

भक्त कवि दुर्लभ-

- इन्हें 'वागड का नृसिंह' कहा जाता है।

मीरा बाई-

- जन्म - कुड़की (ब्यावर)
- पिता - रतनसिंह (बाजोली के सामन्त)
- माता - वीर कुवंरि
- दादा - दूदा जी (मेड़ता के राजा)
- पति - भोजराज (राणा सांगा के पुत्र)
- गुरु - रैदास

- पुस्तकें - 1. पदावली
  2. गीत गोविन्द
  3. रुकमणी मंगल
  4. सत्यभामा नू रूसणो
  5. नरसी जी रो मायरो (रतना खाती के सहयोग से)
- मीरा बाई का पालन पोषण दादा - दूदा के पास मेड़ता में हुआ।
- भगवान श्री कृष्ण को पति मानकर सगुण पूजा करती थी।
- इन्हें राजस्थान की राधा कहा जाता है।
- द्वारिका के रणछोड़ मन्दिर में मीराबाई भगवान कृष्ण की मूर्ति में विलीन हो गई थी।
- गाँधीजी के अनुसार मीराबाई सत्याग्रही महिला थी।

रानाबाई- (यह पालड़ी के संत चतुरदास की शिष्या थी।)

- जन्म स्थान- हरनावां (डीडवाना)
- पिता- रामगोपाल
- माता- गंगाबाई
- गुरु - चतुरदास जी (खोजी जी)
- भगवान कृष्ण की पूजा करते थे अतः राजस्थान की दूसरी मीरां कहा जाता है।
- उन्होंने विवाह नहीं किया था तथा समाधि ली थी।
- मेला-भाद्रपद शुक्ल त्रयोदशी - (BS-13 माता रानी भटियाणी)
- अहमदाबाद युद्ध के दौरान जोधपुर महाराजा अभयसिंह की रक्षा की।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

गवरी बाई-

- 'वागड की मीरां' कहा जाता है।
- डूंगरपुर महारावल शिवसिंह ने इन्हें 'बालमुकुन्द मन्दिर' बनाकर दिया था जिसे गवरी बाई का मन्दिर भी कहा जाता है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

भूरी बाई अलख-

- यह मेवाड़ की प्रसिद्ध महिला संत थी।

वल्लभ सम्प्रदाय- (पुष्टिमार्गी – रुद्र सम्प्रदाय)

- प्रवर्तक - वल्लभाचार्य
- इस सम्प्रदाय में भगवान कृष्ण के बाल रूप की पूजा की जाती है।
- मन्दिर को 'हवेली' कहा जाता है।
- मन्दिरों में हवेली संगीत गाया जाता है।
- मन्दिर की दीवारों पर भगवान श्री कृष्ण के चित्र बनाए जाते हैं, जिसे 'पिछवाई' कहते है।
- राजस्थान में इस सम्प्रदाय के 41 मन्दिर है।

* प्रमुख मन्दिर-

- मथुरेश जी - कोटा
- श्री नाथ सिहाड़ (नाथद्वारा) – राजसमंद
- द्वारिकाधीश कांकरोली – राजसमंद
- गोकुल-चन्द्र जी कामां – डीग
- मदनमोहन जी कामां – डीग

- इस सम्प्रदाय के प्रभाव में किशनगढ़ महाराजा सावन्त सिंह ने अपना नाम बदलकर नागरीदास कर लिया था।
- इन्होंने अपना अन्तिम समय वृन्दावन में बिताया था।
- कोटा महाराव भीमसिंह ने अपना नाम बदलकर कृष्णदास रख लिया था।
- कोटा – नंदग्राम
  शेरगढ़ - बरसाना
  > नाम परिवर्तन
- बारां में सांवरिया जी का मन्दिर बनवाया था।

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

गौड़ीय सम्प्रदाय-

- प्रवर्तक - चैतन्य महाप्रभु
- इस सम्प्रदाय में भगवान श्री कृष्ण की पूजा की जाती है।
- प्रमुख मन्दिर- ① गोविन्द देव जी, जयपुर
  - सवाई जयसिंह ने इस मन्दिर का निर्माण करवाया।

NOTE- जयपुर के राजा स्वयं को गोविन्ददेव जी का दीवान (PM) मानते थे।

② मदनमोहन जी - करौली
(करौली महाराजा गोपालपाल ने बनवाया)

निम्बार्क सम्प्रदाय-

- प्रवर्तक- निम्बार्काचार्य
- इस सम्प्रदाय में राधा जी को भगवान कृष्ण की पत्नी मानते है।

- मुख्य केन्द्र- 'सलेमाबाद' (अजमेर)
- मेला- राधाष्टमी
- परशुराम जी ने इस सम्प्रदाय की स्थापना की।
  - ↳ जन्म - खण्डेला (सीकर)
- शेखावाटी में इस सम्प्रदाय का अधिक प्रभाव है।

परनामी सम्प्रदाय-

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- प्रवर्तक- प्राणनाथ जी
- मुख्य केन्द्र- पन्ना (M.P)
- ग्रन्थ- कुलजम स्वरूप
- इस सम्प्रदाय में भगवान श्री कृष्ण की पूजा करते है।
- मंदिर- आदर्श नगर (जयपुर)

रामानन्दी सम्प्रदाय-

- प्रवर्तक - रामानन्द जी
- इस सम्प्रदाय में भगवान राम की पूजा रसिक नायक के रूप में की जाती है। अतः इसे रसिक सम्प्रदाय कहा जाता है।
- सवाई जयसिंह के शासनकाल में कृष्ण भट्ट ने रामरासो नामक पुस्तक लिखी थी। इसमें भगवान श्री राम एवं सीता की प्रेम कहानी है।

केन्द्र-

1. गलता जी, जयपुर
   ↓
   कृष्णदास 'पयहारी'
2. रैवासा (सीकर)
   ↓
   अग्रदास जी

CamScanner

NOTE→ आमेर के राजा पृथ्वीराज तथा उसकी रानी बालाबाई कृष्णदास 'पयहारी' के अनुयायी थे।

- गलता जी –
  - → गालव ऋषि का आश्रम
  - → सूर्य मन्दिर
  - → रामानुज सम्प्रदाय का केन्द्र
  - → उत्तर भारत का तोताद्री
  - → Monkey valley

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books 7300134518, 7610010054

२5. रामस्नेही सम्प्रदाय-

- यह निर्गुण भक्ति का सम्प्रदाय है।
- इस सम्प्रदाय में दशरथ पुत्र राम की पूजा नहीं की जाती बल्कि निर्गुण राम की पूजा की जाती है।
- इस सम्प्रदाय के सन्त गुलाबी कपड़े पहनते हैं।

केन्द्र

- शाहपुरा (रामचरण जी)
  - ↳ होली के अगले दिन शाहपुरा में फूलडोल मेले का आयोजन किया जाता है।
- रैण (नागौर) (दरियाव जी)
- सिंहथल (बीकानेर) (हरिरामदास जी)
- खेड़ापा (जोधपुर) (रामदास जी)

रामचरण जी-

जन्म स्थान- सोडा (टोंक)

पिता- बख्तराम , माता- देउ

- बचपन का नाम- रामकिशन
- गुरु - कृपाराम जी (दाँतडा)
- ग्रन्थ - अणभैवाणी
- इनका जन्म एक विजयवर्गीय परिवार में हुआ था।
- शाहपुरा के राजा रणसिंह ने इनके लिए मठ व छतरी बनवाई।

दरियाव जी-

- जन्म - स्थान → जैतारण (पाली)
- पिता - मानसा
- माता - गीगा
- गुरु - पेमदास जी
- इनका जन्म धुनिया पठान परिवार में हुआ था।
- ये वरिष्ठतम रामस्नेही संत थे।

हरिराम दास जी-

- जन्म स्थान - सिंहथल, बीकानेर
- पिता- भागचन्द जोशी
- माता- रामी
- गुरु जैमलदास जी
- ग्रन्थ - निशानी (योग ग्रन्थ)
- इनका जन्म एक ब्राह्मण परिवार में हुआ।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

रामदास जी-

- जन्म - भीमकमीर (जोधपुर)
- पिता- सार्दुल
- माता- अणभी
- गुरु - हरिरामदास जी
- इनका जन्म मेघवाल परिवार में हुआ।
- जैमलदास जी- सिंहथल एवं खेड़ापा शाखाओं के आदि आचार्य।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

नाथ सम्प्रदाय-

मानानाथी → महामंदिर (जोधपुर)

वैरागनाथी → राताडूंगा (नागौर)

- जब मानसिंह जालौर में था तब देवनाथ ने उसके जोधपुर का राजा बनने की भविष्यवाणी की थी।
- नाथ सम्प्रदाय के लिए इसने जोधपुर में महामंदिर एवं उदयमन्दिर का निर्माण करवाया।
- इसने 'नाथ चरित्र' नामक पुस्तक लिखी।
- उसे 'मारवाड़ का संन्यासी राजा' कहा जाता है।
- रतननाथ ने देवराज को जैसलमेर का राजा बनने का आशीर्वाद दिया था।
- जालौर का 'सिरे मंदिर' नाथ सम्प्रदाय से संबंधित है।

MAHECHA PUBLICATION

उंदरिया सम्प्रदाय-

- जयसमन्द झील के आसपास के क्षेत्र में भील जनजाति में यह सम्प्रदाय लोकप्रिय है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

जैन सन्त

आचार्य भिक्षु स्वामी-

- जन्म - कंटालिया (पाली)
- इन्होंने तेरापंथ सम्प्रदाय की शुरुआत की।
- मृत्यु - सिरियारी (पाली)

आचार्य तुलसी-

- जन्म- लाडनूं (डीडवाना)
- तेरापंथ सम्प्रदाय के 9वें आचार्य थे।
- 1949 ई. में सरदारशहर (चुरु) से अणुव्रत आन्दोलन शुरु किया।
- 1991 ई. में लाडनूं में जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय की स्थापना की।
- 1991 ई. में सुजानगढ़ में मर्यादा महोत्सव का आयोजन किया।
- इन्होंने विसर्जन (वितरण) पर बल दिया।
- He Said that → "इन्सान पहले इन्सान, बाद में हिन्दू या मुसलमान"

CamScanner

आचार्य महाप्रज्ञ-

- जन्म स्थान- टमकोर (झुंझुनूं)
- तेरापंथ सम्प्रदाय के 10 वें आचार्य
- अणुव्रत आन्दोलन में मुख्य भूमिका निभाई।

* 1979 ई. समाज के चरित्र निर्माण के लिए शिक्षा में "Science of Living" की शुरुआत की।

- 2001 ई.→ सुजानगढ़ से अंहिसा यात्रा की शुरुआत की थी।
- 2003 ई.→ सूरत में राष्ट्रपति डॉ. APJ Abdul कलाम ने सर्वधर्म सम्मेलन का आयोजन किया जिसकी अध्यक्षता आचार्य महाप्र ने की थी।
- पुस्तक- 1) "Family and Nation"
  2) Economics of Mahaveer

मुस्लिम सन्त

- लालदास जी-
  - जन्म स्थान- धोलीदूब (अलवर)
  - पिता- चांदमल
  - माता- समदा
  - गुरु- गद्दन चिश्ती
  - समाधि- शेरपुर (Alwar)

  मुख्य केन्द्र- नंगला जहाज (भरतपुर)

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

- मेले- 1. आश्विन शुक्ल एकादशी
  2. माघ पूर्णिमा
- ये लकड़हारे थे।
- इनका जन्म 'मेव' परिवार में हुआ।
- इन्होंने मेवाती भाषा में अपने उपदेश दिए थे।
- मेवात क्षेत्र में इनका प्रभाव अधिक है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

कुतुब खाँ-

- लालदास जी के बेटे
- मुख्य केन्द्र - बांधोली (अलवर)

नरहड़ पीर-

- मुख्य केन्द्र - नरहड़ (झुंझुनूं)
- मेला - कृष्ण जन्माष्टमी
- अन्य नाम- • हजरत शक्कर बाबा
  • बागड़ का धनी

* सैय्यद फखरुद्दीन-

- मुख्य केन्द्र - गलियाकोट (डूंगरपुर)

(इस स्थान को '<u>मजार-ए-फखरी</u>' कहते हैं)

- दाउदी बोहरा सम्प्रदाय का मुख्य केन्द्र।
- उर्स - मोहर्रम की 27 तारीख।

* ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती-

- जन्म - संजर (ईरान)
- गुरु - ख्वाजा उस्मान हारुनी
- मोहम्मद गौरी के आक्रमणों के दौरान भारत आए थे।
- गौरी ने उन्हें 'सुल्तान-उल हिन्द' की उपाधि दी।
- पृथ्वीराज के शासनकाल में उन्होंने अजमेर को अपना मुख्य केन्द्र बनाया।
- शुरु- इल्तुतमिश (दिल्ली)
  पूर्ण- गयासुद्दीन खिलजी (मालवा) — अजमेर की दरगाह का निर्माण।
- मोहम्मद बिन तुगलक दिल्ली का पहला राजा था, जिन्होंने उस दरगाह की यात्रा की।
- अकबर उस दरगाह पर 14 बार आया था, तथा उसने उस दरगाह को 18 गाँव भेंट किये थे।
- मेवाड़ महाराणा जगतसिंह 2nd ने → 4 गाँव भेंट किए।
- मारवाड़ महाराजा अजीतसिंह → भूमि अनुदान
- छत्रपति शाहू → पहला मराठा राजा जिसने यहाँ उपहार भेंट किए।

THE NOTES HUB ★ All Notes are Available ★ All Competition Books 7300134518, 7610010054

CamScanner

शेख हमीदुद्दीन नागौरी-

- ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती के शिष्य
- ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती ने उपाधि दी– "सुल्तान-उत-तारीकीन"
- इल्तुतमिश के उपहारों को अस्वीकार किया।
- इनके सम्मान में इल्तुतमिश ने नागौर में बुलन्द दरवाजा बनवाया, जिसे अतारीकिन दरवाजा कहा जाता है।
- ये पूर्णतः शाकाहारी थे।
- सुवाल नामक गाँव में खेती करते थे।
- इनके रहने का स्थान- 'फूलमहल'
- पत्नी- बीबी खदीजा (आध्यात्मिक महिला थी)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

शेख फरीदुद्दीन–

- ये शेख हमीदुद्दीन नागौरी के पोते थे।
- MBT के समकालीन थे।
- शेख हमीदुद्दीन नागौरी का मलफूजात तैयार करवाया था।
  ↓
  "सुरूर-उस-सुदूर"

शेख कबीर चिश्ती-

- शेख हमीदुद्दीन नागौरी के वंशज थे।
- मुख्य केन्द्र- नागौर
- कालान्तर में अहमदाबाद चले गए थे।

शाह गुलाम इमाम-

- अन्य नाम- शेख मानू
- शेख हमीदुद्दीन नागौरी के वंशज थे।
- मुख्य केन्द्र - सिघांना (नीम का थाना)

ख्वाजा मखदूम हुसैन नागौरी-

- शेख हमीदुद्दीन नागौरी के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी
- कुरान के 30 ग्रन्थ तैयार करवाए थे, जिन्हें 'नूर-ए-नबी' कहा जाता है।
- मुस्तफा सागर तालाब
- रसूल बाड़ी बगीचा

(उपर्युक्त दोनों) नागौर में बनवाए।

- मांडु (मालवा) के सुल्तान से धन प्राप्त किया एवं निर्माण करवाया —
  - (i) गुम्बद (अजमेर)
  - (ii) चारदीवारी (नागौर)

शेख बुरहान चिश्ती-

- मुख्य केन्द्र- तालाघोला (जयपुर)
- जयपुर के राजा इस दरगाह से कर नहीं लेते थे।
- रोह के अफगानों में उनका प्रभाव अधिक था।

काजी हमीदुद्दीन नागौरी-

- अबुल फजल के अनुसार इन्होंने तीन वर्ष तक नागौर में काजी के रूप में कार्य किया।
- कालान्तर में ये बगदाद चले गए थे।

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7810010054

CamScanner

- गुरु- शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी
- नागौर को सुहरावर्दी सम्प्रदाय का मुख्य केन्द्र बनाया।
- मजार (दरगाह)- दिल्ली

शेख इस्हाक-

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- मगरिबी सम्प्रदाय की स्थापना की।
- केन्द्र - खाटू (नागौर)

शेख अहमद-

- गुरु- शेख इस्हाक
- मुख्य केन्द्र - खाटू
- इन्होंने हज यात्रा की थी।
- 1398 AD में इन्होंने दिल्ली जाकर तैमूर से मुलाकात की थी।
- सुल्तान मुज्जफरशाह के बुलाने पर गुजरात चले गए थे।
- सरखेज (GJ) – खानकाह, मदरसा, मज़ार
  उपाधियाँ – (i) कुतुब- उल- अकताब (ii) गंजबक्श

रसूल शाह-

- मुख्य केन्द्र- बहादुरपुर (अलवर)
- गुरु - नियामत उल्ला शाह
- रसूलशाह सम्प्रदाय चलाया था।
- ये शराब पीते थे।

गुलाम मोइनुद्दीन-

↳ चांदशाह
- मुख्य केन्द्र - पाली

लोक संतों एवं लोक देवताओं का योगदान

1. राजनीतिक योगदान-

- कई लोकदेवता तथा संत राजपरिवारों से संबंधित थे अतः जनता को प्रभावित करने में अधिक सफल रहे। Eg.- (Missing)
- इन्होंने राजाओं को प्रभावित किया था, अतः राजा जनता के प्रति उदार हो गए थे
- इन्होंने धर्म एवं राष्ट्र की रक्षा की।

2. सामाजिक योगदान- धर्म, जाति, महिला

(i) इन्होंने हिन्दू-मुस्लिम एकता को बढ़ावा दिया था।

(ii) इन्होंने छुआछूत निवारण के प्रयास किए।

(iii) इन्होंने महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

3. धार्मिक योगदान-

- इन्होंने धार्मिक कर्मकाण्डों का विरोध किया था।
- इन्होंने सरल भक्ति पर बल दिया।
- इन्होंने भक्ति की नई विचारधारा प्रस्तुत की - निर्गुण भक्ति

4. साहित्यिक योगदान-

(i) इन्होंने स्थानीय बोलियों में अपने उपदेश दिए थे जिससे हमारी राजस्थानी भाषा सशक्त हुई।

(ii) इन्होंने अनेक ग्रन्थों की रचना की जिससे साहित्य को बढ़ावा मिला।

5. <u>पर्यावरणीय योगदान-</u> इन्होंने पर्यावरण संरक्षण तथा वन्य जीव संरक्षण पर बल दिया।

6. <u>कलात्मक योगदान-</u>

(i) उनके अनुयायियों ने अनेक मंदिरों का निर्माण करवाया जिससे राजस्थान की स्थापत्य कला मजबूत हुई।

(ii) मंदिरों में देवी-देवताओं से संबंधित चित्र बनाए गए थे जिससे हमारी चित्रकला को बढ़ावा मिला जैसे- पिछवाई फड़।

7. <u>सांस्कृतिक योगदान-</u>

(i) उनके अनुयायियों द्वारा गीतों, नृत्यों एवं वाद्य यंत्रों का विकास किया गया जिससे हमारा सांस्कृतिक विकास हुआ।

(ii) उनके मेले तथा त्योहारों ने सामाजिक समरसता को बढ़ावा दिया।

8. <u>आर्थिक योगदान-</u>

(i) उनके मेलों के कारण आर्थिक गतिविधियों में बढ़ोतरी हुई।

(ii) मेलों ने राजस्थान के पर्यटन को बढ़ावा दिया।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

राजस्थान के लोकगीत

* **महात्मा गाँधी-** लोकगीत जनता की भाषा है तथा हमारी संस्कृति के पहरेदार है।

* **रविन्द्रनाथ टैगोर-** "लोकगीत हमारी संस्कृति का सुखद संदेश ले जाने वाली एक कला है।"

* राजस्थान के लोकगीतों को 3 भागों में बाँटा जा सकता है।
  - जनसामान्य के लोकगीत
  - व्यावसायिक लोकगीत
  - क्षेत्रीय लोकगीत

1. जनसामान्य के लोकगीत-

इन लोकगीतों को 5 भागों में बाँटा जा सकता है-

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

(i) संस्कार सम्बन्धी लोकगीत-

* जच्चा
* सगाई
* बन्ना- बन्नी
* घुड़चढ़ी
* मायरा/ भात
* जुआ - जुई
* **जला-** बारात का डेरा देखते समय महिलाओं द्वारा गाया जाने वाला गीत।

(ii) त्योहार संबंधी लोकगीत-

* हीड़- दीपावली
* धमाल/ रसिया - होली

(iii) धार्मिक लोकगीत-

* तेजा
* लांगुरिया

* हवेली
* लावणी - देवी- देवताओं के गीत
* चिरजा- देवी के लम्बे गीत
* हरजस- निर्गुण भक्ति के गीत

(iv) ऋतु संबंधित लोकगीत-

* सियालो
* उनियालो / उनालो
* चौमासा
* कजली - भाद्रपद के समय गाते है।

(v) विविध-

* गोरबन्द - ऊँट के गले का आभूषण
* पणिहारी
* इण्डोणी
* कांगसियो

२. व्यावसायिक लोकगीत-

- राजस्थान के विभिन्न समुदायों ने संगीत को व्यावसायिक रूप से अपनाया।
- इन्होंने संगीत की कई रागों का विकास किया।
- राजाओं ने इन्हें संरक्षण प्रदान किया।

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

समुदाय ↓

1. लंगा
2. मांगणियार
3. ढोली
4. ढाढी
5. मिरासी
6. कालबेलिया
7. जोगी

राग ↓

* मांड, * सोरठ — शृंगार
* सिन्धु, * मारु — युद्ध

3. क्षेत्रीय लोकगीत-

* इन लोकगीतों को तीन भागों में बांटा जाता है-

(i) मरुस्थलीय लोकगीत-

* पीपली
* केवड़ो
* चिरमी
* रतन राणो

THE NOTES HUB * Notes are Available * All Competition Books * 7300134518, 7610010054 *

*** रतन राणो-**

राणा रतनसिंह अमरकोट का राजा था। 1857 की क्रान्ति के दौरान अंग्रेजों के खिलाफ बगावत करने के कारण अंग्रेजों ने फाँसी लगा दी।

(ii) पर्वतीय लोकगीत-

इस क्षेत्र में जनजातीय गीत अधिक गाए जाते है।

मांदल वाद्ययंत्र के साथ गाते है

महिला व पुरुष मिलकर इन गीतों का गाते है।

* पटेल्या
* लालर
* बिछियो
* नाव री असवारी
* ऊँटा री असवारी

CamScanner

(iii) मैदानी लोकगीत-

* धार्मिक तथा श्रृंगार संबंधित गीत।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

राजस्थान के प्रमुख लोकगीत

1. केसरिया बालम-

- राजस्थान का राज्य गीत है, जो कि मांड गायन शैली में गाया जाता है।
- इसमें पत्नी, पति को परदेश से वापस बुलाती है।

2. कुरजां- पत्नी कुरजां के माध्यम से अपने पति के पास संदेश भेजती है।

3. सुवटियो- भील महिलाएँ तोते के माध्यम से अपने पति के पास संदेश भेजती है।

4. मोरियो- यह गीत उस लड़की द्वारा गाया जाता है जिसकी सगाई हो चुकी है परन्तु शादी होना बाकी है।

5. कागा- पत्नी कौए को उड़ाकर पति के घर आने का शगुन मनाती है।

6. बधावा- किसी शुभ कार्य के पूर्ण होने पर बधावा गाया जाता है।

7. कामण- दुल्हे को जादू टोने से बचाने के लिए कामण गाया जाता है।

8. सीठणे- विवाह के दौरान महिलाओं द्वारा गाया जाने वाला गालियों भरा गीत।

9. <u>पावणा-</u> दामाद के ससुराल आने पर गाया जाता है।

10. <u>कोयल/ ओल्यूं-</u> लड़की की विदाई के समय यह गीत गाया जाता है।

11. <u>ढोलामारु-</u>
- सिरोही क्षेत्र का लोकगीत।
- ढोलामारु की प्रेम कहानी पर आधारित।
- ढाढ़ी समाज के गायकों द्वारा गाया जाता है।

12. <u>झोरावा-</u>
जैसलमेर क्षेत्र का लोकगीत है जो किसी की याद में गाया जाता है।

13. <u>हिचकी-</u> मेवात क्षेत्र का लोकगीत है जो किसी की याद में गाया जाता है।

14. <u>बिच्छुड़ो-</u> हाड़ौती क्षेत्र का लोकगीत

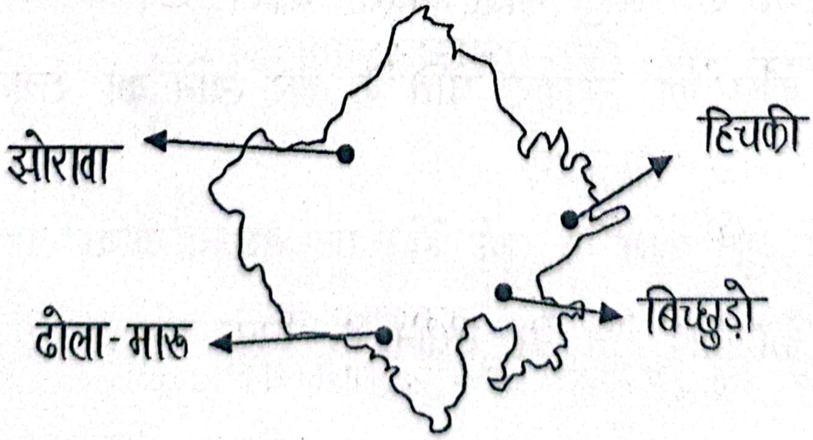

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

लोक गायन शैलियाँ

1. मांड-

- मांड जैसलमेर का पुराना नाम था अतः उस क्षेत्र में यह लोक गायन शैली विकसित हुई।
- कालान्तर में यह राजस्थान के अन्य भागों में भी लोकप्रिय हुई थी।
- मुख्य गीत - केसरिया बालम
- मुख्य कलाकार - बीकानेर — अल्लाह जिलाई बाई
  पाली — गवरी बाई
  उदयपुर— मांगी बाई
  जोधपुर— जमीला बानो
  जयपुर — बन्नो बेगम

THE NOTES HUB Notes are Available All Competition Books 7300134518, 7610010054

बतूल बेगम— नारी शक्ति अवार्ड (२०२२) - माँड गायिकी में

२. मांगणियार—

- जैसलमेर- बाड़मेर क्षेत्र में मांगणियार समुदाय के गायकों द्वारा यह लोक गायन शैली विकसित की गई थी।
- मुख्य वाद्य यंत्र - ① कमायचा
  ② खड़ताल
- मुख्य कलाकार - 1. साकर खाँ - कमायचा वादक
  २. सद्दीक खाँ - खड़ताल का जादूगर

सद्दीक खाँ मांगणियार लोक कला अनुसंधान परिषद २००3 ई. जयपुर

अनवर खाँ – पद्म श्री (२०२२ AD) मांगणियार शैली में

3. लंगा–

जैसलमेर - बाड़मेर क्षेत्र में लंगा समुदाय के गायकों द्वारा यह लोक गायन शैली विकसित की गई थी।

- मुख्य वाद्य यंत्र - कमायचा, सारंगी
- मुख्य गीत - निम्बुड़ा

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

4. तालबन्दी-

जब औरंगजेब ने संगीत पर रोक लगा दी थी तब मथुरा क्षेत्र के साधु- संन्यासी पूर्वी राजस्थान आ गए थे तथा यह लोकगायन शैली विकसित की थी।

- मुख्य वाद्य यंत्र – नगाड़ा

राजस्थान के प्रमुख संगीत घराने

घराना	प्रवर्तक	मुख्य कलाकार
1. जयपुर	भूपत खाँ (मनरंग)	मोहम्मद अली खाँ कोठीवाले (हररंग)
2. पटियाला ↓ जयपुर घराने की शाखा	अली बख्श (आलिया) फतेह अली (फत्तू) ↓ टोंक के नवाब इब्राहिम खाँ ने उन्हें 'जनरल- कर्नल' की उपाधि दी।	गुलाम अली
3. अतरौली (जयपुर की शाखा)	साहब खाँ	मानतौल खाँ (रुलाने वाले फकीर)

4. मेवाती	घग्घे नजीर खाँ (जोधपुर महाराजा जसवन्त सिंह के दरबारी संगीतकार)	पं. जसराज
5. सेनिया	सूरतसेन	अमृतसेन
6. अल्लादियाँ खाँ का घराना	अल्लादियाँ खाँ	किशोरी अमोणकर
7. रंगीला	रमजान अली (मियां रंगीले)	——
8. बीनकार	रज्जब अली खाँ 'बीनकार' ↳ जयपुर महाराजा रामसिंह 2nd के दरबारी संगीतकार	——
9. डागर	बहराम जी 'डागर' (रामसिंह 2nd के दरबारी संगीतकार)	

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

घराना	किससे जुड़ा है
• डागर	→ ध्रुपद गायिकी
• बीनकार	→ वीणा वादन
• सेनिया	→ सितार वादन
• जयपुर • पटियाला • अतरौली • मेवाती • अल्लादिया • रंगीला	ख्याल

राजस्थान की पहली महिला ध्रुपद गायिका
↓
डॉ. मधुभट्ट तैलंग

10. कत्थक - भानू जी (नृत्य)

- किराना - बन्दे अली खाँ →
  - उस्ताद रज्जब अली
  - भीमसेन जोशी
  - रोशन आरा बेगम
  - गंगू बाई हंगल

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

MAHECHA PUBLICATION

राजस्थान के संगीत ग्रन्थ

1. श्रृंगार हार- हम्मीर चौहान (रणथम्भौर के राजा)

2. संगीत राज- राणा कुम्भा (मेवाड़ में गुहिल राजा)
   - 5 भाग → (i) पाठ्य रत्न कोष
     (ii) गीत रत्न कोष
     (iii) वाद्य रत्न कोष
     (iv) नृत्य रत्न कोष
     (v) रस रत्न कोष

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

3. राग माला
4. राग मंजरी
5. राग चन्द्रोदय
6. नर्तन निर्णय

→ पुंडरीक विट्ठल (आमेर के मानसिंह के दरबारी विद्वान)

7. संगीत अनूप अंकुश
8. अनूप संगीत विलास
9. अनूप संगीत रत्नाकर

→ भाव भट्ट (बीकानेर महाराजा अनूपसिंह के दरबारी विद्वान)

10. राग कल्पद्रुम- कृष्णानन्द व्यास (मेवाड़)

11. राग चन्द्रिका- द्वारिकानाथ भट्ट (जयपुर के सवाई प्रतापसिंह के दरबारी विद्वान)

12. स्वर सागर- चाँद खाँ (सवाई प्रतापसिंह के संगीत गुरु)
   - सवाई प्रतापसिंह ने इन्हें 'बुद्ध प्रकाश' की उपाधि दी।

CamScanner

13. राग रत्नाकर- राधाकृष्ण

- उणियारा के सामन्त भीमसिंह के दरबारी विद्वान।
- उणियारा जयपुर रियासत का प्रमुख ठिकाना था।
- उस समय सवाई प्रतापसिंह जयपुर के राजा थे।

जयपुर में संगीत सम्मेलन का आयोजन – सवाई प्रतापसिंह ने करवाया।

- इसकी अध्यक्षता - देवर्षि बृजपाल भट्ट ने की।
- इस सम्मेलन में 'राधा-गोविन्द संगीत सार' नामक ग्रन्थ संकलित किया गया था।
- प्रतापसिंह बृजनिधि नाम से कविता लिखता था।
- गणपति भारती इसके काव्यगुरु थे।

- मिर्जा राजा जयसिंह (आमेर) के काल में 'हस्तकार रत्नावली' नामक संगीत ग्रन्थ लिखा था।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

राजस्थान के लोक नृत्य

१. क्षेत्रीय लोक नृत्य-

(1) घूमर-

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- राजस्थान का राज्य नृत्य
- 'नृत्यों का सिरमौर'
- राजस्थान की आत्मा
- पहले यह नृत्य गणगौर से संबंधित था परन्तु अब सभी शुभ अवसरों पर किया जाता है।
- गोल घेरे में महिलाएँ अपनी ही धुरी पर घूमती हुई नृत्य करती है।
- लहँगों के घूम के कारण इसका नाम घूमर पड़ा।
- यह एक रजवाड़ी लोक नृत्य है।
- इसमें हाथों का लचकदार संचालन होता है।
- इस नृत्य में 8 चरण होते हैं, जिन्हे 'सवाई' कहा जाता है।
- वाद्ययंत्र- ढोल, नगाड़ा, शहनाई

२. तेरहताली नृत्य-

- रामदेव जी के मेले के दौरान कामड़िया सम्प्रदाय की महिलाओं द्वारा यह नृत्य किया जाता है।
- महिलाएँ 13 मंजीरे बाँधकर नृत्य करती है-
  - ९ दाएँ पैर पर
  - २ कोहनी पर
  - २ हाथों में

- महिलाएँ बैठकर नृत्य करती है।
- इस नृत्य के दौरान करतब दिखाए जाते है।
- मुख्य केन्द्र - पादरला (पाली)
- मुख्य नृत्यांगना - मांगी बाई
- पुरुषों द्वारा वाद्ययंत्र बजाए जाते है जैसे - तानपुरा
  चौतारा
- अब यह एक व्यावसायिक लोक नृत्य है।

3. अग्नि नृत्य-

- जसनाथी सम्प्रदाय के पुरुषों द्वारा यह नृत्य किया जाता है।
- पुरुष जलते हुए अंगारों पर नृत्य करते है।
- अंगारों को मतीरा कहा जाता है।
- नृत्य के दौरान कृषि क्रियाएँ सम्पन्न की जाती है।
- नृत्य के दौरान 'फतै- फतै' बोला जाता है।
- मुख्य केन्द्र - कतरियासर (बीकानेर)
- बीकानेर महाराजा गंगासिंह ने इस नृत्य के कलाकारों को प्रोत्साहन दिया था।
- अब यह एक व्यावसायिक लोक नृत्य है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

4. भवाई- (प्रवर्तक - बाघजी)

- गुजरात के सीमावर्ती क्षेत्रों में भवाई समुदाय द्वारा उदयपुर सम्भाग में यह नृत्य किया जाता है।
- यह एक व्यावसायिक लोक नृत्य है।

CamScanner

मुख्य कलाकार- रूपसिंह, दयाराम, ताराशर्मा

विशेषताएँ- • इस नृत्य में करतब अधिक दिखाए जाते है।
• तलवार पर नाचना, अंगारों पर नाचना।
• सिर पर 7-8 मटके रखकर नाचना।

6. बम नृत्य-

- भरतपुर क्षेत्र में पुरुषों द्वारा होली के समय यह नृत्य किया जाता है।
- मुख्य वाद्य यंत्र- नगाड़ा
  - नगाड़े को बम कहा जाता है।
- इस नृत्य के दौरान रसिया नामक गीत गाए जाते है।
- अतः इस नृत्य को 'बम रसिया' नृत्य भी कहा जाता है।
- इस नृत्य में 3 समूह होते है- (i) नर्तक तथा गायक
  (ii) ध्वज वाहक
  (iii) वाद्ययंत्र वादक

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

- वाद्ययंत्र - ढोल, थाली, चिमटा

7. कच्छीघोड़ी नृत्य-

- शेखावाटी क्षेत्र में पुरुषों द्वारा यह नृत्य किया जाता है।
- पुरुष लकड़ी से बनी घोड़ी बाँधकर नाचते है।
- पुरुषों द्वारा दूल्हे की वेशभूषा धारण की जाती है।
- 8 पुरुष दो पंक्तियों में नृत्य करते है।
- नृत्य के दौरान फूल के खिलने तथा मुरझाने का आभास होता है।
- इस नृत्य के दौरान नकली लड़ाई का दृश्य उत्पन्न होता है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- वाद्य यंत्र- ढोल, थाकिया, थाली, झाँझ
- अब यह एक व्यावसायिक लोक नृत्य है।

7. <u>घुड़ला लोक नृत्य-</u>

- शीतलाष्टमी से लेकर गणगौर तक जोधपुर में महिलाओं द्वारा यह नृत्य किया जाता है।
- यह नृत्य जोधपुर के राव सातल की याद में किया जाता है, जिसने घुड़ले खाँ को मारा था।
- महिलाएँ सिर पर छिद्रित मटका रखकर नाचती है जो घुड़ले खाँ का प्रतीक है।
- छिद्रित मटके में एक दीपक रखा जाता है।
- प्रमुख नाट्यकार → कोमल कोठारी → 2 बार पद्म पुरस्कार
  → देवीलाल सामर
  → मणिशंकर गांगुली

8. <u>ढोल नृत्य-</u>

- जालौर क्षेत्र में ढोली एवं भील समुदाय के पुरुषों द्वारा यह नृत्य किया जाता है।
- यह नृत्य थाकना शैली में प्रस्तुत किया जाता है।
- राजस्थान के भूतपूर्व CM जयनारायण व्यास ने इस नृत्य के कलाकारों को प्रोत्साहन दिया था।

9. <u>गींदड़ नृत्य-</u>

- शेखावाटी क्षेत्र में होली के समय पुरुषों द्वारा यह नृत्य किया जाता है।
- गोल घेरे में पुरुष हाथों में लकड़ी के डंडे लेकर नृत्य करते है।

- जो पुरुष महिलाओं के कपड़े पहनता है, गणगौर या मेहरी कहलाता है।
- वाद्ययंत्र- नगाड़ा, ढोल, चंग, डफ

10. <u>चरी नृत्य-</u>

- किशनगढ़ क्षेत्र में गुर्जर महिलाओं द्वारा यह नृत्य किया जाता है।
- महिलाएँ सिर पर चरी रखकर नाचती है।
- चरी में कपास के जलते हुए बीज रखे जाते है।
- मुख्य नृत्यांगना - फलकुबाई

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

होली

चंग	डांग	बिन्दौरी
(शेखावटी)	(नाथद्वारा)	(झालावाड़)

जनजातीय लोक नृत्य

भील	गरासिया	कालबेलिया	कंजर	कथौड़ी
गैर	वालर	शंकरिया	चकरी	मावलिया
गवरी	मॉंदल	बागड़िया	धाकड़	होली
युद्ध	लूर	चकरी		
द्विचक्री	कूद	इंडोणी		
हाथीमना	जवारा	पणिहारी		
घूमरा	मोरिया			
नेजा	गौर			
रमणी				

मेव → रणबाजा, रतवई

सहरिया - शिकार

भील जनजाति के नृत्य

1. गैर-

- होली के समय मेवाड़-मारवाड़ में यह नृत्य किया जाता है।
- मेवाड़ में यह भील पुरुषों द्वारा किया जाता है तथा मारवाड़ में सभी समुदायों के पुरुष इसमें भाग लेते है।
- घोल घेरे में पुरुषों द्वारा हाथों में लकड़ी के डंडे लेकर यह नृत्य किया जाता है।
- पुरुषों द्वारा 'ओंगी' नामक कपड़े पहने जाते है।
- मुख्य केन्द्र- कनाना (बालोतरा)
- वाद्य यंत्र- ढोल, बांकिया, थाली

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

2. गवरी नृत्य-

- मेवाड़ में भील पुरुषों द्वारा यह नृत्य किया जाता है।
- यह रक्षाबन्धन के अगले दिन से शुरु होता है तथा अगले 40 दिन तक चलता है।
- अन्य नाम- राई नृत्य
- वाद्ययंत्र - मांदल, थाली

3. युद्ध नृत्य-

पुरुषों द्वारा यह नृत्य हाथों में हथियार लेकर यह नृत्य किया जाता है।

4. द्विचक्री नृत्य-

पुरुष व महिला दोनों भाग लेते है।

- नृत्य के दौरान दो वृत्त बनाते है।

5. हाथीमना नृत्य- पुरुषों द्वारा शादी के दौरान घुटनों के बल बैठकर यह नृत्य किया जाता है।

6. घुमरा-
बांसवाड़ा क्षेत्र की भील महिलाओं द्वारा यह नृत्य किया जाता है।

7. नेजा-

- भील व मीणा दोनों जनजाति भाग लेती है।
- महिला व पुरुष यह नृत्य करते हैं।
- लकड़ी के डंडे पर एक नारियल बाँध दिया जाता है, पुरुष उसे उतारने का प्रयास करते है तथा महिलाएँ इसकी रक्षा करती है।
- यह नृत्य नकली युद्ध जैसा लगता है।

गरासिया जनजाति के लोक नृत्य-

1. वालर-

- विवाह के दौरान महिला एवं पुरुषों द्वारा किया जाता है।
- नृत्य के दौरान 2 अर्द्धवृत बनते है।
- पुरुष हाथों में तलवार एवं छाता रखते हैं।
- वाद्य यंत्रों का प्रयोग नहीं किया जाता है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

2. मांदल- महिलाओं द्वारा मांदल वाद्ययंत्र के साथ यह नृत्य किया जाता है।

3. लूर- लूर गौत्र की महिलाओं द्वारा किया जाता है।

- इसमें महिलाओं के दो पक्ष होते है- वर पक्ष, वधु पक्ष

वर पक्ष की महिलाएँ वधु पक्ष से लड़की की माँग करती है।

4. कूद-

- महिला - पुरुष दोनों भाग लेते है।
- नृत्य के दौरान २ अर्द्धवृत्त बनाते हैं।
- वाद्ययंत्रों का प्रयोग नहीं किया जाता है।
- यह नृत्य तालियाँ बजाकर किया जाता है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

5. जवारा

- होलिका दहन के समय महिला एवं पुरुषों द्वारा यह नृत्य किया जाता है।
- महिलाएँ हाथों में ज्वार लेकर नृत्य करती है।

6. मोरिया-

पुरुषों द्वारा विवाह के दौरान यह नृत्य किया जाता है।

7. गौर-

आबू क्षेत्र में महिला व पुरुषों द्वारा गणगौर के समय यह नृत्य किया जाता है।

कालबेलिया जनजाति के लोक नृत्य-

1. शंकरिया- प्रेम कहानी पर आधारित एक युगल नृत्य है।
2. बागड़िया- भीख माँगते समय महिलाओं द्वारा किया जाता है।
   मुख्य वाद्य यंत्र - पुंगी, खंजरी
3. चकरी-
   वृत्ताकार मार्ग में महिला तेज गति से घूमते हुए नृत्य करती है।

- मुख्य नृत्यांगना- गुलाबो

4. इण्डोणी-
- महिलाओं द्वारा किया जाता है।
- महिलाएँ बेहद आकर्षक पोशाक पहनती है।

5. पणिहारी-
- यह पणिहारी गीत पर आधारित एक युगल नृत्य है।

कंजर जनजाति के नृत्य

1. चकरी-
- महिलाओं द्वारा किया जाता है।
- महिलाएँ 'खुसनी' नामक कपडे पहनती है।

2. धाकड़-
- यह पुरुषों द्वारा किया जाता है।
- यह नृत्य बीरा v/s झालापात के बीच हुए युद्ध की याद में किया जाता है।

कथौड़ी जनजाति के नृत्य

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

1. मावलिया
- पुरुषों द्वारा नवरात्र के दिनों मे किया जाता
- वाद्ययंत्र - ढोलक, बाँसुरी, टापरा।

2. होली नृत्य-
- महिलाओं द्वारा होली पर यह नृत्य किया जाता है।
- नृत्य के दौरान महिलाएँ पिरामिड बनाती है।

CamScanner

MAHECHA PUBLICATION

- महिलाओं के दौरान इसमें पहनी जाने वाली साड़ी - 'फड़का'
- वाद्ययंत्र - ढोलक, बाँसुरी, पातरी, धारिया।

मेव जनजाति के नृत्य

THE NOTES HUB * Notes are Available * All Competition Books 7300134518, 7610010054

1. **रणबाजा-**
- पुरुषों द्वारा यह नृत्य किया जाता है।
- वाद्ययंत्र- झांझ, तुरई/तुरही

2. **रतवई-**
- महिलाओं द्वारा यह नृत्य किया जाता है।
- महिलाएँ हाथों में हरी चूड़ियाँ पहनती है।
- पुरुषों द्वारा वाद्ययंत्र (दमामा) बजाया जाता है।
  - ↓ "अवनद्ध वाद्य यंत्र"

रमणी	भील
शिकारी	सहरिया
मछली	बन्जारा
झूमर	गुर्जर

कालबेलिया नृत्य

- UNESCO की World Heritage साइट में शामिल → 2010
- प्रशिक्षण केन्द्र → हाथी गाँव (आमेर)
- वाद्ययंत्र → बीन, अलगोजा, घुरालियों, पुंगी, खंजरी, डफ

राजस्थान की चित्रकला

- आनन्द कुमार स्वामी, O.C गांगुली, हैवेल — राजपूत चित्रकला
- W.H ब्राउन — राजपूत कला
- रायकृष्ण दास — राजस्थानी चित्रकला

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- 1916 ई. में आनन्द कुमार स्वामी ने "राजपूत पेंटिंग्स" नामक पुस्तक लिखी थी।
- इस पुस्तक में राजस्थानी चित्रकला के साथ-साथ पहाड़ी क्षेत्र की चित्रकला को भी शामिल किया गया था।
- उन्होंने राजस्थान की चित्रकला को चार भागों में बाँटा था-

(i) मेवाड़
- चावण्ड / उदयपुर
- देवगढ़
- नाथद्वारा
- शाहपुरा

(ii) मारवाड़
- जोधपुर
- बीकानेर
- किशनगढ़
- नागौर
- जैसलमेर
- अजमेर

(iii) ढूँढाड़
- आमेर/ जयपुर
- अलवर
- उणियारा
- शेखावाटी

(iv) हाड़ौती
- बूँदी
- कोटा

- राजस्थान के प्राचीन चित्रित ग्रन्थ जैसलमेर के "जिन भद्र सूरि भण्डार" में रखे गए है, जैसे-
  - ओघ निर्युक्ति वृत्ति
  - दस वैकालिका सूत्र चूर्णि

MAHESH PUBLICATI

मेवाड़ चित्रशैली

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- मेवाड़ राजस्थान की चित्रकला की जन्मभूमि है।
- मेवाड़ चित्रकला ने अजन्ता चित्रकला को आगे बढ़ाया।

श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णि
- 1260 AD
- आहड़
- रावल तेजसिंह
- चित्रकार-कमलचन्द्र

सुपार्श्वनाथ चरितम
- 1423 ई.
- देलवाड़ा
- राणा मोकल

1. चावण्ड / उदयपुर-

महाराणा प्रताप-

- चावण्ड से मेवाड़ चित्रकला का स्वतंत्र विकास प्रारम्भ हुआ।
- 1592 AD में निसारदीन ने ढोला-मारू का चित्रण किया था, जो कि दिल्ली के राष्ट्रीय संग्रहालय में रखी गई है।

अमरसिंह-I-

- 1605 ई. में निसारदीन ने रागमाला का चित्रण किया था।
- उस समय बारहमासा का भी चित्रण किया गया था।

जगतसिंह-I

- उसका शासनकाल मेवाड़ चित्रकला का स्वर्णकाल था।
- उदयपुर में 'चितेरों री ओवरी' की स्थापना की जिसे "तस्वीरां रो कारखानो" भी कहा जाता है।

- साहिबदीन ने < रागमाल / भागवत पुराण > का चित्रण किया।
- इसने मेवाड़ के राजाओं के व्यक्तिगत चित्र भी बनाए थे।
- 1649 AD में मनोहर ने रामायण का चित्रण किया था।

जयसिंह

- इस समय लघु चित्र अधिक बनाए गए थे।

संग्राम सिंह - 2nd-

- इनके समय अलग-अलग विषय से संबंधित चित्र बनाए गए थे जैसे-
  1. गीत गोविन्द
  2. बिहारी सतसई
  3. कलीला दमना
  4. मुल्ला दो प्याजा के लतीफे

विशेषताएँ-

- लाल व चमकीले पीले रंग का प्रयोग।
- कदम्ब वृक्ष का चित्रण।
- अटपटी पगड़ी का चित्रण।
- शिकार के दृश्यों का 3D प्रभाव
- बेसिल ग्रे तथा डगलस गैरेट के अनुसार मेवाड़ चौरपंचाशिका शैली का उद्गम स्थल था।

THE NOTES HUB *Notes are Available* *All Competition Books* 7300134518, 7610010054

- चावण्ड (उदयपुर) के प्रमुख चित्रकार-

(i) नानाराम- महाराणा उदयसिंह के शासनकाल में पारिजात अवतरण का चित्रण किया था।

(ii) नूरुद्दीन - महाराणा जगतसिंह 2nd का चित्र बनाया था।
(iii) गंगाराम
(iv) कृपाराम
(v) जगन्नाथ

➤ देवगढ़ -

* 1680 AD में महाराणा जयसिंह ने द्वारिकादास चूंडावत को देवगढ़ ठिकाणा दिया था।
* यह मेवाड़ का अन्तिम प्रथम श्रेणी का ठिकाना था। (16 वाँ)

द्वारिकादास चूंडावत -

- चित्रकला का स्वतंत्र विकास प्रारम्भ हुआ।
- श्री धर अंधारे देवगढ़ चित्रकला को प्रकाश में लाए थे।

विशेषताएँ -

- हरे व पीले रंग का प्रयोग
- मेवाड़, मारवाड़ तथा ढूंढाड़ चित्रकलाओं का मिश्रण।
- भित्ति चित्र (Murals) बनाए गए जैसे — मोती महल
  अजारा री ओवरी

प्रमुख चित्रकार -

- कंवला
- चोखा
- बगता
- नगा
- हरचन्द

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

➤ नाथद्वारा -

- राजसिंह — चित्रकला का स्वतंत्र विकास प्रारम्भ हुआ।

- विशेषताएँ-

1. वल्लभ सम्प्रदाय का प्रभाव अधिक
2. मन्दिर की दीवारों पर भगवान कृष्ण के चित्र बनाए गए थे जिन्हें 'पिछवाई' कहा जाता है।
3. सघन वनस्पति का चित्रण
4. केले के पेड़ का चित्रण
5. गायों का चित्रण
6. आसमान में देवताओं का चित्रण
7. पीले तथा हल्के हरे रंग का प्रयोग

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

चित्रकार-

1. नारायण
2. चतुर्भुज
3. रामचन्द्र
4. रामलिंग
5. चम्पालाल
6. घासीराम
7. उदयराम
8. कमला
9. इलायची

8. कमला, 9. इलायची — महिला चित्रकार

मारवाड़

- तिब्बती इतिहासकार तारानाथ लामा के अनुसार 7वीं शताब्दी में मारवाड़ में श्रृंगधर नामक चित्रकार था।
- रामावतार अग्रवाल ने "Marwar Murals" नामक पुस्तक लिखी।

➢ जोधपुर-

मालदेव

- चित्रकला का स्वतंत्र विकास प्रारम्भ हुआ।
- चोखेलाव महल में भित्ती चित्र बनाए गए।
- उत्तराध्ययन सूत्र नामक ग्रन्थ का चित्रण किया गया।

सूरसिंह-

- ढोला मारु तथा भागवत पुराण का चित्रण किया गया।

जसवन्त सिंह-

- चित्रकला में मुगल प्रभाव दिखाई देता है।
- भगवान कृष्ण के चित्र अधिक बनाए गए।

मानसिंह-

- इसका शासनकाल जोधपुर का स्वर्णकाल था।
- इस समय नाथ सम्प्रदाय से संबंधित चित्रण अधिक किया गया था जैसे-
  1. नाथ चरित्र
  2. दुर्गा पुराण
  3. शिव पुराण
- मतिराम की पुस्तक 'रसराज' के 63 चित्र महामंदिर से प्राप्त हुए थे।
- दानाराम इस समय का प्रमुख चित्रकार था।

तख्तसिंह-

- चित्रकला पर यूरोपीय प्रभाव दिखाई देता है।
- A.H मूलर- दुर्गादास राठौड़ का चित्र बनाया।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

विशेषताएँ-

(i) लाल व पीले रंग का प्रयोग

(ii) हासिये में पीले रंग का प्रयोग

(iii) बादलों का चित्रण

(iv) प्रेम कहानियों का चित्रण जैसे- ढोला-मारु
महेन्द्र - मूमल
वीरमदेव - फिरोजा

चित्रकार-

(i) डालचन्द- महाराजा अभयसिंह का नृत्य देखते हुए चित्र

(ii) वीरजी - 1623 AD में पाली के विट्ठलदास चम्पावत के लिए 'रागमाला' का चित्रण किया था।

(iii) शिवदास
(iv) शंकरदास
(v) अमरदास
(vi) जीतमल
(vii) छज्जू

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

➤ बीकानेर-

रायसिंह-

- चित्रकला का स्वतंत्र विकास प्रारम्भ।
- भागवत पुराण का चित्रण किया गया।
- उस समय बीकानेर में 'उस्ता कला' प्रारम्भ हुई।
  - अली राजा
  - रुकनुद्दीन → इन्हें लाहौर से बुलाया गया था।

- इसमें ऊँट के चमड़े पर सोने का कार्य किया जाता है।
- बीकानेर के camel hide training centre में उस्ता कला सिखाई जाती है।
- उस्ता कला के मुख्य चित्रकार -
  - आसीर खाँ
  - हसन
  - रामलाल
  - हेसामुद्दीन (पद्म श्री)

अनूपसिंह-

- बीकानेर चित्रकला का स्वर्णकाल
- उसने मथेरणा कला को प्रोत्साहन दिया था।
- मथेरणा जैन चित्रकार थे।
- इन्होंने गीली दीवारों पर राजाओं के चित्र बनाए थे इसे आलागीला कहा जाता था। शेखावाटी में इसे 'पणो' कहते है।

  अन्य नाम- फ्रेस्को अरायश

- मथेरणा कला के चित्रकार-
  - चन्दू
  - मुन्ना
  - मुकुन्द

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

विशेषताएँ-

(i) लाल, बैंगनी, स्लेटी रंगों का प्रयोग

(ii) मुगल, पंजाब तथा दक्षिण भारत की चित्रकलाओं का प्रभाव

(iii) मुस्लिम चित्रकारों ने हिन्दू देवी-देवताओं के चित्र बनाए।

(iv) फूल-पत्तियों का चित्रण।

CamScanner

(v) बीकानेर व शेखावाटी के चित्रकार चित्रों के साथ नाम व तिथि भी लिखते थे।

THE NOTES HUB *Notes are Available* All Competition Books 7300134518, 7610010054

(vi) रेत के टीलों का चित्रण।

(vii) पहाड़ों का चित्रण।

→ Herman Goetz की BOOK → Art & Architecture of Bikaner State.

→ A.H मुलर के चित्र -

1. जैतसी का कामरान पर आक्रमण
2. पृथ्वीराज राठौड़ का महाराणा प्रताप को पत्र
3. जांगलधर बादशाह (कर्णसिंह)

> किशनगढ़ -

सावंतसिंह -

- चित्रकला का स्वतंत्र विकास प्रारम्भ हुआ।
- इसका शासनकाल किशनगढ़ चित्रकला का स्वर्णकाल था।
- सावंतसिंह की पुस्तकें - ·मनोरथ मंजरी, ·देरा दशा, ·रसिक रत्नावली] - नागर समुच्चय
- उसकी प्रेमिका विष्णुप्रिया (बणी-ठणी) 'रसिक बिहारी' नाम से कविताएँ लिखती थी।
- वल्लभ सम्प्रदाय के प्रभाव के कारण भगवान श्रीकृष्ण के चित्र अधिक बनाए गए थे।
- विष्णुप्रिया को राधा के रूप में चित्रित किया गया।

चित्रकार-

(i) मोरध्वज निहालचन्द - नागर समुच्चय का चित्रण किया

विष्णुप्रिया का व्यक्तिगत चित्र बनाया था
जिसे 'बणी- ठणी' कहा जाता है।

एरिक डिक्सन = "भारत की मोनालिसा"

1973 AD में बणी- ठणी पर डाक टिकट जारी किया गया।

(ii) अमीरचन्द- पेंटिंग- "चाँदनी रात की गोष्ठी"

(iii) सूरध्वज

(iv) सीताराम

(v) सवाईराम

(vi) रामनाथ

(vii) नानकराम

(viii) बदनसिंह

(ix) लाडलीदास

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

विशेषताएँ-

1. महिला सौन्दर्य का चित्रण अधिक
2. गुलाबी एवं सफेद रंग का प्रयोग
3. हासिये में हल्के गुलाबी रंग का प्रयोग
4. 'बेसरि' (नाक का आभूषण) का चित्रण
5. कांगडा की चित्रकला का प्रभाव
6. केले के पेडों का चित्रण
7. सरोवरों का चित्रण
8. हंसो का चित्रण

➢ नागौर-

- वृद्धावस्था का अधिक चित्रण
- लकड़ी के दरवाजों पर भित्ती चित्रण
- पारदर्शी कपड़े का चित्रण
- बुझे हुए रंगों का प्रयोग

➢ अजमेर-

- हिन्दू, इस्लाम तथा मुस्लिम धर्मों का प्रभाव
- ठिकानों की चित्रकला में राजपूत संस्कृति दिखाई देती है।

चित्रकार-

1. चाँद – पाबू जी का चित्र
2. तैय्यब
3. रामसिंह
4. साहिबा
5. उस्ना

(4, 5 – महिला)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

➢ जैसलमेर-

- अन्य किसी चित्रकला का प्रभाव नहीं है।
- मूमल का चित्रण अधिक है।

ढूँढाड़

➢ आमेर/जयपुर-

मानसिंह- चित्रकला का स्वतंत्र विकास प्रारम्भ

CamScanner

- मुगल गार्डन (बैराठ) / मौजमाबाद > भित्ती चित्रण किया गया था।
- 'यशोधरा चरित्र' नामक ग्रन्थ का चित्रण।
- आमेर के चित्रकारों ने रज्मनामा के 169 चित्र बनाए थे।

मिर्जा राजा जयसिंह-

- गणेशपोल (आमेर) पर भित्ती चित्रण किया गया।
- अपनी रानी चन्द्रावती के लिए भगवान कृष्ण के चित्र बनवाए।

सवाई जयसिंह-

- सूरतखाना की स्थापना की।
- मुख्य चित्रकार- साहिबराम
  मुहम्मदशाह

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

ईश्वरीसिंह-

- 'आदमकद' चित्रण प्रारम्भ हुआ।
- "साहिबराम" → राजाओं के आदमकद चित्र बनाए।

माधोसिंह-

- इस समय भित्ती चित्रण अधिक किया गया, जैसे-
  - (i) गलता जी मन्दिर
  - (ii) सिसोदिया रानी का महल
  - (iii) पुंडरीक हवेली

प्रतापसिंह-

"चित्रकला का स्वर्णकाल"

- चित्रकला स्कूल की स्थापना की।
- लालचन्द नामक चित्रकार ने पशुओं की लड़ाई के दृश्य बनाए थे।

विशेषताएँ-

- लाल, पीला, हरा तथा केसरिया रंग का प्रयोग।
- हासिये में गहरा लाल रंग का प्रयोग।
- मुगल चित्रकला का अधिक प्रभाव।
- मुगल प्रभाव के कारण 'आलागीला चित्रण' की शुरुआत हुई।
  - शुरुआत = जयपुर
  - प्रसिद्ध = बीकानेर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- आदमकद चित्रण अधिक
- भित्ती चित्रण अधिक
- हाथियों का चित्रण
- उद्यानों का चित्रण
- दाढ़ी-मूँछ विहीन पुरुष

मुख्य चित्रकार-

1. लाल जी
2. रामजीदास
3. कुशला
4. हुकमा
5. गोपाल
6. उदय

➤ अलवर-

बख्तावर सिंह - चित्रकला का स्वतंत्र विकास प्रारम्भ हुआ।

- राजगढ़ के शीशमहल में भित्ती चित्रण किया गया।

- चित्रों में बख्तावर सिंह धार्मिक चर्चा कर रहा है।

विनयसिंह-

- "अलवर चित्रकला का स्वर्णकाल"
- विनयसिंह का अलवर चित्रकला में वही स्थान है जो अकबर का मुगल चित्रकला में है।
- बलदेव नामक चित्रकार विनयसिंह को चित्र बनाना सिखाता था।
- बलदेव तथा गुलाम अली ने 'गुलिस्तां' (शेख सादी की पुस्तक) का चित्रण किया।

शिवदान सिंह-

- कोकशास्त्र का चित्रण किया गया।

मंगल सिंह-

- मूलचन्द नामक चित्रकार ने हाथीदाँत पर चित्र बनाए।

*विशेषताएँ-

- उज्ज्वल तथा चिकने रंगों का प्रयोग।
- हासिये में फूल-पत्तियों का चित्रण।
- जयपुर, मुगल तथा ईरानी चित्रकला का प्रभाव।
- लघु चित्रण अधिक।
- योगासन चित्रण अधिक।
- वेश्याओं का चित्रण अधिक।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

* चित्रकार-

1.) शिवकुमार
2.) डालूराम
3.) जमनादास
4.) सालिगराम
5.) बक्साराम
6.) नन्दलाल
7.) छोटेराम

(शिवकुमार व डालूराम) प्रतापसिंह के साथ जयपुर से अलवर गए थे।

➤ उणियारा- यह जयपुर रियासत का प्रमुख ठिकाना था।

* सरदार सिंह-

- चित्रकला का स्वतंत्र विकास
- ढूँढाड़ तथा बूँदी चित्रकला का मिश्रण

चित्रकार-

1. मीरबक्श → राम, लक्ष्मण, सीता, हनुमान जी के चित्र
2. धीमा
3. भीम
4. काशी
5. रामलखन

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

➤ शेखावाटी-

- शेखावाटी हवेलियों के लिए प्रसिद्ध है तथा हवेलियाँ अपने भित्ती चित्रों के लिए जानी जाती है अतः शेखावाटी को "open art gallery" कहा जाता है।

विशेषताएँ-

- नीले रंग का अधिक प्रयोग
- यूरोपीयन चित्रकला का प्रभाव

प्रमुख चित्र-

- श्रीकृष्ण एवं 8 गोपियों का चित्रण - गोयनका हवेली (फतेहपुर)
- जोगीदास की छतरी के भित्ती चित्र - उदयरपुरवाटी (नीम का थाना)
  - चित्रकार- देवा

नादिन ला प्रिंस ने फतेहपुर की हवेलियों के भित्ती चित्रों का संरक्षण किया है।

हाड़ौती

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

➢ बूंदी-

1. सुरजन- चित्रकला का स्वतंत्र विकास प्रारम्भ
2. शत्रुसाल- रंगमहल का निर्माण करवाया जो कि भित्तीचित्रों के लिए प्रसिद्ध है।
3. उम्मेदसिंह- "बूंदी चित्रकला का स्वर्णकाल"
   - चित्रशाला का निर्माण करवाया था, जिसे "भित्ती चित्रो का स्वर्ग" कहा जाता है।
   - प्रमुख चित्र- उम्मेदसिंह जंगली सूअर का शिकार कर रहा है।

विशेषताएँ-

1) पशु-पक्षियों का चित्रण अधिक।
2) पेड़-पौधो का चित्रण अधिक।
3) हरे व नारंगी रंग का प्रयोग

4.> मेवाड़ चित्रकला का अधिक प्रभाव

5.> भावसिंह एवं अनिरुद्ध के शासनकाल में चित्रों में दक्षिण भारतीय प्रभाव दिखाई देता है।

6.> सतरंगी बादलो का चित्रण

7.> नाचते हुए मोरों का चित्रण

8.> लघु चित्र

9.> मतिराम की पुस्तक 'रसराज' की चित्रण

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

*चित्रकार-
- सुरजन
- अहमद
- साधुराम
- रामलाल
- किशन

मतिराम, भावसिंह का दरबारी विद्वान था।

मतिराम की पुस्तकें-
- रसराज
- ललित ललाम

➤ कोटा-

1. रामसिंह- चित्रकला का स्वतंत्र विकास प्रारम्भ

2. भीमसिंह- वल्लभ सम्प्रदाय के प्रभाव में भगवान श्री कृष्ण के अधिक चित्र बनाए गए।

3. उम्मेद सिंह- इसका शासनकाल 'कोटा चित्रकला का स्वर्णकाल' था।

*विशेषताएँ-
- महिला सौन्दर्य का चित्रण अधिक
- शिकार के दृश्यों का चित्रण अधिक

CamScanner

- महिलाएँ पशुओं का शिकार कर रही है।
- मोर, शेर, चम्पा का चित्रण अधिक।
- हल्का हरा, पीले एवं नीले रंग का प्रयोग।

चित्रकार-

1. रघुनाथ
2. गोविन्द
3. लच्छीराम
4. नूर मोहम्मद
5. उत्लू → रागमाला का चित्रण किया।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

राजस्थान की चित्रकला की विशेषताएँ

- हमारी चित्रकला में विषयवस्तु, वर्ण एवं लोक जीवन की विविधता दिखाई देती है जो देश काल तथा परिस्थिति के अनुरूप है।
- हमारी चित्रकला में मुख्य आकृति तथा पृष्ठभूमि में सामंजस्य दिखाई देता है।
- हमारी चित्रकला में प्रकृति का मानवीकरण किया गया जैसे- बारहमासा
- मुगल प्रभाव अधिक दिखाई देता है, जैसे-
  - पारदर्शी कपडे.
  - हासिये का चित्रण
  - विलासिता के दृश्य
  - भव्यता
- हमारी चित्रकला में सामन्ती प्रभाव अधिक दिखाई देता है, जैसे- शिकार के दृश्य
- महलों तथा हवेलियों में भित्ती चित्रण अधिक किया गया था।

- मन्दिरों तथा मठों में धार्मिक चित्र अधिक बनाए गए थे, जैसे- पिछवाई, फड़ आदि।
- महिला सौन्दर्य का चित्रण किया गया।
- चटकीले रंगों का प्रयोग अधिक।
- हमारे चित्रकारों को मुगल चित्रकारों की अपेक्षा अधिक छूट प्राप्त थी अतः उन्होंने जीवन के प्रत्येक पक्ष का चित्रण किया।

प्रमुख चित्रकला के खोजकर्ता-

- मेवाड़
  - श्री धर अंधारे
  - मोतीचन्द
  - R.K वशिष्ठ
- किशनगढ़
  - एरिक डिक्सन
  - फैयाज अली
- हाड़ौती
  - प्रमोदचन्द
  - W.G आर्चर
  - बृजेन्द्र सिंह

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

राजस्थान के आधुनिक चित्रकार-

1. **रामगोपाल विजयवर्गीय**- इन्होंने चित्र प्रदर्शनी लगाना प्रारम्भ किया था।
   - प्रमुख चित्र - मेघदूत, गीत गोविन्द
   - पुस्तक - 'अभिसार निशा'
   - गुरु - शैलेन्द्र नाथ डे

२. <u>गोवर्धन लाल बाबा</u>-
'भीलों का चितेरा'
प्रमुख चित्र- बारात

३. <u>परमानन्द चोयल</u>- 'भैंसों का चितेरा'

4. <u>जगमोहन माथोडिया</u>- 'श्वान का चितेरा'

5. <u>सौभाग्यमल गहलोत</u>- 'नीड़ का चितेरा'

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

6. <u>देवकीनन्दन शर्मा</u>-
प्रकृति का चित्रण अधिक किया।
↓
'The Master of Nature & living objects' कहा जाता है।

7. <u>ज्योतिस्वरूप कच्छवाहा</u>-
जंगल का चित्रण अधिक किया।
शृंखला - 'Inner Jungle'

8. <u>भूरसिंह शेखावत</u>-
↓
इन्हें मास्टर जी नाम से जाना जाता है।

- ग्रामीण संस्कृति से सम्बन्धित चित्र बनाए।
- चित्रों पर राजस्थानी प्रभाव अधिक।
- स्वतन्त्रता सेनानियों के चित्र बनाए।
- प्रमुख चित्र- सब्जी तौलती हुई महिला।

9. <u>कुन्दन लाल मिस्त्री</u>-

- <u>उपाधियाँ</u>-
  - चित्रनिपुण
  - चित्रकलाभूषण

<u>प्रमुख चित्र</u>-
- सीता स्वयंवर
- भील सरदार
- बाजार जाती हुई महिला

- इनके चित्रों के आधार पर राजा रवि वर्मा ने महाराणा प्रताप का चित्र बनाया था।

राजा रवि वर्मा को 'भारतीय चित्रकला का पितामह' कहा जाता है।

- त्रावणकोर रियासत (केरल) से संबंधित।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

राजस्थान की हस्तकला

थेवा कला-

- हरे रंग के काँच पर सोने का कार्य किया जाता है।
- आभूषण बनाए जाते है।
- मुख्य केन्द्र - प्रतापगढ़
- पद्म श्री विजेता - महेश सोनी
- जस्टिन वकी ने उसे अन्तर्राष्ट्रीय लोकप्रियता दिलाई।
- प्रवर्तक - नाथू जी सोनी

२. मीनाकारी-

- सोने के आभूषणों में रंग भरा जाता है।
- मुख्य केन्द्र - जयपुर
- महाराजा मानसिंह ने इसके कारीगरों को लाहौर से बुलाया।
- पद्म श्री - कुदरत सिंह

३. तारकशी-

- चाँदी के पतले तारों से आभूषण बनाए जाते है।
- मुख्य केन्द्र - नाथद्वारा
- कारीगर - रामस्वरूप शर्मा (जयपुर)

4. टेराकोटा-

चिकनी मिट्टी को पकाकर खिलौने, मूर्तियाँ एवं सजावटी सामान बनाया जाता है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- मुख्य केन्द्र- (i) मोलेला (राजसमंद)
  (ii) हरजी (जालौर) → यहाँ पर मिट्टी के घोड़े बनाए जाते हैं।
  (iii) बू (नागौर)
- बड़ोपल (हनुमानगढ़)- यहाँ से प्राचीन टेराकोटा प्राप्त हुई है।
- मोहनलाल कुमावत (पद्म श्री) - मोलेला गाँव
- बनाने की प्रक्रिया:- मिट्टी तथा गधे के गोबर का मिश्रण (4:1) किया जाता है तथा उसे 800°C तापमान पर तपाया जाता है।

5. <u>ब्लू पॉटरी-</u>
अन्य नाम- कामचीनी

- चीनी मिट्टी के सफेद बर्तनों पर नीला रंग किया जाता है।
- मुगलकाल में यह कला फारस से भारत आई थी।
- मुख्य केन्द्र- जयपुर
- सवाई रामसिंह-II के शासनकाल में कालू तथा चूड़ामन नामक कारीगरों को दिल्ली भेजा गया था जहाँ उन्होंने 'भोला' नामक कारीगर से प्रशिक्षण प्राप्त किया।
- पद्म श्री- कृपाल सिंह शेखावत
- इन्होंने नीले रंग के अलावा २5 अन्य रंगों का भी प्रयोग किया जिसे कृपाल शैली कहा जाता है।
- अन्य कारीगर- • नाथीबाई
  • त्रिलोकचन्द
  • दुर्गालाल
  • हनुमान सहाय
  • गोपाल सैनी

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

6. ब्लैक पॉटरी- मुख्य केन्द्र- कोटा, S.M (श्यानोता)

7. बादले-

जिंक के बर्तन जिन पर कपड़े या चमड़े की परत चढ़ाई जाती है।

- इनमें पानी ठण्डा रहता है।
- केन्द्र - जोधपुर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

8. जस्ते की मूर्तियां- केन्द्र - जोधपुर

9. संगमरमर की मूर्तियाँ- मुख्य केन्द्र - जयपुर

- पद्म श्री - अर्जुन लाल प्रजापत

10. कोफ्तगिरी -

- लोहे पर सोने का कार्य किया जाता है।
- केन्द्र - जयपुर, अलवर, उदयपुर*
  - यह कला दमिश्क से भारत आई (मुगल काल)

11. तहनिशा -

- पीतल पर सोने का कार्य किया जाता है।
- केन्द्र - जयपुर, अलवर

12. गलीचे / नमदे-

- केन्द्र- जयपुर, टोंक
- मानसिंह के शासनकाल में यह कला जयपुर में लोकप्रिय हुई।

- बीकानेर व जयपुर की जेलों में कैदियों द्वारा गलीचे बनाए जाते थे।
- यह कला मुगलों द्वारा फारस से लाई गई।

13. दरियाँ-
    - टांकला (नागौर)
    - लवाण (दौसा)
    - सालावास (जोधपुर)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

14. गोटा किनारी-

केन्द्र - खण्डेला (सीकर)

- गोटा किनारी के प्रकार –
  - किरण
  - बांकडी
  - लप्पा
  - लप्पी

15. तलवारें - सिरोही

- सिरोही के राजा मानसिंह के शासनकाल में लोकप्रिय हुई अतः उन्हें मानशाही तलवार कहा जाता है।

16. लाख का कार्य-
    - मुख्य केन्द्र - लक्ष्मणगढ़ (सीकर)
    - इन्द्रगढ़ (बून्दी)
    - जयपुर
    - स० माधोपुर

- मुख्य कारीगर- अयाज अहमद (जयपुर)
- कारीगरों को 'मणिहार' कहा जाता है।
- लाख की चूडियाँ 'मोकड़ी' कहलाती है।

CamScanner

17. <u>हाथीदाँत की चुड़ियाँ</u> –

- मुख्य केन्द्र - जयपुर, पाली

18. <u>काष्ठ कला</u> -

- लकड़ी के मन्दिर बनाए जाते है।
- मुख्य केन्द्र - बस्सी (चित्तौड़गढ़)
- खैरादी समुदाय का परम्परागत व्यवसाय है।
- मुख्य कारीगर → मांगीलाल मिस्त्री
- मन्दिर के प्रकार → १. कावड़ (अनेक दरवाजों वाला)
  २. बैवाण (एक दरवाजा)

THE NOTES HUB
★ Notes are Available ★
All Competition Books
7300134518, 7610010054

19. <u>खेसले</u> -

↳ लेटा (जालौर)

२०. <u>कुट्टी का काम</u> -

- मुख्य केन्द्र - जयपुर

- रामसिंह - II के शासनकाल में लोकप्रिय।
- मुख्य कारीगर - सांवल सिंह
  जमनाप्रसाद

२१. <u>रमकड़ा उद्योग</u> -

- केन्द्र - गलियाकोट (डूँगरपुर)

२२. पाव रजाई - जयपुर

२३. मिरर वर्क - जैसलमेर

२४. पेचवर्क - शेखावाटी

पेचवर्क के प्रकार
- भरत
- सूफ
- हुरमजी
- आरी

२५. खेल का सामान - हनुमानगढ़

२६. खेती का सामान - नागौर

२७. कागजी बर्तन - अलवर

२८. कागज उद्योग - सांगानेर (जयपुर)

२९. नक्काशीदार फर्नीचर - बाड़मेर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

३०. मोजड़ी उद्योग - भीनमाल, बड़गाँव } जालौर

३१. बीड़ी उद्योग - टोंक

३२. नसतार उद्योग - ब्यावर

३३. वार्तिक कला - खण्डेला (सीकर)
- → कपड़े पर मोम लगाकर रंगते है।
- → कारीगर - उमेशचन्द्र शर्मा

३४. जड़ाई - जयपुर

३५. तीर कमान
- → बोडिगामा (डूँगरपुर)
- → चंदू जी का गढ़ा (बांसवाड़ा)

३६. छाता - फालना (पाली)

३७. जरी का कार्य - जयपुर

३८. जट्टपट्टी → प्रकार
जसोल (बालोतरा)
- → जिरोही
- → भांकला
- → गदहा

३९. मेहंदी — सोजत (पाली)

40. काले संगमरमर की मूर्तियाँ - तलवाड़ा (बांसवाड़ा)
↳ सोमपुरा जाति द्वारा यह कार्य किया जाता है।

41. परेवा पत्थर - देवल (डूँगरपुर)

42. रंगाई - छपाई उद्योग-

Ⓐ अजरख प्रिन्ट - बाड़मेर
- ↳ नीले, लाल रंग का अधिक प्रयोग
- ↳ ज्यामितीय अलंकरण बनाए जाते है।
- ↳ तुर्की शैली से प्रभावित है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

Ⓑ मलीर प्रिन्ट - बाड़मेर
- ↳ काले एवं कत्थई रंग का अधिक प्रयोग।

Ⓒ सांगानेरी प्रिन्ट - सांगानेर (जयपुर)
- ↳ काले एवं लाल रंग का अधिक प्रयोग
- ↳ मुन्नालाल गोयल ने लोकप्रिय किया।

Ⓓ बगरू प्रिन्ट - बगरू (जयपुर)
- ↳ प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया जाता है।
- ↳ इसमें फूल-पत्तियाँ बनाई जाती है।

Ⓔ आजम प्रिन्ट - आकोला (चित्तौड़)

Ⓕ जाजम प्रिन्ट - चित्तौड़
- ↳ गाड़िया लोहारों की महिलाओं के कपड़े बनाए जाते है।

Ⓖ लहरिया प्रिन्ट - जयपुर, पाली

Ⓗ बन्धेज प्रिन्ट - जयपुर, जोधपुर
- ↳ Tie & Dye भी कहते है।

(I) कोटा डोरिया - कैथून (कोटा), मांगरोल (बारां)

→ कोटा के दीवान जालिमसिंह झाला ने मंसूर अहमद को हैदराबाद से बुलाया, अतः इसे '<u>मसूरिया कला</u>' भी कहते है।

→ मुख्य कारीगर - जैनब

(J) <u>दाबू प्रिंट</u> - आकोला (चित्तौड़)

→ बालोतरा - मिट्टी का दाबू
→ स॰ माधोपुर - मोम का दाबू
→ बगरू / सांगानेर - गेहूँ का दाबू

(K) आरातारी - सिरोही

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

भौगोलिक संकेतक (G.I Tag)

1. ब्लू पॉटरी
2. ब्लू पॉटरी का Logo
3. कोटा डोरिया
4. कोटा डोरिया का Logo
5. मोलेला टेराकोटा
6. मोलेला टेराकोटा का Logo
7. कठपुतलियाँ (उदयपुर)
8. कठपुतलियों का Logo
9. सांगानेरी प्रिन्ट
10. बगरू प्रिन्ट
11. फुलकारी (गंगानगर)
12. कसीदाकारी (बीकानेर)
13. बीकानेरी भुजिया
14. मकराना मार्बल
15. पोकरण पॉटरी
16. उस्ता कला (बीकानेर)
17. कोफ्तगिरी (उदयपुर)
18. मेहन्दी (सोजत)
19. थेवा कला (प्रतापगढ़)
20. पिछवाई (नाथद्वारा)
21. बंधेज (जोधपुर)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

राजस्थान के आभूषण

महिला के सिर एवं मस्तक के आभूषण-

- चूड़ा रत्न
- शीशफूल
- बोर- बोरला
- रखड़ी (बोर के समान)
- बिंदी/ टिकी
- मैमंद -(लोकगीत गाये जाते है)
- टिड्डी भलको
- गोफण
- तावित
- सांकली

कान के आभूषण-

कर्णफूल, झुमका, फूलझुमका, पीपल पत्र, ओगन्या/आगन्या, गुदड़ा, टोटी/तोटी, लटकन, भादरायण, सुरलिया, बजट्टी

- झेला, जमेला, अगोट्या

नाक के आभूषण-

नथ, कांटा, भंवरा (बिश्नोई महिला), बेसरि, भोगली, चूनी, लौंग, बारी, चोप

दाँत के आभूषण-

चूंप (दाँतों के मध्य छोटा छेद बनाकर कील जड़वाई जाती है), रखन (Gold of Plate)

गले के आभूषण-

हार, चन्द्रहार, झालरा, कांठला, कंठी (चैन), मुक्तमाला (सुमरणी), हँसली, ठुस्सी, तिमणियाँ/ धमण्यो / आड / टेड्यो, हमेल (शेखावाटी), खुंगाली (हाँसली), बजंटी, तांती, आड, तुलसी, मांदलिया, रामनामी, मंगलसूत्र, चम्पाकली, मूंठ्या, पोत, कंठमाला, हंसहार, सरी, हांकर हालरो, निंबोरी।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

हाथ के आभूषण- चूड़ियाँ, बंगडी, नोगरी, कड़ा, गजरा, कंकण गोखरू, पुणच (पूंच), हथफूल (सोवनपान) बल्लया, आंवला, सेवटा, लंगर

हाथ की भुजा- टड्डा (अणत), बाजूबंध (उतरणो)

हाथ की अंगुलियाँ- बींटी/ अँगूठी/ मूँदडी, मुद्रिका, दामणा/ दामणी, अरसी, हथमल/ हथपान/ खडदावणा

कमर के आभूषण - कणकती (कंदोरा), सटका, तकड़ी, चौथ

पैर के आभूषण - कड़ा, लंगर, आँवला, नेवरी, पायल/ रमझोल, टणका, झांझर, तोड़ा/ तोड़ो, टोडा, हीरानामी, नूपुर, टांका, तेधड़, पायजेब

पैर की अंगुलियाँ- बिछिया/ बिछुड़ी, गोलमा, अंगूठा, पगपान, गोर, फोलरी

पुरुषों के आभूषण

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

अंगुलियाँ → अँगूठी, मुंदड़ियाँ

कलाई → कड़ा

कान → लौंग, मुरकियाँ, झाले, छैलकड़ी

गला → चैन, पैंडल, मांदलिया, रामनामी

हाथ की भुजा → भुजबंध, कड़ा, नरमुख

CamScanner

बच्चों के आभूषण

हँसुली → गला	झाँझरिया / पैंजणी → पाँव
कड़ूल्या → हाथ, पाँव	कुड़क → कान
नजर्या → गला	कांठला → गला

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

राजस्थानी वेशभूषा एवं पहनावा

पुरुषों के वस्त्र

- पगड़ी
- अंगरखी
- अचकन
- चोगा
- धोती
- बिरजस (ब्रीचेस)
- कमरबंद (पटका)
- पछेवड़ा
- घूघी
- आतमसुख

महिलाओं की वेशभूषा

- ओढ़नी
- कुर्ती & काँचली
- तिलका
- दामड़ी

आदिवासियों के प्रमुख वस्त्र

- अंगरखा
- अंगोछा
- कटकी
- नांदणा / नानड़ा
- रैनसाई
- जामसाई साड़ी
- कछाबू
- फूदड़ी
- केरी, ज्वार, तारा, लहर — भांत री ओढ़णी

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

पुरुषों के वस्त्र

1. **पगड़ी–**
   - छाबदार = मेवाड़ महाराणा के पगड़ी बाँधने वाला
   - खिड़की पगड़ी = जोधपुर
   - लहरिया पगड़ी = श्रावण
   - मोठड़े की पगड़ी = विवाह
   - मदील की पगड़ी = दशहरा
   - फूल पत्ती की छपाई वाली पगड़ी = होली

NOTE: सुनार आंटे वाली पगड़ी तथा बंजारे मोटी पट्टेदार पगड़ी का प्रयोग करते है।

अन्य पगडियाँ-
अटपटी (मेवाड़), अमरशाही (मेवाड़), अमरशाही, उदेशाही, खंजरशाही, शिवशाही, विजयशाही, शाहजहाँनी।

2) **अंगरखी-** अन्य नाम - तनसुख, गाबा, गदर, बुगतरी, दुतई, मिरजाई

3) **अचकन-**
- घुटनों तक लम्बा
- मुस्लिम समुदाय के पुरुष पहनते हैं
- (महिलाएँ - तिलका)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

4) चोगा- अंगरखी के ऊपर पहना जाता है।

5) धोती

6) बिरजस / ब्रीचेस → घुड़सवारी में उपयोग
→ पैरो से घुटने तक तंग एवं कमर तक घेरदार

7) कमरबन्द / पटका

सटका - कमर का आभूषण

8) पछेवड़ा - कम सर्दी

9) घूघी - मध्यम सर्दी

10) आतमसुख - ज्यादा सर्दी

महिलाओं के वस्त्र

1. **ओढणी-** प्रकार- पोमचा, लहरिया, मोठडा, लूगड़ा

पोमचा- कमल फूल के अभिप्राय युक्त ओढ़णी

- पीला → पुत्र
- गुलाबी → पुत्री

← नवजात शिशु के जन्म पर - मातृपक्ष द्वारा

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

* लहरिया- श्रावण मास में तीज पर
* लूगड़ा- विवाहित स्त्रियों द्वारा
* फागणियां- होली के अवसर प
* पचरंगा लहरिया - शुभ अवसरों पर

<u>लहरिये के प्रकार</u>-
- प्रतापशाही- साहित्य में उल्लेख
- राजशाही लहरिया - जयपुर
- समुद्र लहरिया - २,३,६,७ रंग

* <u>दामड़ी</u>- ओढ़णी का प्रकार, लाल रंग, मारवाड़, धागों की कशीदाकारी

२. कुर्ती & कांचली

३. तिलका- मुस्लिम स्त्रियाँ

आदिवासियों के प्रमुख वस्त्र

1. अंगरखा- ज्यामितीय आकृतियाँ, पुरुषों द्वारा कमर के ऊपर
2. अंगोछा - सिर पर पहना जाता है।
3. कटकी - अविवाहित लड़कियों द्वारा सिर पर ओढ़ा जाता है।

4. नांदणा / नानड़ा - आदिवासियों की प्राचीनतम वेशभूषा
↳ तितली भाँत के चतुष्कोण बने होते है।

5. रेनसाई - साड़ी

6. जामसाई साड़ी - विवाह के अवसर पर

7. कछाबू - महिलाओं के घुटनों तक का घाघरा

8. फूदडी / फूंदडी - षटकोणीय आकृति में तारे बने होते है।

9. केरी भांत की ओढणी

10. ज्वार भांत की ओढणी

11. तारा भांत की ओढणी

12. लहर भांत की ओढणी

- साड़ियों के अन्य नाम - चोल, निचोल, पट, दुकूल, चीर-पटोरी, चोरसो, धोरावाली

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

भीलों की वेशभूषा

- देपाड़ा / ढेपाड़ा - तंग धोती
- खोयतू - सामान्य धोती
- पिरिया - दुल्हन की पीली साड़ी
- सिन्दूरी - लाल साड़ी
- परिजनी - पीतल के कड़े → महिलाएँ → पैरों में

CamScanner

राजस्थान के लोक नाट्य

- नाट्य = संगीत + नृत्य + नाटक
- भरत ने 'नाट्यशास्त्र' नामक पुस्तक लिखी।
- कुम्भा के 'नृत्य रत्नकोष' में नाट्य की जानकारी दी गई है।
  - उपाधियाँ–
    - नव्य भारत
    - अभिनव भरताचार्य

1. तमाशा-

- यह मूल रूप से महाराष्ट्र का लोक नाट्य है।
- सवाई प्रतापसिंह के शासनकाल में यह जयपुर में लोकप्रिय हुआ था।
- इसके लिए 'बंशीधर भट्ट' को महाराष्ट्र से बुलाया गया।
- खुले मैदान में मेले का आयोजन किया जाता है, जिसे 'अखाड़ा' कहते हैं।
- जयपुर की प्रसिद्ध नृत्यांगना 'गौहर जान' तमाशा में भाग लेती थी।
- मुख्य कहानियाँ–
  1. जोगी–जोगण → होली
  2. हीर - रांझा → होली के Next day
  3. जुठठन मियां → शीतलाष्टमी
  4. गोपीचन्द भर्तृहरि → चैत्र अमावस्या

मुख्य कलाकार–

- फूलजी भट्ट
- गोपीजी भट्ट
- वासुदेव भट्ट

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

२. गवरी-

- मेवाड़ क्षेत्र में भील पुरुषों द्वारा यह लोक नाट्य किया जाता है।
- रक्षाबंधन के अगले दिन शुरू होता है एवं 40 दिनों तक चलता है। (भाद्रपद कृष्ण एकम्) (सवा महिने)
- राजस्थान का प्राचीनतम लोकनाट्य है।
- इसे मेरू लोकनाट्य भी कहा जाता है।
- यह लोक नाट्य शिव- भस्मासुर की कहानी पर आधारित है।
- पार्वती → गवरी/राई
- शिव → राईबुड़िया
- सूत्रधार → कुटकुड़िया
- हास्य कलाकार → झटपटिया/ खट्कड्या

सामट्या- लोकभाषा में कविता पाठ करता है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

मुख्य कहानियाँ-

1. बन्जारा - बन्जारी
2. कालू कीर
3. देवी अम्बर
4. खाड़लियो भूत
5. मियां बियावड़

- विभिन्न कहानियों को आपस में जोड़ने के लिए नृत्य किया जाता है, जिसे 'गवरी की घाई' कहते है।
- 'भानू भारती' का 'पशु गायत्री' नाटक गवरी लोक नाट्य पर आधारित है। वाद्ययंत्र- माँदल व थाली

३. नौटंकी- इसमें 9 प्रकार के वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता है, जैसे- नगाड़ा, शहनाई, सारंगी, डफली।

CamScanner

- नौटंकी भरतपुर क्षेत्र में लोकप्रिय है। यह हाथरस शैली से प्रभावित है।
- प्रवर्तक - भूरीलाल जी
- मुख्य कलाकार - गिरिराज प्रसाद
  नत्थाराम
- मुख्य कहानियाँ - 1. अमरसिंह राठौड़
  2. आल्हा - ऊदल
  3. सत्यवान - सावित्रि
  4. हरिशचन्द्र - तारामती

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

4.) रम्मत -

- जैसलमेर एवं बीकानेर क्षेत्रों में लोकप्रिय
- श्रावण के माह में एवं होली पर किया जाता है।
- रम्मत शुरू करने से पहले रामदेवजी के भजन गाए जाते हैं।
- रम्मत के दौरान कई अन्य गीत भी गाए जाते हैं, जैसे -
  - गणपति वन्दना
  - लावणी
  - चौमासा
- वाद्य यंत्र - ढोल, नगाड़ा
- फाल्गुन शुक्ल अष्टमी से चतुर्दशी तक रम्मत का आयोजन किया जाता है।

● जैसलमेर -

- तेजकवि ने इसे लोकप्रिय किया था, इन्होंने 'श्री कृष्ण अखाड़ा' कम्पनी का गठन किया था।
- इन्होंने रम्मत के माध्यम से अंग्रेजी नीतियों का विरोध किया।

- इन्होंने अपनी 'स्वतंत्र बावनी' नामक रम्मत गाँधीजी को भेंट की थी।
- तेजकवि की अन्य रम्मतें- (i) मूमल
  (ii) छबीली तम्बोलन

• बीकानेर

- फाल्गुन शुक्ल 8 से 14 तक बीकानेर के 'पुष्करणा ब्राह्मणों' द्वारा पाटों पर इसका आयोजन किया जाता है।

मोहल्ला	रम्मत
(i) आचार्यों का चौक	अमरसिंह राठौड़
(ii) बिस्सा चौक	चौबेल नौटंकी
(iii) कीकाणी व्यास चौक	जमनादास जी की रम्मत
(iv) बारह गुवाड़	हेड़ाउ - मेरी → प्रसिद्ध ↳ शुरु - जवाहरलाल पुरोहित ने

* मुख्य कलाकार-

- मनीराम व्यास
- तुलसीदास
- फागु महाराज
- सुआ महाराज

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

5. भवाई-

- गुजरात के सीमावर्ती क्षेत्रों में भवाई समुदाय द्वारा उदयपुर सम्भाग में यह लोक नाट्य किया जाता है।
- इसमें सामाजिक समस्याओं पर व्यंग्य किये जाते है।

CamScanner

- इस लोक नाट्य में कलाकार मंच पर अपना परिचय नहीं देते है।
- पुरुष कलाकार – सगाजी
- महिला कलाकार– सगीजी

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- मुख्य कहानियाँ – ① बीकाजी – बाघजी
  ② जसमल ओडण
  → शांता गाँधी ने इसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय किया
  → ओड जनजाति का कार्य- तालाब खोदना
- वाद्य यंत्र- ढोलक
  कलाकार- रूपसिंह शेखावत, दयाराम, तारा शर्मा

6. **स्वांग –**

- कलाकार पौराणिक एवं ऐतिहासिक पात्रों की वेशभूषा पहनता है, तथा अभिनय करता है।
- इसमें एक ही कलाकार भाग लेता है उसे बहरूपिया कहते है।
- यह भीलवाड़ा क्षेत्र में लोकप्रिय है।
- मुख्य कहानी - नाहरो का स्वांग
  → मांडल (भीलवाड़ा)
  → चैत्र कृष्णा त्रयोदशी
- मुगल बादशाह शाहजहाँ के काल में प्रारम्भ किया गया। (नाहरों का स्वांग)
- कलाकार - परशुराम जी (केलवा)
  जानकीलाल भांड (भीलवाड़ा) → मंकी मैन (पद्म श्री)

- अन्य केन्द्र- सांगोद (कोटा)
  किशनगंज (बारां)
  - (i) सहरिया जनजाति द्वारा शिव पार्वती का स्वांग किया जाता है।
- गवरी लोक नाट्य के दौरान स्वांग का प्रदर्शन किया जाता है।

7. चारबैत-

- यह मूल रूप से अफगानिस्तान का लोकनाट्य है।
- नवाब फैजुल्ला खाँ के शासनकाल में यह टोंक में लोकप्रिय हुआ था।
- पहले यह परतो भाषा में प्रस्तुत किया जाता था परन्तु
  (i) करीम खाँ निहंग
  (ii) खलीफा करीम खाँ ने उसे स्थानीय भाषा में प्रस्तुत किया था।
- वाद्ययंत्र - डफ
- चारबैंत संगीत दंगल के रूप में खेला जाता है।

8. ख्याल-

- इस लोक नाट्य में संगीत पर अधिक बल दिया जाता है।
- पौराणिक एवं ऐतिहासिक कहानियों का प्रयोग किया जाता है।
- सूत्रधार - हलकारा

(A) कुचामनी ख्याल-

- प्रवर्तक - लच्छीराम जी
- मुख्य कलाकार - उगमराज • लोकगीतों की प्रधानता

THE NOTES HUB Notes are Available All Competition Books 7300134518, 7610010054

CamScanner

- मुख्य कहानियाँ — (i) मीरा मंगल
  (ii) राव रिड़मल
  (iii) गोगाजी चौहान
  (iv) चाँद नीलगिरी
- इसमें महिला पात्रों की भूमिका पुरुषों द्वारा निभाई जाती है।
- यह ओपेरा संगीत की तरह होती है।
- भाषा→ सरल व सुस्पष्ट

* वाद्ययंत्र- ढोल, शहनाई, सारंगी

- विषय→ सामाजिक व्यंग्य पर आधारित

(B) जयपुरी ख्याल-

- गुणीजनखाना के कलाकार इसके प्रमुख खिलाड़ी थे।
- महिलाएँ भाग ले सकती है।
- इसमें नए प्रयोग किए जा सकते है।

* मुख्य कहानियाँ - जोगी-जोगन
  कान गुजर

- प्रमुख नाटककार- हमीदुल्ला (ख्याल - भारमली)

(C) शेखावाटी ख्याल-

- मुख्य केन्द्र - चिड़ावा (झुंझुनूं)
- वाद्ययंत्र - हारमोनियम, सारंगी, शहनाई, बाँसुरी
- विशेषताएँ- • प्रभावी पद संचालन
  • सम्प्रेषणीय शैली में भाषा व मुद्रा में गीत गायन
- कलाकार - नानूराम जी (प्रवर्तक), दूलिया राणा

(D) अलीबख्शी ख्याल-

- मुंडावर (अलवर) के नवाब अलीबक्श ने इसे प्रारम्भ किया था।
- इन्हें 'अलवर का रसखान' कहा जाता है।

THE NOTES HUB * Notes are Available * All Competition Books * 7300134518, 7610010054

- यह अहीरवाटी बोली (राठी) में प्रस्तुत की जाती है।
  - 'कोठपुतली से बहरोड़' के मध्य बोली जाती है।

E. ढप्पाली ख्याल-
- वाद्य यंत्र - डफ
- क्षेत्र - लक्ष्मणगढ़ (अलवर), भरतपुर

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books 7300134518, 7610010054

F. हेला ख्याल-
- लालसोट (दौसा)
- स. माधोपुर

वाद्ययंत्र → नगाड़ा, नौबत

- मुख्य प्रेरक- शायर हेला
- ऊँचे स्वरों की प्रधानता रहती है।

G. कन्हैया ख्याल-

क्षेत्र -
- भरतपुर
- करौली
- स. माधोपुर

- मीणा जनजाति द्वारा प्रारम्भ किया गया।
- सूत्रधार- 'मेड़िया'
- विषय वस्तु (कथा) - 'कहन'

(H.) भेंट के दंगल-

क्षेत्र - बाड़ी, बसेड़ी] - धौलपुर

(I) तुर्रा कलंगी -

प्रवर्तक - तुकनगीर (हिन्दू)
शाह अली (मुस्लिम)

- चंदेरी के राजा ने इन्हें तुर्रा व कलंगी भेंट किए थे।
- यह शिव-पार्वती की कहानी पर आधारित है।
- इस लोक नाट्य में दो पक्ष होते है।

A.) शिव पक्ष — भगवा झण्डा → तुर्रा
B.) पार्वती पक्ष — हरा झण्डा → कलंगी

- एकमात्र लोक नाट्य जिसमें मंच की सजावट की जाती है।
- इसमें दर्शक भाग ले सकते हैं।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- संवाद - बोल
- संवाद प्रतिस्पर्धा - गम्मत / दंगल
- वाद्य यंत्र - चंग
- सहेडू सिंह, हम्मीद बेग > चित्तौड़ में लोकप्रिय किया

↓
मुख्य केन्द्र → घोसुंडा, निम्बाहेड़ा

- कलाकार - चेतराम, जयदयाल, ताराचन्द, ओंकारसिंह, नानालाल

9. रामलीला -

- प्रवर्तक - तुलसीदास जी
- मुख्य केन्द्र - (i) बिसाऊ - मूक रामलीला (झुंझुनूं)

(ii) अटरू (बारां) – धनुष को जनता द्वारा तोड़ा जाता है।

(iii) भरतपुर- वेंकटेश (रामलीला)

(iv) पाटून्दा (कोटा)

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

10. रासलीला-

- प्रवर्तक- वल्लभाचार्य
- प्रमुख केन्द्र – कामां (डीग)
  - फुलेरा, हरदोणा, गुडा, आसलपुर } जयपुर
- प्रमुख कलाकार- शिवलाल कुमावत

11. सनकादिक लीला-

केन्द्र – चित्तौड़

- घोसुंडा → आश्विन
- बस्सी → कार्तिक

12. गौर लीला-

- आबू क्षेत्र में गरासिया जनजाति द्वारा गणगौर पर यह किया जाता है।
- महिलाएँ शिव एवं पार्वती की मूर्तियाँ सिर पर रखकर नाचती है।
- पुरुषों द्वारा तलवारबाजी की जाती है।
- मुख्य कहानियाँ – भख्योर की गणगौर (वैशाख शुक्ल चतुर्दशी)

राजस्थान की जनजातियाँ

1. कंजर जनजाति-

- कंजर शब्द की उत्पत्ति "काननचार" से हुई है जिसका अर्थ होता है – 'जंगल में रहने वाला'।
- मुख्य क्षेत्र - हाड़ौती
- मुख्य व्यवसाय- अपराध करना
- अपराध करने से पहले देवताओं से आशीवार्द लेते है, जिसे 'पाती माँगना' कहा जाता है।
- मुख्य देवी - देवता - (i) जोगणिया माता (चित्तौड़) - "कंजरों की कुलदेवी"
  (ii) चौथ माता (स० माधोपुर)
  (iii) रक्तदंजी माता (बूँदी)
  (iv) हनुमान जी
- उनके घरों में पीछे की तरफ खिड़की रखना अनिवार्य होता है।
- 'हाकम राजा का प्याला' पीने के बाद कंजर झूठ नहीं बोलते है।
- मरणासन्न व्यक्ति के मुँह में शराब की बूंदे डाली जाती है।
- शव को दफनाया जाता है।
- मोर का माँस खाते हैं।
- मुखिया - पटेल
- नृत्य- चकरी, धाकड़

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

२. कथौड़ी–

- खैर के पेड़ से कत्था प्राप्त करते है अतः उन्हें कथौड़ी कहा जाता है।
- यह मूल रूप से महाराष्ट्र की जनजाति है।
- मुख्य क्षेत्र - उदयपुर
- यह एक संकटग्रस्त जनजाति (40 परिवार) है।
- मनरेगा में राजस्थान सरकार उन्हें 100 दिन का अतिरिक्त रोजगार देती है।
- देवता -
  - डूंगर देव
  - गामदेव
  - वाघ देव
  - भारी माता
  - कंसारी माता
- कथौड़ी दूध नहीं पीते, कथौड़ी शराब पीते है।
- महिलाएँ भी पुरुषों के साथ शराब पीती हैं।
- बन्दर का माँस खाते है।
- महिलाएँ गहने नहीं पहनती है।
- महिलाएँ गोदना गुदवाती है।
- मुखिया – नायक
- झोपड़ी – खोलरा

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010064

3. डामोर–

- केन्द्र- सिमलवाड़ा पंचायत समिति (डूंगरपुर)
  - इसे डामरिया क्षेत्र कहा जाता है।
- यह जनजाति वनों पर आश्रित नहीं है, बल्कि कृषि एवं पशुपालन करते है।
- पुरुष भी महिलाओं की तरह गहने पहनते हैं।
- इनकी भाषा पर गुजराती प्रभाव है।
- मुखिया - मुखी
- पुरुष बहुविवाह करते है। (Polygamy)
- वधू मूल्य – दापा
- मेले - छैला बावजी का मेला - पंचमहल (गुजरात)
  ग्यारस की रेवड़ी का मेला - डूंगरपुर
- होली का प्रोग्राम - चाड़िया

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

(4.) साँसी–

- मुख्य केन्द्र- भरतपुर
- इस जनजाति में मुख्यतः 2 वर्ग होते हैं- बीजा, माला।
- भाखर बावजी की कसम लेकर ये कभी झूठ नहीं बोलते है।
  - भाखर बावजी की कसम लेते समय एक हाथ में कुल्हाड़ी और दूसरे हाथ में पीपल का पत्ता रखते है।

- सिकोंदरी माता की पूजा करते है।
- इस जनजाति में विधवा विवाह नहीं किया जाता है।
- कूकड़ी- विवाह के दौरान महिलाओं से संबंधित रस्म।

5. सहरिया-

- सहरिया शब्द 'सहर' (फारसी) से बना है जिसका अर्थ होता है- 'जंगल'
- मुख्य केन्द्र- किशनगंज, शाहबाद } बारां

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- यह एकमात्र आदिम जनजाति है।
- मनरेगा में राजस्थान सरकार इन्हें 100 दिन का अतिरिक्त रोजगार प्रदान करती है।
- इस जनजाति में त्रिस्तरीय पंचायत व्यवस्था होती है।
  - (i) पंचताई (5)
  - (ii) एकदसिया (11)
  - (iii) चौरासी- वाल्मिकी मंदिर - सीताबाड़ी (बारां)
- वाल्मिकी जी को ये अपना आदिपुरुष मानते हैं।
- कुलदेवी- कोड़िया माता
- तेजाजी तथा भैरुजी की भी पूजा करते है।
- वर्षा ऋतु में 'आल्हा' व 'लहंगी' नामक गीत गाते है।
- दीपावली पर 'हीड़' गाते है।

- होली पर लठ्ठमार होली खेलते है।
- मकर संक्राति पर लकड़ी के डंडो से लेंगी खेलते हैं।
- गाँव - सहरोल
- बस्ती - सहराना
- सामुदायिक केन्द्र - बंगला / हथाई / ढालिया
- पेड़ों पर घर - कोरुआ / टोपा / गोपना
- मुखिया - कोतवाल
- इस जनजाति में दहेज प्रथा का अस्तित्व नहीं है।
- इस जनजाति में युगल नृत्य नहीं किया जाता है।
- श्राद्ध नहीं किया जाता है।
- महिलाएँ गोदना गुदवाती है लेकिन पुरुष नहीं करवा सकते।
- महिलाएँ घर में घूँघट रखती है परन्तु घर से बाहर नहीं रखती।
- इस जनजाति में 'धारी संस्कार' किया जाता है।

6. <u>भील जनजाति-</u>

- राजस्थान की सबसे प्राचीनतम जनजाति है।
- राजस्थान की दूसरी सबसे बड़ी जनजाति है। (Ist - मीणा)
- जेम्स टॉड भील शब्द की उत्पति <u>'वील'</u> से मानते है, जिसका अर्थ होता है 'कमान'।
- जेम्स टॉड ने इन्हें वन पुत्र कहा है।

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

- विलियम रौने की पुस्तक "Wild Tribes of India" के अनुसार मारवाड़ भीलों का उत्पति स्थल था।
- घर → टापरा / कू
- मोहल्ला → फला
- गाँव → पाल , गाँव का मुखिया → पालवी / तदवी

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- पूरी भील जनजाति का मुखिया → गमेती
- कुलदेवता → टोटम
- पेड़-पौधों को टोटम का प्रतीक माना जाता है।
- पेड़-पौधों को साक्षी मानकर भील जनजाति शादी कर लेती है, उसे हाथी-वेण्डो विवाह कहते है।
- ये बाल-विवाह नहीं करते।
- भराडी माता को विवाह की देवी मानते है।
- केसरीया नाथ जी की केसर पीकर भील झूठ नहीं बोलते।
- भील → महुआ से बनी शराब पीते है।
- भील लोग अपने मृत पूर्वजों की आत्मा के अस्तित्व में विश्वास करते है। इस कारण मृत व्यक्ति की पत्थर की मूर्ति बनाकर उसकी प्रतिष्ठा की जाती है, जिसे 'चीरा-बावसी' कहते है।
- फाइरे- फाइरे इनका रणघोष है।
- किसी घुड़सवार सैनिक को मारने वाला भील 'पाखरिया' कहलाता है।
- वधू मूल्य - दापा

- तलाक लेना- छेड़ा फाड़ना
- यदि कोई महिला अपने पति को छोड़कर किसी अन्य पुरुष के साथ रहने लग जाती है तो वह दूसरा पुरुष पहले पति को 'झगड़ा राशि' देता है।
- भील जनजाति द्वारा किया जाने वाला सामूहिक कार्य- हेलमो
- भील जनजाति स्थानांतरित खेती करते है → वालरा/झूमिंग

वालरा/झूमिंग — २ प्रकार:
- चिमाता (पहाड़ी भाग)
- दजिया (समतल भाग)

- भीलों के मेले— बेणेश्वर मेला (डूँगरपुर)
  घोटिया अम्बा (बाँसवाड़ा)

भीलों की वेशभूषा

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- ढेपाड़ा/ ढेपाड़ा — तंग धोती
- खोयतू – सामान्य धोती
- पिरिया – दुल्हन की पीली साड़ी
- सिन्दूरी – लाल साड़ी
- परिजनी – पीतल के कड़े → महिलाएँ → पैरों में
- कछावू – भील महिलाओं द्वारा कमर पर पहने जाने वाला वस्त्र।

- भीलों की सर्वाधिक जनसंख्या उदयपुर में है।

CamScanner

7. मीणा जनजाति-

- राजस्थान की सर्वाधिक जनसंख्या वाली जनजाति।
- सर्वाधिक शिक्षित जनजाति
- मुख्यतः दो वर्गों में विभाजित
  - जमींदार मीणा
  - चौकीदार मीणा

- मोरनी मॉडना - विवाह की एक रस्म।
- मुख्य देवता - भूरिया बाबा।

8. गरासिया जनजाति-

- गरासिया शब्द 'ग्रास' से बना है।
  - ग्रास → अर्थ– टुकड़ा
- संयुक्त परिवार व्यवस्था नहीं होती।
- मुख्य केन्द्र - पिण्डवाड़ा- आबू (सिरोही)
  पाली -बाली
  उदयपुर- गोगुन्दा

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- नक्की झील को अपना पवित्र स्थान मानते है।
- नक्की झील में अस्थियों का विसर्जन करते है।
- इस जनजाति में त्रिस्तरीय पंचायत व्यवस्था होती है।
  1. मोटी न्यात - बाबोर हाईया
  2. नेनकी न्यात- माडेरिया
  3. निचली न्यात- गरासिया
- मुखिया - सहलोत / पालवी

- बरामदा – ओसरा
- सहकारी समिति – हेलरु
- अनाज भण्डारण – सोहरी
- स्मारक – हूरे
- मेले –
  1. कोटेश्वर मेला – अम्बाजी, गुजरात
  2. चित्रविचित्र मेला – देलवाड़ा (सिरोही)
  3. गणगौर मेला – सियावा (सिरोही)
     - इस मेले में प्रेम विवाह अधिक होते है।

विवाह के प्रकार –

1. मोरबंधिया – सामान्य विवाह
2. ताणना
3. पहरावणा (कपड़े देकर वधु लाना)
4. मेलबरे (बिना कुछ दिए ससुराल भेजना)
5. खेवणों (माता भी साथ जाती है)
6. सेवा विवाह

→ गरासिया पुरुष, भील महिला → भील – गरासिया

→ भील पुरुष, गरासिया महिला → गमेती - गरासिया

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

राजस्थान का साहित्य एवं बोलियाँ

- आर्य भाषा
  - वैदिक संस्कृति
    - पालि (बोलने की भाषा)
      - शौरसेनी प्राकृत (GJ, RJ, UP)
        - गुर्जरी अपभ्रंश
          - राजस्थानी
            - डिंगल (पश्चिमी)
            - पिंगल (पूर्वी)
          - गुजराती
        - शौरसेनी अपभ्रंश
      - महाराष्ट्री प्राकृत
      - मागधी प्राकृत (BH)
    - संस्कृत (लिखने की भाषा)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

राजस्थानी भाषा का विकास

- 11 से 13 वीं शताब्दी → गुर्जरी अपभ्रंश
- 13 वीं से 16 वीं शताब्दी तक → राजस्थानी (जैन साहित्य)
- 16 वीं से 18वीं शताब्दी तक → मध्यकालीन राजस्थानी (चारण साहित्य)
- 18 वीं............................ आधुनिक राजस्थानी
- राजस्थानी भाषा के विकास के सम्बन्ध में तीन अपभ्रंशों का उल्लेख है – शौरसेनी, नागर, एवं मरुगुर्जरी

- सर्वाधिक उचित मत- मरुगुर्जरी अपभ्रंश
- क्योंकि मरुगुर्जरी अपभ्रंश से ही मरुभाषा (राजस्थानी) व गुर्जरी से गुजराती भाषा का विकास हुआ है।

डिंगल एवं पिंगल साहित्य में अन्तर

डिंगल	पिंगल
* पश्चिमी राजस्थान का साहित्यिक रूप।	* पूर्वी राजस्थान का साहित्यिक रूप।
* गुजराती प्रभाव	* ब्रज प्रभाव
* वीररस की प्रधानता (श्रृंगार रस का भी प्रयोग)	* श्रृंगार रस की प्रधानता (वीर रस का भी प्रयोग)
* चारण साहित्य ↓ "वेलि किसण रुकमणी री" (पृथ्वीराज राठौड़)	* भाट साहित्य ↓ पृथ्वी राज रासौ

NOTE- (8 वीं शताब्दी)

778 ई. में उद्योतन सूरि ने जालौर में वत्सराज प्रतिहार के शासनकाल में 'कुवलयमाला' नामक पुस्तक लिखी।

जिसमें 18 भाषाओं का वर्णन है।
↳ 'मरुभाषा' शामिल

16 वीं शताब्दी → अबुल फजल
↓
'आइने अकबरी'
(मारवाड़ी भाषा का वर्णन)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

- 1912 AD – जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन
  - पुस्तक – "Linguistic Survey of India"
    - ↓ राजस्थानी भाषा का उल्लेख
- राजस्थानी 'मुडिया लिपि' (महाजनी लिपि) में लिखी जाती है।
  - "टोडरमल द्वारा प्रचार-प्रसार"
- L.P टेस्सीटोरी → राजस्थानी की व्याकरण (ग्रामर) लिखी।
- सीताराम लालस → राजस्थानी शब्दकोश लिखा।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

राजस्थानी के साहित्य का वर्गीकरण

1. प्राचीन साहित्य- (1050 से 1450 ई.) / 'वीरगाथा काल'

- उस समय भारत विदेशी आक्रमणों का सामना कर रहा था. अतः साहित्य में वीरनायकों का गौरवगान किया गया था।

अतः इसे "वीर गाथा काल" भी कहते है। (Heroic era)

e.g.→ श्रीधर व्यास → रणमल छन्द

- ईडर के रणमल राठौड़ ने पाटन के जफर खाँ को हराया।
- जैन रचनाकारों की रचनाएँ भी उल्लिखित है

(2) पुर्वमध्यकालीन साहित्य- (1450 से 1650 ई.)/ 'भक्तिकाल'

- विदेशी आक्रमणकारी हमारे मन्दिरों को तोड़ रहे थे तथा बड़े पैमाने पर धर्म परिवर्तन करवाया जा रहा था, अतः निराश लोग सन्तों की शरण में पहुँचे।
- अतः उस काल मे 'सन्त साहित्य' अधिक लिखा गया।
- 'भक्तिकाल' की रचनाओं में दादू पंथी, रामस्नेही, अलखिया, जसनाथी सम्प्रदाय के साथ मीरा बाई के पद-
  - माधोदास - रामरासो (साहित्य)
  - सायांजी झूला- नाग दमण, रुक्मणी हरण
  - ईसरदास - देवीयाण एवं हरिरस
  - पृथ्वीराज राठौड़ - 'वेलि क्रिसण रुक्मणि री'

आदि प्रमुख रचनाएँ शामिल है।

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

(3) उत्तरमध्यकालीन साहित्य- (1650 से 1850 ई.)
(श्रृंगार, रीति, नीतिपरक काल)

- इस समय राजस्थान में अपेक्षाकृत शांत वातावरण था अतः साहित्य में नैतिक मूल्यों को बढ़ावा दिया गया था, तथा प्रेमकहानियाँ अधिक लिखी गई।
- अतः इसे "नीति तथा श्रृंगार का काल" कहा जाता है।
- मंछाराम → रघुनाथ रूपक
- कृपाराम खिड़िया → राजिया रा दूहा (नैतिक मूल्य)
  - ↳ सीकर के राजा लक्ष्मणसिंह के दरबारी विद्वान
- संबोधन परक नीति कारकों में राजिया रा सोरठा, चकरिया रा सोरठा, भेरिया रा सोरठा, मोतिया रा सोरठा आदि प्रमुख रचनाएँ है।

राजिया = नौकर

(4.) आधुनिक साहित्य (1850 ई से अब तक)
↳ (विविध विषयों एवं विधाओं से युक्त)

- हमारे विद्वानों ने अंग्रेज विरोधी साहित्य की रचना की, अतः इसे 'राष्ट्रवादी काल' कहा जाता है।
  - बांकीदास जी – आयो अंगरेज मुल्क रे ऊपर
  - सूर्यमल्ल मीसण – · वंश भास्कर (बून्दी का इतिहास)
    - · वीर सतसई
    - · राम रंजाट
    - · बलवन्त विलास
    - · छन्द मयूख
    - · सती रासो
- बून्दी के राजा रामसिंह के दरबारी विद्वान।
- इनके पत्रों से 1857 ई. की क्रान्ति की जानकारी मिलती है।

THE NOTES HUB * Notes are Available * All Competition Books * 7300134518, 7610010054

* केशोरायपाटन का प्राचीन नाम → जम्बुखरण
- 'वंशभास्कर' में बून्दी का इतिहास है।
  ↓
  पूर्ण- मुरारिदान
- शंकरदान सामौर - देस दर्पण
  अंग्रेजा री नीत
  सगती सुजस
  भागीरथी महिमा
- किसी भी राजा के दरबार में नही थे।
  अतः 'लोककवि' के रूप में प्रसिद्ध।
- वज्रसेन सूरि → भरतेश्वर बाहुबलि घोर
  [राजस्थान की प्राचीनतम पुस्तक]
- शालिभद्र सूरि → भरतेश्वर बाहुबलि रास (1184 ई.)
  → सन् बताने वाली राजस्थान की पहली पुस्तक
- जिनराज सूरि → शालिभद्र रास
  कवयन्ना रास
  गजसुकमाल रास
- विनयचन्द्र सूरि → नेमिनाथ चतुष्पादिका
- पल्हण → नेमिनाथ बारहमासा
- सुमति गणि → नेमिनाथ रास

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

आधुनिक साहित्य

- **मुरारिदान**- (सूर्यमल्ल मीसण के adoped son)
  - (i) वंश भास्कर को Complete किया।
  - (ii) वंश समुच्चय
  - (iii) डिंगल कोष

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- नाथूसिंह महवारिया- वीरसतसई
- शिवचन्द्र भरतिया - (आधुनिक राजस्थानी के 1st साहित्यकार)
  - (i) कनक सुन्दर → आधुनिक राजस्थान का 1st उपन्यास
  - (ii) केसर विलास → आधुनिक राजस्थान का 1st नाटक
  - (iii) विश्रान्त प्रवास → आधुनिक राजस्थान की 1st कहानी
  - (iv) बुढापा की सगाई
  - (v) फाटका जंजाल

" राजस्थान का भारतेन्दु हरिश्चन्द्र - 'भारत दुर्दशा'

- गुलाबचन्द नागौरी → 1. सगाई जंजाल
  2. मारवाड़ी मौसर

- उमरदान → 1. अमल रा औगण
  (पहले रामस्नेही साधु)
  ↓
  पाखण्डी साधुओं की आलोचना की।
  2. दारू रा दोस
  3. तमाखू री ताड़ना
  4. भजन री महिमा

CamScanner

1. छप्पनिया अकाल का वर्णन किया है।

सवाई सिंह- 1. सैतान सुजस ← (1962) indo-china
2. पीरू प्रकास ← (1948)- indo-pak
3. गाँधी गाथा
4. चितौड़ रा जौकर

पीरू सिंह- 1948, भारत-पाकिस्तान → परमवीर सम्मान

सैतान सिंह- 1962, भारत-चीन

• "रेजांगला की लड़ाई/युद्ध" 120 सैनिक v/s 1300 सैनिक

नारायण सिंह भाटी →
1. मीरा
2. दुर्गादास
3. परमवीर (शैतानसिंह) पर
4. ओल्यू (मिलने का भाव)
5. बरसां रा डिगोडा डूंगर लांघिया (ऊँचा)

जहूर खाँ मेहर →
1. राजस्थानी संस्कृति रा चितराम
2. अर्जुन आली आँख
3. घर मंजला घर कोसां - गाड़िया लौहारों पर

चन्द्रसिंह बिरकाली → (हनुमानगढ़)
1. बादली
2. लू
3. साँझ
4. बालासाद
5. कहमुकरणी

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

मेघराज मुकुल →
1. सैनाणी
2. चँवरी (पाबूजी पर)
3. कोडमदे
4. उमंग

THE NOTES HUB Notes are Available All Competition Books 7300134518, 7610010054

मणिमधुकर →
1. पगफेरो**
2. सोजती गेट
3. आलीजां घरा आज्यो
4. सफेद मेमने
5. पत्तो की बिरादरी

रेवन्तदान चारण →
1. बरखा बीनणी
2. नेहरू ने ओलमो

↳ सामन्ती व्यवस्था की आलोचना की।

अर्जुन देव चारण →
1. रिन्दरोही***
2. बोल म्हारी मछली कितो पाणी

हिंगलाज दान →
(राष्ट्रवादी चेतना का संचार किया)

कविता →
1. आखेट अपजस
2. मेहाई महिमा
3. दुर्गा बहतरी (72 दोहे)

करणीदान →
1. आदमी रा सींग
2. बड़ी बहन जी
3. मंत्रीजी री बेटी

हरिराम मीणा→

1. धूणी तपे तीर (गोविन्दगिरि पर आधा)
2. हाँ, चाँद मेरा है।

श्री लाल नथमल जोशी→

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

1. एक बींदणी दो बींद
2. परण्योडी कुँवारी
3. आभै पटकी (विधवा विवाह)
4. धोरां रो धोरी
5. सबड़का

आईदान सिंह भाटी→

- आँख हिये रा हरियल सुपना
- हँसतौडे होठां रो सांच

चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'→ "उसने कहा था"

↓

- यह कहानी 'सरस्वती' नामक पत्रिका में प्रकाशित।
- यह पत्रिका महावीर प्रसाद द्विवेदी प्रकाशित करते थे।

** सत्यप्रकाश जोशी→

1. राधा- 1960 ई. में रचना

- सामान्यतः राजस्थानी साहित्य में युद्धों का गौरवगान, परन्तु इस पुस्तक में राधा जी भगवान श्री कृष्ण से महाभारत युद्ध को रोकने की प्रार्थना करते है।

CamScanner

→ 'युद्ध विरोधी कविता'

3) बोल भारमली → महिला सशक्तिकरण का संदेश दिया।

सत्यनारायण सोनी (परलिका गाँव, हनुमानगढ़) – 'धान कथावा'

रामस्वरूप किसान (परलिका गाँव, हनुमानगढ़) –
- हाड़ा थोड़ी
- तीखी धार
- बारीक बात

हम्मीदुल्ला → ख्याल भारमली
दरिन्दे

मुरारिदास → जसवन्त जसो भूषण
- ↳ जोधपुर महाराजा जसवन्त सिंह-II के दरबारी विद्वान
- ↳ अलंकारों की अधिकता

लता शर्मा → 'सही नाप के जूते'

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

मन्नू भंडारी →
- महाभोज
- आपका बन्टी
- खोटे सिक्के

अन्नाराम सुदामा → मैकती काया, मुलकती धरती

पारस अरोड़ा → जुड़ाव

गोवर्धन सिंह शेखावत → गाँव

तेजसिंह जोधा → कठै की ढेगी है

हरीश भद्राणी → बाथा में भूगोल, बोले सरणाटो

चन्द्रप्रकाश देवल →
- पागी जो पैरों को पहचानता है।
- मारग
- कांवड़

यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र –
1. हूं गौरी किण पीव री
2. खम्मा अन्नदाता
3. जनाना ड्योढी
4. हजार घोड़ों का सवार
5. जोग - संजोग
6. समन्दर अर थार
7. चांदा सेठाणी
8. तास रो घर
9. मिट्टी का कलंक
10. एक और मुख्यमंत्री

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

इन्होंने राजस्थान के सामन्ती जीवन का वर्णन किया है।

कन्हैयालाल सेठिया –

↓

पुरस्कार

↓

i) पद्मश्री

ii) राजस्थान रत्न

- धरती धोरा री
- पाथल और पीथल
- मिंझर
- कूं कूं
- निर्ग्रन्थ
- लीलटांस
- मायड़ रो हेलो (मातृभाषा की पुकार)

लक्ष्मी कुमारी चुंडावत –

↓

पुरस्कार
- i) पद्मश्री
- ii) राजस्थान रत्न

1. के रे चकवा बात
2. अमोलक बातां

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

3. मांझल रात (ढलती रात)

4. गिर ऊँचा - ऊँचा गढ़ा

5. हिन्दूकुश के उस पार (रूस)

रूसी कहानियों का राजस्थानी में अनुवाद ← 6. गजबण

7. हूंकारो दो सा

- राजस्थान विधानसभा की सदस्य (देवगढ़, राजसमन्द)
- राजस्थान प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष
- राज्यसभा सदस्य

फ्रांसीस टेफ्ट ने इनकी जीवनी लिखी-

"from Parda to people"

विजयदान देथा → बोरूंदा (जोधपुर)

विजयदान देथा → बिज्जी

1. बातां री फुलवारी (14 भाग)
2. दुविधा (फिल्म)
3. चरणदास चोर (इस पर नाटक खेले जा चुके है)
4. चौधराइन की चतुराई
5. ललवन्ती
6. अन्तराल
7. सपनप्रिया
8. तीडो राव
9. मा रो बदलो
10. अलेखू हिटलर
11. बापू के तीन हत्यारे

पुरस्कार
i) पद्मश्री
ii) राजस्थान रत्न

रूपायन संस्थान की स्थापना (कोमल कोठारी के साथ मिलकर) → बोरूंदा (जोधपुर)

- **शंकरदान सामौर-** देस दर्पण
  अंग्रेजा री नीत
  सगती सुजस
  भागीरथ महिमा
- किसी भी राजा के दरबार में नहीं थे
  अतः लोककवि के रूप में प्रसिद्ध।

- वज्रसेन सूरि— भारतेश्वर बाहुबली घोर
  राजस्थान की प्राचीनतम BOOK

  आदिनाथ / ऋषभदेव
  बाहुबली भरत

- शालिभद्र सूरि → भारतेश्वर बाहुबलि रास (1184 ई.)
  ↳ सन् बताने वाली राजस्थान की प्राचीन पुस्तक।

- जिनराज सूरि - शालिभद्र रास
  कयवन्ना रास
  गजसुकमाल रास
- विनयचन्द्र सूरि - नेमिनाथ चतुष्पादिका
- सुमति गणि - नेमिनाथ रास
- पल्हण - नेमिनाथ बारहमासा
- हरिभद्र सूरि- समराइच्च कहानी
- माणिक्य सुन्दर सूरि - पृथ्वीराजवाग विलास
  मलय सुन्दरी कथा।
- जल्ह - बुद्धिरासौ
- कुशलधीर- लीलावती रासौ

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

MAHECHA PUBLICATION

- नल्लसिंह – विजयपाल रासौ
  ↓
  बयाना के विजयपाल जादौन की कहानी।
- डूंगरजी - शत्रुसाल रासौ
  बून्दी के शत्रुसाल की जानकारी
- जीव धर - अमररासौ / अमरसार

THE NOTES HUB * Notes are Available * All Competition Books * 7300134518, 7610010054 *

- महाराणा प्रताप & महाराणा अमरसिंह की जानकारी।
- दलपत विजय - खुमाण रासौ
  ↓
  बापा रावल से राजसिंह की जानकारी।
- दयाल → राणारासौ
  ↓
  बापा रावल से जयसिंह तक की जानकारी।
- सीताराम रतनू - जवानरासौ
  मेवाड़ महाराणा जवानसिंह की जानकारी।
- नरोत्तम — मानचरित्र रासौ
  ↳ आमेर के मानसिंह की जानकारी।
- नियामत खाँ / कवि जान – कायम रासौ
  फतेहपुर के कायमखानी वंश की जानकारी।
- कुंभकरण सांदू – रतनरासौ
  रतलाम के रतनसिंह राठौड़ की जानकारी।
  धरमत के युद्ध में लड़ता हुआ मारा गया।

CamScanner

- जग्गा खिड़िया → वचनिका राठौड़ रतनसिंह महेसदासोत री
  रतलाम के रतनसिंह राठौड़ की जानकारी।
  - वचनिका – गद्य + पद्य
    अपभ्रंश मिश्रित राजस्थानी का प्रयोग
- शिवदास गाड़ण – अचलदास खींची री वचनिका
  गागरोन के अचलदास खींची की जानकारी
- केशवदास गाड़ण – 1. गजगुणरूपक
  ↳ जोधपुर के गजसिंह की जानकारी

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

  2. अमरसिंह राठौड़ की जानकारी
  ↳ नागौर के अमरसिंह राठौड़ की जानकारी।
  3. विवेक वार्ता → उपनिषदों पर टीका।
- बादर ढाढी → वीरमायण

मारवाड़ के मल्लीनाथ जी —बेटा→ जगमाल
↓
भाई
वीरमदेव —बेटा→ गोगादेव (मल्लीनाथ जी) की जानकारी

- बख्तावर जी – केहर प्रकास
  ↳ मेवाड़ महाराणा स्वरूपसिंह का दरबारी विद्वान।
- बख्तराम शाह → बुद्धिविलास
  ↳ जयपुर स्थापना की जीवंत जानकारी।

- हरिनाभ – केसरीसिंह समर
  ↳ खण्डेला (सीकर) के केसरीसिंह की जानकारी।
- जोगीदास – हरिपिंगल प्रबन्ध
  ↳ प्रतापगढ़ के हरिसिंह की जानकारी।
- मेरुतुंग – प्रबन्ध चिन्तामणी
  ↳ पृथ्वीराज चौहान की जानकारी
- हेमचन्द्र – महावीर चरित्र
  ↳ गुजरात के कुमारपाल चालुक्य की जानकारी
- सूदन – सुजानचरित्र
  ↳ भरतपुर के सूरजमल की जानकारी
- जोरावरसिंह – वैद्यक सार
  ↳ पूजा पद्धति
  (बीकानेर के राजा)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- महाराज कुमार शेरसिंह – रामकृष्ण जस
  ↳ मारवाड़ महाराजा विजयसिंह का पुत्र।
- महाराणा अरिसिंह – रसिक चमन
  छत्रकुंवरि – प्रेम विनोद
  किशनगढ़ महाराजा सावन्तसिंह की पौत्री
- मुरलीधर – प्रिया विनोद, अश्वमेध यज्ञ
  ↳ कोठारिया के उदयभान का दरबारी विद्वान।

CamScanner

- समयासुन्दर - राजस्थानी रामायण
- मेहाजी गोदारा- राजस्थानी रामायण (तुलसीदास से 5 साल पहले)
  - ↳ बिश्नोई समाज के प्रमुख सन्त
- सुरजनदास पूनिया - कथउषापुराण
  - ↳ अनिरुद्ध भगवान कृष्ण के पौत्र थे।
- दुरसा आढ़ा - 1. विरुद्ध छहतरी (महाराणा प्रताप की 76 उपाधियाँ)
  - ↓ 'किसना जी आँख'
  - 2. किरतार बावनी
  - 3. वीरमदेव सोलंकी रा दूहा
- साईदास - समंत सार
- कृष्णभट्ट - ईश्वरी विलास महाकाव्य
  - ↳ जयपुर के ईश्वरीसिंह की जानकारी
- मुंशी भुसावन लाल - अमीरनामा
  - ↳ टोंक के अमीर खाँ पिण्डारी की जानकारी
- करम जी सांखला - किसन जी री वेलि
- असाईत → हंसावली (विरह गीत)
- अमरनाथ जोगी - नलालैंग
- कल्लोल - ढोला-मारू रा दूहा (मारू → पूगल की राजकुमारी)
- कुशललाभ - ढोला-मारू री चौपाई
- खुशालचन्द - ढोला-मारू री वात

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

राजस्थानी कला एवं साहित्य से संबंधित संस्थाएँ

- राजस्थान साहित्य अकादमी, 1958 उदयपुर

  पुरस्कार = मीरां
  पत्रिका = मधुमति

- राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी

  बीकानेर (1983 ई.)
  पुरस्कार - सूर्यमल्ल मीसण
  पत्रिका - जागती जोत

- राजस्थानी सिंधि भाषा अकादमी = जयपुर

  पत्रिका - रिहाण

- राजस्थान ब्रज भाषा अकादमी – जयपुर ⟶ पत्रिका- ब्रज शत दल
- राजस्थान उर्दू भाषा अकादमी – जयपुर
- राजस्थानी पंजाबी भाषा अकादमी - श्री गंगानगर
- राजस्थान संगीत नाटक अकादमी – जोधपुर
- राजस्थान संगीत नाटक संस्थान - जयपुर
- राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान – जोधपुर
- भवानी नाट्यशाला - 1921 ई. (झालावाड़)
- राजस्थान राज्य अभिलेखागार - बीकानेर
- नगर श्री शोध संस्थान - चुरू
- हिन्दी भाषा प्रचार समिति - श्री डूँगरगढ़, बीकानेर
- मौलाना अबुल कलाम आजाद अरबी-फारसी संस्थान - टोंक

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

राजस्थान की बोलियाँ

मारवाड़ी	ढूँढाड़ी	मालवी	वागड़ी	मेवाती	अहीरवाटी	जगरौती
मेवाड़ी	हाड़ौती	नीमाड़ी				धावड़ी
खेराड़ी	नागरचोल	रांगड़ी				
गौड़वाड़ी	राजावाटी	सोंधवाड़ी				
देवड़ावाटी	काठेड़ी					
थली	चौरासी					
बागड़ी	तोरावाटी					
शेखावाटी						
धाटी / धाटकी						

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

मारवाड़ी

- जोधपुर ग्रामीण, जोधपुर, नागौर, पाली, फलौदी, डीडवाना-कुचामन

साहित्य- 1. ढोला-मारू रा दूहा
2. राजिया रा दूहा
3. वेलि किसण रूकमणी री
4. मीराबाई की पुस्तकें

मेवाड़ी-

- मारवाड़ी की उपबोली
- मेवाड़ क्षेत्र में ⟶ चित्तौड़गढ़, उदयपुर, राजसमंद, भीलवाड़ा, सलुम्बर

साहित्य - (i) कुंभा के नाटक
(ii) लक्ष्मी कुमारी चूंडावत की पुस्तक
(iii) चतुरसिंह की पुस्तकें - • चतुर चिन्तामणि
• अलख पचीसी
• अनुभव प्रकाश

खैराड़ी-

- मारवाड़ी की उपबोली
- क्षेत्र- शाहपुरा + बून्दी
- मेवाड़ी, ढूंढाड़ी, हाड़ौती का प्रभाव

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

गौड़वाड़ी

- मारवाड़ी की उपबोली
- क्षेत्र- पाली, जालौर, सांचौर
- साहित्य - बीसलदेव रासौ

देवड़ावाटी -

- मारवाड़ी की उपबोली
- क्षेत्र- सिरोही

थली-

- मारवाड़ी की उपबोली
- क्षेत्र- बीकानेर, जैसलमेर

बागड़ी-

- मारवाड़ी की उपबोली
- क्षेत्र- ढूँढाड़ी का प्रभाव (सीकर, चुरू, झुन्झुनूं)

घाटी- (घाट का इलाका)

- मारवाड़ी की उपबोली
- क्षेत्र - बाड़मेर, बालोतरा

शेखावाटी- मारवाड़ी की उपबोली

- क्षेत्र- ढूँढाड़ी का प्रभाव (सीकर, चुरू, झुन्झुनूं)

किशनगढ़।

ढूँढाड़ी

क्षेत्र- दूदू, जयपुर के उत्तरी भाग को छोड़कर, टोंक, लावा ठिकाना, अजमेर, ब्यावर, केकड़ी।

साहित्य- दादू सम्प्रदाय की रचनाएँ
ईसाई मिशनरियों ने ढूँढाड़ी में बाइबिल का अनुवाद

- सवाई प्रतापसिंह के शासनकाल में गुमानीराम कायस्थ
  ↓
  ढूँढाड़ी अनुवाद ⟵ "आइन-ए-अकबरी"

1. हाड़ौती-

- ढूँढाड़ी की उपबोली
- क्षेत्र- कोटा, बूँदी, बारां, झालावाड़
- साहित्य- सूर्यमल्ल मीसण की पुस्तकें (बूँदी)

2. नागरचोल-

- ढूँढाड़ी की उपबोली
- क्षेत्र- टोंक, सवाई माधोपुर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300734518, 7610010054

3. राजावाटी-

- ढूँढाड़ी की उपबोली
- जयपुर का पूर्वी भाग (जयपुर ग्रामीण)

CamScanner

4. काठेड़ी-
- ढूँढाड़ी की उपबोली
- जयपुर ग्रामीण का दक्षिणी भाग

5. चौरासी-
- ढूँढाड़ी की उपबोली
- शाहपुरा (जयपुर) & टोंक

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

6. तोरावाटी-
(अर्जुनायन जनपद में)
ढूँढाड़ी की उपबोली
नीम का थाना में

मालवी

M.P (मालवा में)
- मारवाड़ी व मेवाड़ी का प्रभाव

1. नीमाड़ी-
- माल्वी की उपबोली
- क्षेत्र- मालवा का नीमाड़ क्षेत्र
- इसे दक्षिणी राजस्थानी भी कहते है।

2. रांगड़ी-
- मालवी की उपबोली
- मालवा के राजपूतों की बोली

CamScanner

3. सोंधवाड़ी -
- मालवी की उपबोली
- क्षेत्र- झालावाड़.

वागड़ी

- क्षेत्र- डूँगरपुर, बांसवाड़ा
- साहित्य - संत मावजी की रचनाएँ
- ग्रियर्सन ने इस क्षेत्र को 'भीली' कहा था।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

मेवाती

- अलवर, भरतपुर का मेव बाहुल्य क्षेत्र
- साहित्य- चरणदासी & लालदासी सम्प्रदाय की रचनाएँ
- बृजभाषा का प्रभाव

अहीरवाटी

- कोटपूतली से बहरोड़ तक
- साहित्य-
  - अलीबख्शी ख्याल
  - हम्मीर रासौ (जोधराज)
  - भीमविलास (शंकरराज)

धावड़ी

क्षेत्र- उदयपुर

जगरौती

क्षेत्र- करौली

- ग्रियर्सन ने राजस्थानी को 5 भागों में बाँटा था।
  - (i) पश्चिमी राजस्थानी
  - (ii) उत्तरी - पूर्वी राजस्थानी
  - (iii) मध्यपूर्वी राजस्थानी
  - (iv) दक्षिणी पूर्वी राजस्थानी
  - (v) दक्षिणी राजस्थानी

स्थापत्य कला

किलों के प्रकार-

1. गिरि/ पर्वतीय दुर्ग
2. औदक/ जल दुर्ग
3. वन दुर्ग
4. एरण (जंगल, खराब रास्ता) दुर्ग
5. धान्वन दुर्ग (मरुस्थल में)
6. पारिख (खाई) दुर्ग
7. पारिघ (परकोटा) दुर्ग
8. सैन्य (सेना रहती हो) दुर्ग
9. सहाय दुर्ग

THE NOTES HUB Notes are Available All Competition Books 7300134518, 7610010054

- 2013 में राजस्थान के 6 पर्वतीय किले UNESCO की विश्वविरासत सूची में शामिल किए गए थे।

(i) गागरोन (iv) रणथम्भौर
(ii) चित्तौड़गढ़ (vi) आमेर
(iii) कुम्भलगढ़ (vii) जैसलमेर

1. गागरोन-

- डोड (परमार) राजाओं ने इस किले का निर्माण करवाया था, अत: इसे 'डोडगढ़/ डोंडगढ़' कहा जाता है।

- अन्य नाम- धूलरगढ़
- कालीसिंध & आहू नदियों के संगम पर स्थित।
- बिना नींव के निर्मित
- देवनसिंह खींची ने बीजलदेव डोड को हराया था तथा इस किले पर अधिकार कर लिया था। (12वीं शताब्दी)

जैत्रसिंह-

- अलाउद्दीन खिलजी के हमले को विफल किया।
- सन्त हमीदुद्दीन (मीठे शाह) गागरोन आए थे।

प्रतापसिंह-

- फिरोज तुगलक को हराया।
- कालान्तर में सन्त बन गए थे। (सन्त पीपा)
- अपने छोटे भाई अचलदास को राजा बना दिया।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

अचलदास-

- 1423 ई. में मालवा के होशंगशाह ने गागरोन पर आक्रमण किया।
- इस समय गागरोन का पहला साका हुआ।

रानियाँ - लाला मेवाड़ी, उमादे साँखली

1437 ई. → अचलदास का पुत्र पाल्हणसी इस किले पर पुनः अधिकार कर लेता है।

- अकबर ने बीकानेर के 'पृथ्वीराज राठौड़' को यह किला जागीर में दिया था।

CamScanner

पाल्हणसी-

- मालवा के महमूद खिलजी-I ने गागरोन पर आक्रमण किया। (1444ई.)
- इस समय गागरोन का 2nd साका हुआ।
- महमूद खिलजी-I ने गागरोन का नाम बदलकर 'मुस्तफाबाद' कर दिया।

Buildings→

1. सन्त हमीदुद्दीन की दरगाह
2. बुलन्द दरवाजा → निर्माण- औरंगजेब ने
3. कोटा की टकसाल (Mint)- गुमानशाही
4. मधुसूदन मन्दिर → निर्माण- दुर्जनशाल ने (कोटा)
5. जालिमकोट → जालिमसिंह झाला ने इस परकोटे का निर्माण करवाया।
6. जौहरकुण्ड
7. अन्धेरी बावडी
8. गीध कराई- राजनीतिक कैदियों को मृत्युदण्ड दिया जाता था।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

2. चित्तौड़गढ़:-

- "किलों का सिरमौर"
- "राजस्थान का गौरव" (सूर्यमल्ल मीसण की कविताओं में)
- गम्भीरी व बेड़च नदियों के किनारे
- मेसा पठार पर स्थित है।

- मछली की आकृति में निर्मित
- धान्वन दुर्ग को छोड़कर अन्य सभी विशेषताएँ है।
- राजस्थान का सबसे बड़ा आवासीय किला।
- वीरविनोद (श्यामलदास) के अनुसार चित्रांगद मौर्य ने इस किले का निर्माण करवाया।
- अतः चित्रकूट किला।
- यहाँ तीन साके हुए।

रतनसिंह व पद्मिनी के महल बने हुए है

Buildings-

1. नवलखा भंडार
2. तुलजा भवानी मन्दिर

} निर्माण- बनवीर द्वारा

3. मीरा मन्दिर (कुम्भश्याम मन्दिर)
4. लाखोटा बारी (AK ने 1 लाख ₹ देकर खुलवाया)
5. अद्भुत (ऋषभदेव) मन्दिर
6. सतबीस देवरी - 27 जैन मन्दिर
7. चित्रांग तालाब (चित्रांगद मौर्य ने)
8. भीमलत तालाब (भीम के पैर से निर्मित)
9. कालिका मंदिर, समिद्धेश्वर मंदिर
10. शृंगार चंवरी

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

3. **कुंभलगढ़** – (वर्तमान- राजसमंद)

- मौर्य राजा सम्प्रति द्वारा निर्माण। (अशोक का पोता)
- कालान्तर में कुम्भा ने पुनर्निर्माण करवाया।

- जेम्स टॉड ने इसकी तुलना 'एट्रुस्कन' किले से की है।
- लम्बाई- 36 Km
- मेवाड़ का संकटमोचक एवं मेवाड़ - मारवाड़ का सीमा प्रहरी भी कहा जाता है।
- किले में सबसे ऊपरी स्थान, कटारगढ़ है जो कुंभा का निजी आवास था, जिसे मेवाड़ की आँख कहते है।
- चौड़ाई- इस पर 4 घोड़े एक साथ दौड़ सकते है।
- ऊँचाई- 'अबुल फजल' के अनुसार

  "यदि कोई व्यक्ति इस किले को नीचे से ऊपर की ओर देखता है तो उसकी पगड़ी गिर जाती है।

Buildings-

1. मामादेव कुण्ड
2. झाली रानी का मालिया
3. बादल महल

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

4. रणथम्भौर- (सवाई माधोपुर)

- 8 वीं शताब्दी में चौहान राजाओं द्वारा निर्माण।
- एरण दुर्ग का उदाहरण।
- अण्डाकार आकृति की पहाड़ी पर स्थित।
- अबुल फजल के अनुसार " अन्य सभी किले नंगे है जबकि यह किला बख्तरबंद है "।

Buildings-

1. जोगी महल
2. सुणरी महल
3. जौरां भौरां (अनाज का भंडार)
4. पीर सदरुद्दीन की दरगाह
5. अकबर की टकसाल
6. नवलखा दरवाजा
7. गुप्तगंगा
8. हम्मीर कचहरी
9. बत्तीस खंभों की छतरी

5. **आमेर-**

- अन्य नाम- काकिलगढ़
- निर्माण - मानसिंह ने
- मुगल प्रभाव

- यह किला महल की तरह बना हुआ है।
- भूलभुलैया बनी हुई है (लखनऊ की तरह)
- **Building-**
  1. दीवान-ए-आम
  2. दीवान-ए-खास
  3. खास महल (शीशमहल)
  4. सुखमन्दिर महल
  5. यशमन्दिर
  6. सुहागमन्दिर
  7. दौलाराम का बाग
  8. केसर क्यारी बगीचा
  9. मावठा जलाशय
     - इसी के किनारे दादूदयाल ने रज्जब जी को उपदेश दिया।
  10. जगत शिरोमणि मंदिर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

6. जैसलमेर–
- 1155 ई. जैसलभाटी द्वारा निर्माण।
- सोनारगढ़/स्वर्णगिरि– पीले पत्थरों से निर्मित।
- राजस्थान का 2nd बड़ा आवासीय किला।
- लकड़ी की छत बनी है।
- किले के निर्माण में चूने (Lime) का प्रयोग नहीं।
- त्रिकूट पहाड़ी पर त्रिभुजाकार आकृति में निर्मित।

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- जवाहर लाल नेहरू → यह किला दुनिया का 8 वाँ आश्चर्य है।
- अबुल फजल → केवल पत्थर की टांगे ही जैसलमेर तक पहुँच सकती है।
- 2009 ई. → भारत सरकार द्वारा इस किले पर डाक टिकट जारी किया गया।
- 'सत्यजीत रे' ने इस किले पर डॉक्युमेंट्री बनाई थी।

Buildings-
1. ऋषभदेव मन्दिर
2. पार्श्वनाथ मन्दिर
3. संभवनाथ
4. कमरकोट – घाघरानुमा परकोटा
5. 99 बुर्जे – राजस्थान में सर्वाधिक
6. जैसलु कुँआ
7. जिनभद्रसूरि भंडार
↓
प्राचीन हस्तलिखित Books रखती है।

- दूर से देखने पर 'अंगड़ाई लेते' शरीर के समान दिखाई देता है।

मूलराज–
अलाउद्दीन खिलजी ने जैसलमेर पर आक्रमण किया था।
– जैसलमेर का 1st साका।

- दुर्जनसाल– फिरोजशाह तुगलक ने जैसलमेर पर आक्रमण किया।
- इस समय जैसलमेर का 2nd साका हुआ।

(3) लूणकरण-

- कंधार के अमीर अली ने जैसलमेर पर आक्रमण किया।
- उस समय केसरिया तो किया गया था लेकिन जौहर नहीं किया जा सका अतः इसे अर्द्धसाका कहा जाता है।

7. मेहरानगढ़-

- सूर्यवंशी राठौड़ो द्वारा निर्माण, अतः "मिहिरानगढ़"
- किले के निर्माण के दौरान 'राजाराम' नामक व्यक्ति की बलि दी गई।
- 'चिड़ियाटूंक पहाड़ी' पर स्थित
- मोर की आकृति के कारण- 'मयूरध्वजगढ़'
- अन्य नाम- गढ़ चिंतामणि
- रुडयार्ड किपलिंग-"यह किला देवताओं व परियों द्वारा बनाया गया है।"

Buildings-

1. चोखेलाव महल - मालदेव द्वारा
2. तलहटी महल - सूरसिंह द्वारा
3. फूलमहल - अभयसिंह
4. शृंगार चौकी - जहाँ राजाओं का राजतिलक किया जाता था।
5. आनन्द घन मन्दिर
6. मुरली मनोहर मन्दिर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

7. कीरतसिंह सोढा की छतरी

8. घना भींवा (मामा-भान्जा) की छतरी

9. भूरे खाँ की मजार

10. चामुण्डा माता मन्दिर

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

इस किले में कई तोपे रखी है-

- शम्भू बाण
- गजनी
- भवानी
- गजक
- किलकिला
- गुब्बारा
- नुसरत

- राणीसर तालाब (जोधा की रानी जसमादे ने बनवाया था।

8. जूनागढ़ – (बीकानेर)

अन्य नाम →
- रातीघाटी किला
- जमीन का जेवर
- गढ़ चिन्तामणि

- पारिख दुर्ग का उदाहरण।
- चतुर्भुजाकार आकृति में निर्मित।
- 37 बुर्जें
- अनूपमहल - राजतिलक
- गंगाविलास महल - दीवारों पर भगवान कृष्ण के चित्र।
- हर मन्दिर
  ↓
  Lift लगी हुई है।

9. <u>भटनेर</u>- (हनुमानगढ़)

- निर्माण - भूपत भाटी
- उत्तरी सीमा का प्रहरी, इसलिए भाटी शासकों को 'उत्तरभड़ किवाड़' कहा जाता है।
- सर्वाधिक विदेशी आक्रमणों का सामना करना पड़ा।
- तैमुर ने इसे 'भारत का सबसे मजबूत/सुरक्षित किला बताया।
- इस आक्रमण के दौरान हिन्दू महिलाओं के साथ मुस्लिम महिलाओं ने भी जौहर किया।
- रावकेलण भाटी इस समय यहां का राजा था।
- इस किले का परकोटा कच्ची ईंटों का बना हुआ है।

<u>Buildings</u>- (i) 52 बुर्जें

(ii) भद्रकालीमाता मन्दिर

(iii) शेरखाँ की कब्र (बलबन का भाई)

(iv) दलपतसिंह व उसकी 6 रानियों (सती) के स्मारक

→ बीकानेर के राजा रायसिंह ने अपने विद्रोही बेटे दलपतसिंह को यहाँ गिरफ्तार किया।

10. <u>तारागढ़</u>- (अजमेर)

- निर्माण- अजयराज
- हरविलास शारदा - "राजस्थान का प्राचीनतम दुर्ग"
- बिठली पहाड़ी पर स्थित — 'गढ़बीठली'

THE NOTES HUB All Notes are Available All Competition Books 7300134518, 7610010054

- पहले इसका नाम 'अजयमेरुगढ़' था फिर उड़णा राजकुमार पृथ्वीराज (मेवाड़) ने अपनी रानी तारा के नाम पर 'तारागढ़' नाम रखा।
- शाहजहाँ के शासनकाल में विठ्ठलदास गौड़ इस किले का किलेदार था।
- बिशप हैबर → "राजस्थान का जिब्राल्टर"
- सर्वाधिक आक्रमणों का सामना किया।
- विलियम बैंटिक ने इस किले को 'सेनटोरियम' (Senatorium) (आरोग्य सदन) में बदल दिया था।
- दाराशिकोह ने इस किले में शरण ली थी।

Buildings-

- 14 बुर्जे
- मीरान साहब की दरगाह – अजमेर के पहले गवर्नर जनरल
- घोड़े की मज़ार और हिंजड़े की मज़ार
- शीशा खान गुफा (सुरंग)
- इब्राहिम खाँ का झालरा
- नाना साहब का झालरा

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

11. अकबर का किला-

- निर्माण - 1570 ई., अजमेर (अकबर ने) → "अकबर का दौलतखाना"
- हल्दीघाटी युद्ध की अंतिम योजना इसी किले में बनवाई।
- 10 Jan 1616 ई.- जहाँगीर ने 'सर टॉमस रो' से यहाँ मुलाकात की।

- अंग्रेज इस किले में हथियार रखते थे- 'मैगजीन फोर्ट'
- अंग्रेजों ने यहाँ 'राजपूताना म्यूजियम' बनाया।

12. जयगढ़ फोर्ट-

- मानसिंह ने इस किले का निर्माण शुरु करवाया।
- मिर्जा राजा जयसिंह ने इस किले का निर्माण पूरा करवाया व इसका नाम जयगढ़ रखा।
- वर्तमान स्वरूप- सवाई जयसिंह द्वारा
- आमेर के कच्छवाहा शासकों का संकट मोचक किला।

Buildings-
1. दिया बुर्ज
2. सुरंगे (रहस्यमयी किला)
3. पानी के टांके → खजाना
4. शस्त्रागार
5. जयबाण तोप
6. विजयगढ़ी → राजनीतिक कैदियों हेतु जेल
   → सवाई जयसिंह ने अपने छोटे भाई विजयसिंह को यहाँ रखा।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- आपातकाल के दौरान इस किले की खुदाई करवायी गयी। (इंदिरा गाँधी)

13. जालौर का किला-

- गौरीशंकर हीराचन्द ओझा के अनुसार परमारों द्वारा निर्माण
- दशरथ शर्मा के अनुसार प्रतिहार राजा नागभट्ट-I ने निर्माण।

- सुकड़ी नदी के किनारे स्थित
- हसननिजामी – " कोई भी आक्रमणकारी इस किले का दरवाजा नहीं खोल सका था "
- कान्हड़देव सोनगरा ने पुनर्निर्माण करवाया।
- सुवर्णगिरि का किला (सोनगिरि पहाड़ी पर) कहा जाता है।

Buildings-

1. अलाई मस्जिद / तोपखाना मस्जिद ↳ मूलरूप से संस्कृत पाठशाला	4. जैन कीर्तिस्तम्भ
2. खिलजी मीनार	5. जोगमाया मन्दिर
3. मलिकशाह की दरगाह	6. चामुण्डा माता मन्दिर
	7. वीरमदेव की चौकी

THE NOTES HUB * Notes are Available * All Competition Books * 7300134518, 7610010054

14. नाहरगढ़.-

- निर्माण- सवाई जयसिंह द्वारा (मराठा आक्रमणों से बचाव हेतु)
- पहले इसका नाम 'सुदर्शनगढ़' था, परन्तु बाद में नाहरसिंह भोमियाजी के नाम पर इसका नाम 'नाहरगढ़' रखा गया।
- 'जयपुर का पहरेदार' किला।
- जगतसिंह की प्रेमिका 'रसकपूर' को इस किले में गिरफ्तार करके रखा गया था।
- माधोसिंह-II ने अपनी 9 दासियों के लिए यहाँ 9 एक जैसे महल बनवाए।

15. सिवाणा दुर्ग-

- बालोतरा जिले में स्थित है।
- निर्माण - वीर नारायण पंवार
- कूमट झाड़ी की अधिकता के कारण - कूमट दुर्ग
- मारवाड़ के राठौड़ों की शरणस्थली।
- जालौर की कुंजी
- भाण्डेलाव तालाब - भायल सैनिक ने 1308 ई. में इसे दूषित कर दिया था।

16. अचलगढ़ का किला- सिरोही

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- परमार शासकों द्वारा निर्माण।
- पुनर्निर्माण - कुंभा
- 'अचलेश्वर महादेव' मन्दिर स्थित है, जहाँ शिवजी के अंगूठे की पूजा की जाती है। इस मन्दिर के सामने 'दुरसा आढ़ा' की मूर्ति लगी हुई है।
- यहाँ कुंभा व उसके पुत्र उदा की मूर्ति लगी हुई है, जिन्हें 'सावन - भादो की मूर्तियाँ' कहा जाता है।
- ओखा रानी का महल
- मंदाकिनी कुण्ड
- भँवराथल - महमूद बेगड़ा (गुजरात) की सेना पर भँवरा मक्खियों ने आक्रमण कर दिया था।

17. भरतपुर का किला-

- महाराजा सूरजमल द्वारा निर्मित।
- उत्तरी गेट पर अष्टधातु दरवाजे लगे है।
- दूसरे अंग्रेज-मराठा युद्ध के दौरान मराठा सेनापति जसवन्तराव होल्कर को भरतपुर राजा रणजीतसिंह ने शरण दी थी।
- अंग्रेज सेनापति लॉर्डलेक इस किले को जीत नहीं पाया था, इसलिए इसे 'लोहागढ़' भी कहा जाता है।
- इस जीत की याद में रणजीतसिंह ने फतेह बुर्ज का निर्माण करवाया।

Buildings-

1. दादी माँ का महल
2. वजीर की कोठी
3. गंगा मन्दिर
4. लक्ष्मण मन्दिर
5. जामा मस्जिद
6. मोती महल
7. किशोरी महल
8. कोठी खास

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

बाणगंगा नदी ← मोती झील → रूपारेल नदी

- भरतपुर किले के चारों तरफ खाई बनी हुई है।
- मोतीझील का पानी "सुजानगंगा" नहर के माध्यम से इस खाई में डाला जाता है।

  - खाई = सुजानगंगा खाई

18. बयाना का किला- भरतपुर

- निर्माण - विजयपाल द्वारा (दमदमा पहाड़ी पर)

- अन्य नाम- विजयमंदिर गढ़, बाणासुर दुर्ग, बादशाह का किला।
- समुद्रगुप्त ने बयाना दुर्ग में विजयस्तम्भ का निर्माण करवाया।
  "राजस्थान का प्रथम विजयस्तम्भ"
- समुद्रगुप्त के सामन्त विष्णुवर्धन ने ऊषा लाट (भीम लाट) का निर्माण करवाया।
- विष्णुवर्धन की रानी चित्रलेखा ने ऊषा मंदिर बनवाया।
- ऊषा मन्दिर को मुबारक खिलजी ने 'ऊषा मस्जिद' में बदल दिया।
- अन्य इमारतें-
  1. अकबर की छतरी
  2. जहाँगीरी दरवाजा
  3. लोदी मीनार
  4. दाउद खाँ की मीनार
  5. सादुल्ला सराय

जहाँगीर का महल - पुष्कर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

13. बाला किला- अलवर

- निकुम्भ क्षत्रियों (चौहानों) द्वारा इसका निर्माण करवाया गया।
- काकिलदेव के पुत्र अलघुराय ने इसका पुनर्निर्माण करवाया।
- हसन खाँ मेवाती ने भी इसकी मरम्मत करवाई।
- निकुम्भ महल, जल महल
- जहाँगीर इस किले में कई दिन तक रुका था, इसलिए इसे 'सलीम महल' कहते है।

२०. कांकनवाड़ी किला- अलवर

- मिर्जा राजा जयसिंह द्वारा निर्मित।
- औरंगजेब ने अपने भाई दाराशिकोह को गिरफ्तार करके इसी किले में रखा था।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

२१. चौमू का किला- जयपुर

- निर्माण- ठाकुर कर्णसिंह द्वारा
- अन्यनाम- चौमुहागढ़, धाराधारागढ़, रघुनाथगढ़।
- हवा मन्दिर स्थित है।

२२. माधोराजपुरा का किला- जयपुर

- माधोसिंह (प्रथम) ने मराठों पर जीत के बाद इस किले का निर्माण करवाया।
- यहाँ का किलेदार भारतसिंह नरूका, टोंक नवाब अमीर खाँ पिण्डारी की बेगमों को बंधक बनाकर ले आया था

२३. माण्डलगढ़ का किला - भीलवाड़ा

- चानणा गुर्जर ने माण्डिया भील की याद में इस किले का निर्माण करवाया।
- हल्दीघाटी युद्ध में पूर्व मानसिंह इस किले में रुका था।
- यह मण्डल आकृति (गोलाकार) बना हुआ है।
- उण्डेश्वर महादेव का मन्दिर
- शीतला माता का मंदिर
- सागर- सागरी का जलाशय

CamScanner

- माण्डलगढ़ में सांगा की छतरी है।

24. शेरगढ़ का किला- धौलपुर

- इस कुषाणकालीन किले का निर्माण मालदेव नामक सामन्त ने करवाया।
- शेरशाह सूरि ने इसका नाम 'शेरगढ़' रखा।
- सैय्यद हुसैन की दरगाह।
- हुनहुंकार तोप
- धौलपुर के कमलबाग का वर्णन बाबर अपनी आत्मकथा में करता है।
- धौलपुर का निहाल टॉवर भारत का सबसे बड़ा घण्टाघर है।

THE NOTES HUB * Notes are Available * All Competition Books * 7300134518, 7610010054

25. शेरगढ़ का किला- बारां

- परवन नदी के किनारे
- कोषवर्द्धनगढ़ भी कहा जाता है।

26. शाहबाद का किला- बारां

- मुकुटमणि देव चौहान ने इसका निर्माण करवाया।
- अपने कालिंजर अभियान हेतु जाते समय शेरशाह सूरि ने इसका नाम 'सलिमाबाद' रख दिया था।
- बादल-महल
- नवलबान तोप रखी हुई है।

CamScanner

२७. कोटा का किला-

- जैत्रसिंह ने गुलाबमहल का निर्माण करवाया।
- कालान्तर में माधोसिंह ने यहीं पर कोटा के किले का निर्माण करवाया।
- जेम्स टॉड के अनुसार "आगरा किले के बाद कोटा किले का परकोटा सबसे बड़ा है"।

२८. भैंसरोडगढ़ का किला- चित्तौड़गढ़

- चम्बल एवं बामनी नदियों के किनारे बना हुआ है।
- राजस्थान का वैल्लोर

२९. नागौर का किला-

- चौहान राजा सोमेश्वर के सामन्त कैमास ने निर्माण करवाया था।
- इसमें दोहरा परकोटा बना हुआ है।

३०. कुचामन का किला- नागौर

जागीरी किलों का सिरमौर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300734518, 7610010064

३१. चुरु का किला-

- निर्माण- कुशालसिंह चुरु
- चाँदी के गोले दागने वाला किला।
- 1814 ई. में यहाँ का सामन्त स्योजीसिंह था, जिसने सूरतसिंह (बीकानेर) व अंग्रेजों के विरुद्ध चाँदी के गोले दागे थे।

CamScanner

३२. <u>फतेहपुर का किला</u>- सीकर

- 1453 ई. में फतेहखां कायमखानी ने इसका निर्माण करवाया।
- तेलिन का महल।
- पीर निजामुद्दीन की दरगाह
- सरस्वती पुस्तकालय (फतेहपुर)

NOTE- सरस्वती भंडार- उदयपुर

३३. <u>सज्जनगढ़ का किला</u> - उदयपुर

- निर्माण - सज्जनसिंह
- मेवाड़ का मुकुटमणि
- सज्जनगढ़ अभयारण्य में है।
- मानसून पैलेस भी कहा जाता है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

३४. <u>तिमनगढ़ का किला</u>- करौली (वर्तमान)

- ननद भौजाई का कुआँ स्थित है।

३५. <u>दौसा का किला</u>-

- देवगिरी पहाड़ी पर बना हुआ है।
- 'छाजले की आकृति' में।
- कच्छवाहा शासको की प्रारम्भिक राजधानी = दौसा

३६. <u>ऊँटाला का किला</u>- वल्लभनगर (उदयपुर)

- इस किले को लेकर चुण्डावतों व शक्तावतों के बीच हरावल प्रतियोगिता हुई थी।

37. मोहनगढ़ का किला-

- जैसलमेर
- भारत का अन्तिम किला
- 1945-46 में बनवाया।
- उस दौरान जैसलमेर के राजा 'जवाहर सिंह' थे।

38. तारागढ़ दुर्ग (बूँदी)-

- निर्माण- 1354 ई., बरसिंह द्वारा
- दूर से देखने पर झील में चमकते तारे के समान दिखाई देता है।
- रुडयार्ड किपलिंग के अनुसार' इस किले का निर्माण 'भूत-प्रेतों' द्वारा किया गया है।
- जेम्स टॉड के अनुसार 'बूंदी किले के महल राजस्थान के सर्वश्रेष्ठ महल है।
  ↓ ये महल अपने भित्ती चित्रों के लिए जाने जाते है।
- अन्य महल- सुख महल, छत्र महल, अनिरुद्ध महल, रानी जी की बाव

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

छतरियाँ या देवल

1. गैटोर-

- यहाँ जयपुर के कच्छवाहा शासकों की छतरियां बनी हुई है।
- इनमें ईश्वरीसिंह की छतरी नहीं है।
- ईश्वरीसिंह की छतरी जयनिवास बाग (ईसरलाट) में स्थित है।

2. आहड़ (उदयपुर)-

- मेवाड़ के शासकों की छतरियाँ बनाई गई है।
- सबसे पहली छतरी अमरसिंह-I की बनाई गई।
- इस स्थान को महासतियाँ भी कहा जाता है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

3. पंचकुण्ड (मण्डौर)→

- मारवाड़ के राजाओं की छतरी बनी हुई है।
- जसवन्त थड़ा- जोधपुर महाराजा जसवन्तसिंह-II की छतरी जो उसके बेटे सरदारसिंह ने 1899 ई. में बनवायी थी।
- इसे राजस्थान का ताजमहल कहते है।

4. कागा की छतरियाँ→

- यहाँ जोधपुर के सामन्तों की छतरियाँ है। इनमें राजसिंह कुम्पावत की छतरी सबसे प्रमुख है।
  (राजसिंह कुम्पावत ← जसवन्तसिंह-I के प्रधानमंत्री)

5. देवीकुण्ड (सागर)→ यहाँ बीकानेर के राजाओं की छतरियाँ है।

6. बड़ा बाग → जैसलमेर के राजाओं की छतरियाँ स्थित है।

7. क्षार बाग → कोटा के राजाओं की छतरियाँ। (छत्र विलास)

8. केसर विलास बाग → बूँदी

9. पालीवालों की छतरियाँ → जैसलमेर

10. नाथों की छतरी - जालौर (इन पर तोता बना हुआ है)

11. बन्जारों की छतरी → लालसोट (दौसा)

12. मिश्रजी की छतरी → नेहड़ा (अलवर)
↳ इन पर दशावतारों का चित्रण मिलता है।

13. गोपालपाल की छतरी → करौली

14. गंगाबाई की छतरी → गंगापुर सिटी (भीलवाड़ा)
↳ महादजी सिंधियाँ की पत्नी = गंगाबाई

15. चौरासी खम्भों की छतरी → बूँदी

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

राजस्थान के महल एवं हवेलियाँ

जैसलमेर-

(i) पटवों की हवेली - 5 हवेलियाँ
निर्माण - गुमानचन्द बाफना

(ii) सालिमसिंह की हवेली

(iii) नथमल की हवेली - 2 हवेलियाँ
हाथी एवं लालू नामक दो भाई इसके वास्तुकार थे।

(iv) सर्वोत्तम विलास पैलेस

(v) जवाहर विलास पैलेस

जोधपुर-

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

1. बड़े मियाँ की हवेली
2. राखी हवेली
3. पोकरण हवेली
4. अजीत भवन पैलेस (राजस्थान का पहला हेरिटेज होटल)
5. उम्मेदभवन पैलेस - छीतर पैलेस
   - विश्व का सबसे बड़ा आवासीय महल (Not किला)
   - अकाल राहत कार्यों में निर्मित
6. राईका बाग पैलेस-

निर्माण- जसवन्तसिंह-I की हाड़ी रानी जसवन्त दे द्वारा।

जसवन्तसिंह-II को दयानन्द सरस्वती ने इस महल में उपदेश दिए।

जसवन्तसिंह-II की प्रेमिका नन्हीजान ने दयानन्द सरस्वती को जहर दे दिया।

7. एक खम्भा महल - अजीतसिंह ने बनवाया।

8. बीजोलाई महल

9. फूलमहल - निर्माण - अभयसिंह द्वारा।
   - नक्कारी हेतु प्रसिद्ध।
   - जोधपुर किले में स्थित है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

कोटा–

1. हवामहल - रामसिंह-II द्वारा निर्माण।

2. जगमन्दिर - किशोर सागर तालाब के पास स्थित।

3. गुलाब महल

4. अभेड़ा महल

5. अबली मीणी का महल

बीकानेर-

लालगढ़ पैलेस
गजनेर पैलेस
बच्छावतों की हवेली
रामपुरिया हवेली
मूँधड़ा हवेली
मोहता हवेली

बीकानेर की हवेलियों में मुगल, यूरोपीय व किशनगढ़ शैली के चित्र अधिक दिखाई देते है।

ज्यामितीय अलंकरण व फूल पत्तियाँ अधिक बनाए जाते है।

डूँगरपुर-

1. जूना महल
2. एकखंभिया महल

THE NOTES HUB Notes are Available All Competition Books 7300134518, 7610010054

उदयपुर-

- कर्णविलास महल - कर्णसिंह द्वारा निर्मित।
- दिलखुश महल
- जगमन्दिर
- प्रीतम निवास- जगतसिंह-II द्वारा।
- बागोर हवेली-
  पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र का कार्यालय स्थित।
- पश्चिम राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा, दमन व दीव की सांस्कृतिक कलाओं को संरक्षण दिया जाता है।
- इस हवेली में विश्व की सबसे लम्बी पगड़ी रखी हुई है।

टोंक- 1. सुनहरी कोठी
2. मुबारक महल

जयपुर- 1. प्यारे मियाँ की हवेली
2. सलीम मंजिल हवेली
3. जलमहल

5. सामोद पैलेस

6. नायला फोर्ट - बिल क्लिंटन रुका था।

अलवर-

विनयविलास (सिटी पैलेस)

फूलबाग पैलेस

हवा बंगला (तिजारा, अलवर)

केसरोली पैलेस

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

शेखावाटी क्षेत्र-

भित्ती चित्रों हेतु प्रसिद्ध।

नवलगढ़ (झुंझुनूं) - रूपनिवास, पोद्दार, भगत एवं भगेरिया की हवेलियाँ।

बिसाऊ (झुंझुनूं) - नाथूराम पोददार की हवेली

सेठ जयदयाल केडिया की हवेली।

सीताराम सिंगतिया की हवेली।

मुकुन्दगढ़ (झुंझुनूं) -

सेठ राधाकृष्ण की हवेली

केसरदेव कनेड़िया

चिड़ावा (झुंझुनूं) - बागड़िया की हवेली

महनसर (झुंझुनूं) - • सोने चाँदी की हवेली

• तोलारामजी का कमरा

CamScanner

डूंडलोद (झुंझुनूं) - सेठ लालचन्द गोयनका की हवेली

झुंझुनूं -
- ईसरदास मोदी की हवेली
- टीबड़ेवाले की हवेली
- खेतड़ी महल (शेखावटी का हवामहल)

सीकर-
- गौरीलाल बियाणी की हवेली
- रामगढ़ (सीकर) – ताराचन्द रूइया की हवेली
- फतेहपुर (सीकर) – नन्दलाल देवड़ा की हवेली
- श्री माधोपुर – पंसारी की हवेली

चुरू-
1. चारचौक की हवेली
2. चेतराम की हवेली
3. मंत्रियों की हवेली
4. सुराणा हवेली
5. मालजी का कमरा

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

झालावाड़ - काष्ठप्रसाद - राजेन्द्रसिंह द्वारा निर्मित

डीग (भरतपुर) - राजेन्द्र सिंह द्वारा निर्मित
1. गोपाल महल
2. सावन भादो महल

CamScanner

मन्दिर स्थापत्य

- राजस्थान में सातवीं सदी से पूर्व के मन्दिर-
  1. गोल बौद्ध मंदिर - मौर्ययुगीन (बैराठ)
  2. नगरी का वैष्णव मन्दिर - चित्तौड़
- मंदिरो का विकासकाल सातवीं से दसवी सदी के मध्य रहा।
- राजस्थान में 8 वीं सदी से जिस क्षेत्रीय शैली का विकास हुआ, उसे गुर्जर प्रतिहार अथवा महामारु कहा गया।
- इस शैली के अंतर्गत प्रारंभिक निर्माण सांभर के चौहानों, प्रतिहारों (मण्डौर) व मौर्यो (चित्तौड़) ने करवाया।
- 8 वीं व 9 वीं सदी के सर्वाधिक महत्वपूर्ण मन्दिर—
  ओसियां, चित्तौडगढ़ व आभानेरी में स्थित है।

THE NOTES HUB ★ Notes are Available ★ All Competition Books ★ 7300134518, 7610010054

- 8 वीं से 12 वीं सदी में महत्वपूर्ण मन्दिर- सच्चियाय माता के मन्दिर के पास बने सूर्यमंदिर तथा नीचे मैदान में स्थित हरिहर एवं महावीर मन्दिर है।
- 9 वीं सदी में विकसित गुर्जर प्रतिहार शैली के महत्वपूर्ण मन्दिर आउवा (पाली) व खेड़ (बालोतरा) के क्रमशः कामेश्वर व रणछोड़जी का मन्दिर है।
- 10 वीं व 11 वीं सदी के आरम्भ में हमें गुर्जर प्रतिहार शैली का पूर्ण विकास व सौलंकी शैली का प्रारम्भ देखने को मिलता है।
- जैसे- कैकीनन्द या जसनगर = नील कण्ठेश्वर मन्दिर
  हर्षनाथ मंदिर = सीकर ←→ दोनों से गोल स्तम्भ प्राप्त
  पारानगर (सरिस्का) - नील कण्ठेश्वर मन्दिर

- गुर्जर प्रतिहार शैली का भव्य व अन्तिम मन्दिर

  किराडू का सोमेश्वर मन्दिर (आकर्षक शिखर)

- जालौर के गुर्जर प्रतिहारों तथा चौहानों, परमारों व गुहिलों ने भी उस क्रम को आगे बढ़ाते हुए मन्दिर शिल्प को समृद्ध बनाया,

- जैसे- 1. बाडोली का मन्दिर, चित्तौड़

  2. सास-बहू का मन्दिर, नागदा (उदयपुर)

  3. जगत अम्बिका मन्दिर, उदयपुर

- मन्दिर शिल्प हेतु राजस्थान में स्वर्णकाल 11वीं से 13वीं सदी के बीच रहा। उस समय विशाल अलंकृत मंदिर बने। जिन्हें सौलंकी अथवा मारुगुर्जर शैली के अन्तर्गत रखा जाता है।

- <u>जैसे-</u> 1. सच्चियाय माता मन्दिर (ओसियां, जोधपुर)

  2. समिधेश्वर मन्दिर (चित्तौड़ दुर्ग)

  ↳ यह मन्दिर ऊँची पीठिका पर स्थित है।

- <u>भूमिज शैली-</u>

  - इस शैली का सबसे पुराना मन्दिर।
  - सेवाडी का जैन मन्दिर (पाली)

- महानालेश्वर (1075 ई.) मन्दिर = मैनाल

- भण्डदेवरा मन्दिर, रामगढ़ (बारां)

- उण्डेश्वर मन्दिर (बिजौलिया)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010064

- 13 वीं सदी के बाद के मंदिरों में प्रमुख-
  - जगदीश मन्दिर (उदयपुर)
  - एकलिंगजी का मुख्य मन्दिर (नागदा)
  - केशोरायपाटन मन्दिर (बूँदी)
  - जगतशिरोमणि मन्दिर (आमेर)

- 16 वीं-17 वीं सदी के पश्चात् हवेली शैली के मन्दिर निर्माण अधिकाधिक होने लगे।

- जैन मंदिर- सर्वाधिक प्रसिद्ध = देलवाड़ा

  अन्य- • रणकपुर (पाली)
  • जैसलमेर
  • ओसियां (जोधपुर ग्रामीण)

- पाली जिले में - सेवाड़ी, घाणेराव, नाडोल-नारलाई
- सिरोही- वर्माण मंदिर
- झालावाड़- चाँदखेड़ी व झालरापटन
- बूंदी - केशोरायपाटन मन्दिर
- करौली- श्री महावीर जी का मन्दिर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

1. एकलिंग जी का मन्दिर-

- लकुलीश मंदिर - कैलाशपुरी (उदयपुर)
- आठवी सदी में बापा रावल द्वारा निर्मित।

- वर्तमान स्वरूप - महाराणा रायमल ने
- मन्दिर के मुख्य भाग में काले पत्थर की चतुर्मुखी प्रतिमा प्रतिष्ठापित है।
- एकलिंग जी को मेवाड़ घराने का कुलदेवता माना जाता है। मेवाड़ के शासक स्वयं को इनका दीवान मानते है।
- इस मन्दिर के अहाते में कुंभा द्वारा विष्णुमंदिर का निर्माण करवाया।

2. किराडू के मंदिर- बाड़मेर

THE NOTES HUB * Notes are Available * All Competition Books * 7300134518, 7610010054

- प्राचीन नाम- किराटकूप
- हाथमा गाँव (पहाड़ी पर), बाड़मेर
- 11 & 12 वीं सदी में बने।
- यहाँ पर 5 मंदिरों का समूह है, जिनमें वैष्णव व शैव मन्दिर है।
- सबसे सुंदर मन्दिर = सोमेश्वर मन्दिर
- किराडू को "राजस्थान का खजुराहो" कहा जाता है।

3. शिव मन्दिर- बाड़ौली (चित्तौड़)

- निर्माण- हूण शासक तोरमाण के पुत्र मिहिरकुल ने करवाया।
- पंचायतन शैली का मन्दिर।
- मुख्य मूर्तियाँ = शिव पार्वती व उनके सेवकों की।

4. जगतशिरोमणी मंदिर- आमेर, जयपुर

- इसका निर्माण कच्छवाहा मानसिंह की पत्नी कनकावती ने अपने पुत्र जगतसिंह की याद में करवाया।

- ऐसा माना जाता है कि इस मन्दिर में काले पत्थर की कृष्णमूर्ति वही है, जिसकी आराधना चित्तौड़गढ़ में मीरां करती थी। मानसिंह इसे चित्तौड़ से लेकर आया।

5. जैनमन्दिर- देलवाड़ा (आबू) सोलंकी (चालुक्य) शैली

- यहाँ दो प्रमुख मन्दिर है-

- प्रथम- प्रथम जैन तीर्थंकर ऋषभदेव का है। इसे 1031 ई. में गुजरात के चालुक्य राजा भीमदेव के मंत्री विमलशाह ने बनवाया।

- द्वितीय- २२ वें जैन तीर्थंकर नेमिनाथ का है। जिसका निर्माण वास्तुपाल और तेजपाल द्वारा 1230 ई. में करवाया गया। इस मंदिर को लुणवसहि भी कहा जाता है।

6. हर्षमाता मन्दिर- आभानेरी (दौसा)

- मूलतः भगवान विष्णु का मन्दिर।

- गुर्जर प्रतिहार कालीन

- 11 वीं शताब्दी में इसे महमूद गजनवी ने क्षतिग्रस्त कर दिया था।

7. शिव मन्दिर- भण्डदेवरा (बारां)

- "हाड़ौती का खजुराहो"

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- निर्माण - मेदवंशीय राजा मलय वर्मा ने 10 वीं सदी में।
- पंचायतन शैली में निर्मित।

8. जैनमंदिर (रणकपुर, पाली)

- प्रथम जैन तीर्थंकर आदिनाथ को समर्पित।
- महाराणा कुंभा के शासनकाल (1433-68 ई.) में इसका निर्माण धरणीशाह नामक जैन व्यापारी ने करवाया।
- यह मन्दिर 1444 खम्भों पर स्थित होने के कारण इसे खंभों का अजायबघर कहा जाता है।
- मूलगर्भगृह में चार मुख वाली मूर्ति प्रतिष्ठापित है, इसलिए इसे चौमुखा मन्दिर कहा जाता है।

9. सच्चियाय माता मन्दिर- ओसियां (जोधपुर)

- 8 वीं सदी में निर्मित वैष्णव व जैन मन्दिर समूह।
- गुर्जर प्रतिहार कला
- वैष्णव मन्दिर = हरिहर व सूर्य मन्दिर
- जैन मंदिर = महावीर मन्दिर
- शाक्त मंदिर (शैव) - पीपला माता व सच्चियाय माता।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

10. पीपलधर भीमशाह मंदिर - आबू
    - आदिनाथजी की 108 मन पीतल की मूर्ति है।

11. सास-बहू मन्दिर- नागदा (उदयपुर)
    - गुहिल शासक श्री धर द्वारा निर्माण करवाया गया।

- दो जुड़वा मन्दिर = सास-बहू नाम से प्रसिद्ध।
- यह मन्दिर भगवान विष्णु (सहस्त्रबाहू) को समर्पित है।

12. सूर्य मन्दिर- झालरापाटन (झालावाड़)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- सात सहेलियों का मन्दिर।
- 10 वीं शताब्दी में निर्मित।
- जेम्स टॉड ने इसे चारभुजा मन्दिर कहा।
- इसे पद्मनाभ मंदिर भी कहा जाता है।

13. अर्थुणा का मन्दिर- (बांसवाड़ा)
    - परमारों की राजधानी
    - वागड़ का खजुराहो (वागड़)
    - 11 वीं-12 वीं शताब्दी में निर्मित।
    - प्रमुख मन्दिर - हनुमानजी

14. ब्रह्मा जी का मन्दिर- (2nd मंदिर) आसोतरा (बालोतरा)
    - खेताराम जी महाराज ने बनवाया।

15. नौ ग्रहों का मन्दिर- किशनगढ़

16. सांवरिया जी का मन्दिर- चित्तौड़गढ़

मानव निर्मित जलीय संरचनाएँ

- राजस्थान के अधिकांशतः भू-भाग पर मरुस्थल (61%) है। राजस्थान में पेयजल की उचित उपलब्धता न होने के कारण इसकी तुल्यता स्वर्ण से भी अधिक हो गई।
- कहा जाता है कि "आवश्यकता अविष्कार की जननी है"।
- इस कथन के संबंध में यहाँ के लोगों ने इन समस्याओं से निजात हेतु जलसंग्रहण विभिन्न निम्नलिखित उपाय खोजे है-

- **तालाब-** वृहद् स्तर पर वर्षाजल का संग्रहण।
    1. गड़सीसर (जैसलमेर)
    2. बागोलिया (उदयपुर)
    3. कीर्तिमोरी (बूंदी)
    4. पार्वती (भरतपुर)
    5. राणीसर (जोधपुर)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

- **नाडी-**

    सामान्यतः पशुओं व दैनिक आवश्यकताओं हेतु उपयोगी जल संग्रहण किया जाता है।

    राव जोधा ने पहली नाडी का निर्माण करवाया था।

- **बावड़ी-** सीढ़ीनुमा कुआँ (Stepwell)

    शाही परिवारों द्वारा वर्षा जल संग्रहण हेतु किलों, महलों के पास निर्माण करवाया जाता था।

CamScanner

- बूंदी सुन्दर बावड़ियों हेतु प्रसिद्ध है। यहाँ लगभग 86 बावडियाँ स्थित है।

THE NOTES HUB Notes are Available All Competition Books 7300134518, 7610010054

प्रमुख बावड़ियाँ

1. रानीजी की बावड़ी - बूंदी
   - राजा अनिरुद्ध सिंह की नाथावत रानी द्वारा निर्मित
2. नौलखा बावड़ी - डूंगरपुर
   - राजा आसकरण की रानी प्रेमल देवी द्वारा निर्मित
3. त्रिमुखी बावड़ी - उदयपुर
   - राजा राजसिंह की रानी रामरसदे द्वारा निर्मित।
4. चाँद बावड़ी - आभानेरी (दौसा)

- **कुआँ-**

राजस्थान में उपयोगी जलस्त्रोत है।

इनका ऊपरी भाग संकरा होता है, जो जलहानि होने से संरक्षण प्रदान करती है।

इसकी छोटी संरचना जो लकड़ी के ढक्कन आदि से ढकी हुई होती है, कुंई / बेरी कहलाती है।

बांढीकुई (दौसा) बांदी अर्थात् दासी द्वारा बनवाये गए कुएँ के नाम पर रखा।

- **टोबा-** सामान्यतः एक वर्ष की अवधि हेतु जलसंग्रहण के लिए कठोर भूमि पर पत्थरों या इसके बिना बनाई गई संरचना होती है। पशुओं आदि हेतु होती है।

टोबा स्थानीय नाम है।

- टांका-
  - सामान्यतः घरेलू पेयजल उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु वर्षा जल का संग्रहण।
  - ऊपर से बन्द होता है। एक ढक्कन लगा होता है। जैसे- जयपुर के जयगढ़ में टांके।
  - वर्षा जल संग्रहण हेतु इसके परित आगोर / पायतन बनाया जाता है।

- खड़ीन / प्लाया-
  - जैसलमेर के पालीवाल ब्राह्मणों द्वारा 15 वीं सदी में आरम्भ की गई थी।
  - जो कि 5 से 7 Km मे फैली होती है।
  - शुष्क क्षेत्रों में यह सरचनाएँ पेयजलापूर्ति, सिंचाई आदि हेतु उपयोगी है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

राजस्थान के मेले, पर्व, उर्स एवं उत्सव

मेला- एक विशेष स्थान जहाँ जनसमूह द्वारा मिलकर उत्सवों का मनाना।

1. पुष्कर का मेला- अजमेर

- यहाँ ब्रह्मा जी का एकमात्र मन्दिर, जहाँ विधिवत पूजा होती है।
- इस मन्दिर के पीछे सावित्री माता का मन्दिर भी है।
- मेला- कार्तिक पूर्णिमा
- पुष्कर में कार्तिक माह में दीपदान किया जाता है। इसी समय पशुमेला लगता है।

2. जीणमाता का मेला- रेवासा (सीकर)

- यहाँ माता की अष्टभुजी प्रतिमा है। इसके सामने घी व तेल के दो दीपक अखण्ड रूप से कई वर्षों से प्रज्जवलित है।
- जीणमाता का भाई → हर्ष
  → मन्दिर का निर्माण मोहिल के हठड द्वारा।

3. खाटू श्याम जी का मेला- सीकर

- श्री कृष्ण का स्वरूप- श्री श्याम जी
- मेला- फाल्गुन के शुक्ल पक्ष की दशमी से द्वादशी तक।

4. भृतहरि का मेला- सरिस्का (अलवर) के पास

(A) वैशाख (B) भाद्रपद (लक्खी मेला)

- चर्म रोग ठीक हो जाता है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

5. श्री महावीर जी का मेला- चन्दन गाँव (करौली)

- गम्भीरी नदी के किनारे
- चैत्र शुक्ल त्रयोदशी से वैशाख कृष्णा प्रतिपदा तक (लक्खी मेला)
- बसवा के जैन अमरचन्द बिलाला ने महावीर जी की प्रतिमा को पहचाना व मंदिर हेतु सहयोग किया।
- मेले के शुभारंभ में रथयात्रा से पूर्व किरपादास चर्मकार के वशंजों का हाथ लगवाना परम्परा है।

6. डिग्गी कल्याणजी का मेला- मालपुरा (टोंक)

- भगवान विष्णु के स्वरुप
- मेला - श्रावण माह की अमावस्या

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

7. करणी माता का मेला- देशनोक (बीकानेर)

- बीकानेर के राठौड़ों की कुलदेवी / ईष्टदेवी
- चूहों का मन्दिर
- मेला- चैत्र व आश्विन नवरात्रा में

8. शीतला माता का मेला- चाकसू (जयपुर) → शील की डूंगरी

- मेला- चैत्र कृष्णा सप्तमी- अष्टमी
- शील की डूंगरी का निर्माण जयपुर के माधोसिंह ने करवाया।
- इसे 'बैलगाड़ी मेला' भी कहा जाता है।
- मातृरक्षिका देवी
- राजस्थान में सेढ़, सैढल के रूप में भी प्रसिद्ध।

CamScanner

- माता की रुष्टता के कारण चेचक का प्रकोप होता है।

9. कपिलमुनि का मेला- कोलायत (बीकानेर)

- मेला- कार्तिक पूर्णिमा
- कोलायत झील में स्नान करने के बाद भक्तों के पाप कट जाते है।

10. कैलादेवी का मेला- त्रिकुट पर्वत (करौली)

- मेला- चैत्र शुक्ल अष्टमी (लक्खी मेला)
- मन्दिर में दो मूर्तियाँ है- दाईं तरफ- लक्ष्मी जी
  बाईं तरफ- चामुण्डा माता
- कैलादेवी के मन्दिर के सामने हनुमानजी का मन्दिर भी है।
- भक्तों को लांगुरिया कहा जाता है एवं इनके द्वारा लांगुरिया गीत गाये जाते है।

11. बेणेश्वर का मेला- (नवाटापरा गाँव) डूंगरपुर

- आदिवासियों का कुंभ
- मेला- माघ पूर्णिमा (शिवरात्रि)
- शिवलिंग 5 स्थानों से खण्डित।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

12. खलकाणी माता-
गर्दभ मेला- भावगढ़ बंध्या (जयपुर)

- मेले में गधे व खच्चरों के अतिरिक्त अन्य जानवरों की उपस्थिति नहीं होती।
- मेले की शुरुआत कच्छवाहों के चन्दा मीणा को हराने की खुशी में 600 वर्ष पूर्व की गई थी।

CamScanner

13. पाण्डुपोल मेला - अलवर

- लेटे हुए हनुमानजी का मंदिर है।

14. घुश्मेश्वर महादेव मेला - शिवाड़ (स. माधोपुर)

- 12 वाँ ज्योतिर्लिंग → यह पानी के अन्दर स्थित है।

15. मचकुण्ड मेला - धौलपुर

- तीर्थों का भांजा
- पवित्र कुण्ड
- सल्फर व लाइम चट्टानों से चर्मरोग सही हो जाता है।

16. घोटिया अम्बा मेला - बांसवाड़ा

- चैत्र अमावस्या से शुक्ल पक्ष तृतीया तक।
- भीलों का दूसरा सबसे बड़ा मेला।
- अर्जुन के धनुष की पूजा की जाती है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

17. सीताबाड़ी - बारां

- सहरिया जनजाति का मेला।
- मेला - ज्येष्ठ अमावस्या
- लवकुश का जन्म स्थल।

18. अंजारी - सिरोही

- गरासियों का मेला
- मेला - 1. वैशाख पूर्णिमा
  2. भाद्रपद शुक्ल एकादशी

- मार्कण्डेश्वर (शिव) का मन्दिर।

19. त्रिनेत्र गणेश मेला-
- रणथम्भौर (स. माधोपुर)
- कलंक चतुर्थी (गणेश चतुर्थी) के दिन मेला लगता है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

20. केसरिया जी का मेला - धुलेव (उदयपुर)
- ऋषभदेव (आदिनाथ का मन्दिर)
- धुलेव भील ने इस मन्दिर की स्थापना की थी।

21. दशहरा का मेला - कोटा
राजस्थान का प्रसिद्ध रावण दहन किया जाता है।

22. मेंहदीपुर बालाजी - दौसा
23. माँगलियावास मेला - अजमेर
24. फूलडोल मेला - शाहपुरा (भीलवाड़ा)
25. भण्डदेवरा मेला - अटरू (बारां)
- हाड़ौती का मेला जो हाड़ौती का खजुराहो है।

26. फूलदेवरा (मामा-भांजा) - बारां

27. सोनीजी की नसिया - अजमेर

28. कजली तीज मेला - बूंदी

29. भोजनथाली मेला - कामां (भरतपुर)

30. शहीद मेला - खेजड़ली (जोधपुर)

31. सुईया कपालेश्वर शिव मेला - चौहटन (बाड़मेर)

32. मीरा महोत्सव - चित्तौड़

33. अन्नकूट मेला - नाथद्वारा (राजसमंद)

34. मातृकुण्डिया मेला - हर्षनाथपुरा (चित्तौड़)

35. गरुड़ मेला - बंशीपहाड़पुर (भरतपुर)

36. विरात्रा माता मेला - बाड़मेर

37. बसन्तपंचमी मेला - दौसा

38. सावित्री मेला - पुष्कर (अजमेर)

39. विभीषण मेला - कैथून (कोटा)

40. हेरम्ब गणपति मेला - बीकानेर (सिंह पर सवार)

41. ऊषा मन्दिर - बयाना (भरतपुर)

42. रोकड़िया गणेश मन्दिर - भीलवाड़ा

43. मनसा माता का मन्दिर - झुंझुनूं

44. पुंधी तीर्थ मेला - जैसलमेर

45. बाणगंगा मेला - विराटनगर (जयपुर)

46. आलमजी का मेला - धोरीमन्ना (बाड़मेर)

47. खोड़ा गणेश - अजमेर

48. तुरताई माता मन्दिर - बांसवाड़ा (त्रिपुरी सुन्दरी)
→ पांचाल जाति की कुलदेवी

49. कपिलधारा का मेला - बारां (किशनगंज क्षेत्र)
→ कार्तिक पूर्णिमा

50. कणसवा मन्दिर - कोटा

51. बुड्ढाजोहड़ मेला - श्री गंगानगर (श्रावण अमावस्या)

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

52. महामंदिर - जोधपुर (नाथ सम्प्रदाय)

53. तीजा माता का मन्दिर - जोधपुर

54. तुलजा भवानी का मन्दिर - चित्तौड़

55. विक्रमादित्य मेला - उदयपुर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

पशुमेले

मल्लीनाथ जी, तिलवाड़ा (बाड़मेर) -
चैत्र महीनें में

- मल्लीनाथ के क्षेत्र को मालाणी कहा जाता है, इस नाम पर एक ट्रेन का नाम रखा गया है।
- हालही में इस क्षेत्र में मल्लीनाथ प्रीमीयर लीग (MPL) का आयोजन किया जाता है।

1. तेजाजी पशु मेला - परबतसर (नागौर)
2. बलदेव पशु मेला - मेड़ता
3. बाबा रामदेव पशु मेला - मानासर (नागौर)
4. जसवन्त पशु मेला - भरतपुर
5. चन्द्रभागा पशु मेला - झालरापाटन
6. गोमतीसागर पशु मेला - झालावाड़
7. महाशिवरात्रि पशु मेला - करौली
8. लुणियावास पशु मेला - जयपुर (गधों व घोड़ों का मेला)
9. गोगाजी पशु मेला - गोगामेड़ी (हनुमानगढ़)
10. सेवड़िया पशु मेला - रानीवाड़ा (सांचौर)
11. बजरंग पशु मेला - उज्जैन (भरतपुर)
12. कार्तिक पशु मेला - पुष्कर (अजमेर)
13. चन्द्रसेन पशु मेला - टोंक

राज्य में सर्वाधिक पशु मेले नागौर में आयोजित किए जाते है।

पर्यटन उत्सव

1. पतंग महोत्सव - जयपुर और जैसलमेर
2. शरद महोत्सव आबू
3. ग्रीष्म महोत्सव आबू
4. ब्रज महोत्सव भरतपुर
5. हाथी महोत्सव जयपुर
6. ऊँट महोत्सव बीकानेर
7. मीरा महोत्सव चित्तौड़गढ़
8. मरु महोत्सव जैसलमेर
9. मारवाड़ महोत्सव जोधपुर
10. थार महोत्सव बाड़मेर
11. मत्स्य महोत्सव अलवर
12. आभानेरी महोत्सव दौसा
13. रणकपुर महोत्सव पाली
14. गोड़वाड़ मेला पाली
15. राष्ट्रीय दशहरा मेला - कोटा
16. चन्द्रभागा मेला झालावाड़
17. राजीविका सरस मेला (हस्तशिल्प) - जयपुर
18. हस्तशिल्प उत्पाद ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म पर राजसखी ब्रान्ड से बेचे जाते है।
19. जयपुर साहित्यिक उत्सव - जयपुर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

CamScanner

प्रमुख मस्जिदे

1. ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती - अजमेर
2. मीठे शाह की दरगाह - गागरोण (झालावाड़)
3. मलिकशाह की दरगाह - जालौर
4. सैय्यद फखरुद्दीन की दरगाह - गलियाकोट
5. रूमली वाले बाबा की दरगाह - जयपुर
6. हजरत शक्कर बाबा - झुंझुनूं (विष्णु का अवतार)
7. हिंजड़े की मजार - अजमेर
8. फखरुद्दीन चिश्ती की दरगाह - अजमेर
9. पंजाब शाह की दरगाह - अजमेर (ढाई दिन का झोपड़ा)
10. मीरान साहब की दरगाह - अजमेर (घोड़े पर सवार)
11. मरदानशाह की दरगाह - रणथम्भौर
12. तारकीन का उर्स - नागौर
13. गुलाब खाँ का मकबरा - जोधपुर
14. रजिया सुल्तान का मकबरा - टोंक
15. अलाउद्दीन खिलजी की मस्जिद - नागौर
16. गूलर कालूदान की मस्जिद - जोधपुर
17. जालीसर मस्जिद - सांभर
18. गुलाम कलन्दर - जोधपुर
19. एकमिनार - जोधपुर

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

२०. भूरे खाँ की मजार - मेहरानगढ़ (जोधपुर)

२१. सद्दरुद्दीन की दरगाह - रणथम्भौर

२२. शेख मौलाना जिहाउद्दीन दरगाह - जयपुर

२३. सैफुद्दीन अब्दुल वहास की दरगाह - नागौर (कादरी)

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

२४. सफदरजंग की दरगाह - अलवर

२५. बीबी जरीना का मकबरा – धौलपुर

प्रमुख उर्स

1. ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती का उर्स - अजमेर

- 1192 ई. में ये ईरान से भारत आये।
- गरीब नवाज
- रज्जब माह की पहली से छठी तारीख तक उर्स मनाया जाता है। (प्रतिवर्ष)
- भीलवाड़ा का गौरी परिवार झण्डा लेकर जाता है।
- उर्स के दौरान जहाँगीर व अकबर द्वारा प्रदत्त क्रमशः छोटी देग व बड़ी देग में चावल पकाकर प्रसाद बाँटा जाता है।

२. गलियाकोट का उर्स - डूँगरपुर

- संत सैय्यद फखरुद्दीन की मज़ार
- दाऊदी बोहरा सम्प्रदाय की आस्था का प्रमुख केन्द्र। (मजार-ए-फखरी)
- मुहर्रम की २७ वीं तारीख को उर्स।

CamScanner

3. तारीफिन का उर्स- नागौर

- शेख हमीदुद्दीन नागौरी का उर्स
- "तारीफिन का दरवाजा" यहीं है।

4. नरहड़ पीर- झुंझुनूं

- हजरत शक्कर बाबा (बांगड़ के धणी धौरी)
- उर्स- कृष्णाजन्माष्टमी

5. मलिकशाह का उर्स- जालौर

6. मीठेशाह का उर्स -सांभर

7. फखरुद्दीन चिश्ती का उर्स- अजमेर

8. हजरत गल्ले वाले बाबा का उर्स- जयपुर

9. सदरुद्दीन की दरगाह का उर्स- रणथम्भौर

10. चौटिला पीर दूलेहशाह का उर्स - पाली

THE NOTES HUB

राजस्थान के लोक वाद्ययंत्र

लोक वाद्य लोकसंगीत के महत्त्वपूर्ण अंग होते है एवं बिना वाद्य के संगीत सूना है। इनके प्रयोग से गीतों व नृत्यों की माधुर्य वृद्धि के साथ ही वातावरण निर्माण एवं किसी कलाकार की भवाभिव्यक्ति को प्रभावशाली बनाने का कार्य होता है। अतरू राजस्थान के लोकसंगीत में यहाँ के परिवेश, स्थिति व भावों के अनुरूप लोक वाद्यों का प्रचुर विकास हुआ है, जिनका वर्गीकरण निम्न प्रकार से है

- ✓ **तत**
- ✓ **अवनद्ध**
- ✓ **घन**
- ✓ **सुषिर**

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

1.तत् वाद्य– जिन वाद्यों में तारों के द्वारा स्वरों की उत्पत्ति होती है वे तत् वाद्य कहलाते है। राजस्थान के लोकसंगीत में प्रयोग लिए जाने वाले तत् वाद्यों की सूची इस प्रकार है

❖ सारंगी

- यह वाद्य तून, सागवान, कैर या रोहिड़े की लकड़ी से बनाया जाता है। इसमें कुल 27 तार होते है एवं ऊपर की तारें बकरे की आंतों से बनी होती है।
- इसका वादन गज से किया जाता है जो घोड़े की पूंछ के बालों से निर्मित होता है। गज को बिरोजा पर घिसकर बजाने पर तारों से ध्वनि उत्पन्न होती है।
- राजस्थान में दो तरह की सारंगियाँ प्रचलित है– सिन्धी सारंगी व गुजरातण सारंगी । गुजरातण सारंगी की तुलना में सिन्धी सारंगी आकार में बड़ी एवं उन्नत व विकसित होती है। गुजरातण सारंगी में तारों की संख्या केवल 7 होती है।
- मारवाड़ के जोगियों द्वारा गोपीचन्द, भृतहरि, निहालदे आदि के ख्याल गाते समय एवं बाड़मेर व जैसलमेर क्षेत्र की लंगा जाति द्वारा सारंगी का प्रयोग किया जाता है।

❖ **जन्तर–**

- यह वीणा के सादृश्य होता है। इसे वीणा का प्रारम्भिक रूप कहा जा सकता है क्योंकि वीणा के समान इसमें भी दोनों ओर दो तुम्बे होते है जो कि गूँज के साथ ध्वनि उत्पन्न करते है।
- यह वाद्य अंदर से खोखला होता है। इस यंत्र की खोखली संरचना, जिसे डाँड कहा जाता है, बाँस की बनी होता है। जन्तर वाद्य पर मगर की खाल के 22 पर्दे मोम से चिपकाये जाते है एवं इन पर्दों के ऊपर पाँच या छरू तार लगे होते है, जिन्हें हाथ की अँगुली या अँगूठे से बजाया जाता है।

- इस वाद्य का वादन खड़े होकर गले में लटकाकर किया जाता है।
- इसका प्रयोग मुख्यतरू भोपों द्वारा देवनारायण जी की फड़ व भजन गाते समय किया जाता है। जन्तर वाद्य के वादन बगैर इस फड़ का बाँचना अधूरा माना जाता है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

❖ रावणहत्था

- यह राजस्थान का बहुत प्राचीन व बहुप्रचलित लोक वाद्य है एवं इसे वायलिन का प्रारम्भिक रूप कहा जा सकता है।
- इसे बनाने के लिए बड़े नरियल की अर्द्ध कटोरी पर बकरी की खाल मढ़ी जाती है जो 80–90 से.मी. लंबे बाँस के साथ लगी होती है।
- बाँस में जगह–जगह छिद्र कर खूँटियाँ लगा दी जाती है, जिनमें 9 तार बंधे होते है।
- इस वाद्य का गज घोड़े के पूंछ के बालों से निर्मित होता है एवं गज के अंतिम छोर पर घुंघुरू बंधे होते है जो उसके संचालन के साथ ध्वनि उत्पन्न कर ताल कार्य ही करते है।
- इस वाद्य का प्रयोग मुख्यतरू भोपों व भीलों द्वारा पाबूजी की फड़ व अन्य देवी–देवताओं के भजन व गीत गाते समय किया जाता है।

❖ रवाज

- यह सारंगी की तरह का वाद्य है, जिसे गज के स्थान पर नखे (नाखून) से आघात करके बजाया जाता है। इसमें तारों की संख्या 12 होती है।
- इस वाद्य को ढफ भी कहा जाता है एवं यह वाद्य मेवाड़ के राव व भाट जाति के लोग अधिक बजाते है।
- तंदुरा, चौतारा, निशान, तम्बूरा
- इन चारों नामों से एक ही प्रकार का वाद्य राजस्थान में प्रचलित है, इस वाद्य की आकृति तानपूरे से मिलती है।
- यह चार तारों वाला वाद्य है जिसका निर्माण लकड़ी से होता है।
- वादक इसे बायें हाथ में पकड़कर दाहिने हाथ की पहली उंगली में मिजराब पहिनकर बजाता है।
- इसे मुख्यतरू रामदेवजी के भजन गाते समय कामड़ जाति के लोग व निर्गुण भजन करने वाले नाथपंथी बजाते है।

❖ एकतारा

- एकतारा का अर्थ है एक तार। यह वाद्य गोल तुम्बे में बाँस की डंडी फँसाकर बनाया जाता है। तुम्बे का एक हिस्सा काटकर इसे बकरे के चमड़े से मढ़ दिया जाता है। बाँस पर दो खूँटियाँ लगी होती है जिन पर ऊपर–नीचे दो तार बंधे होते है।
- यह एक ही हाथ में पकड़कर बजाया जाता है और दूसरे हाथ में करताल बजायी जाती है।

- इसको मुख्यतरू कालबेलिया एवं नाथ–संप्रदाय के साधु–संन्यासी बजाते है।

❖ **भपंग**

- इसका आकार डमरूनुमा होता है। यह खोखले तम्बू के गोले से बना दो मुंहा वाद्य है जिसको एक ओर से बकरे के चमड़े से मढ़ते है तथा दूसरी ओर से खुला छोड़ दिया जाता है।
- चमड़े के बीच में से छेद कर एक तार निकाला जाता है जिसे एक खूँटी से बाँध दिया जाता है। खूँटी को तानते व ढीला करते हुए विभिन्न ध्वनियाँ निकली जाती है। इस यंत्र को काँख में दबाकर बजाते है।
- वर्तमान में इसे प्लास्टिक के तन्तु से बनाते है। इस वाद्य का प्रयोग आमतौर पर मेवात के जोगी समुदाय द्वारा प्रधानता से किया जाता है।
- अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त जहुर खाँ इस वाद्य के प्रसिद्ध कलाकार है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010034

❖ **कमायचा**

- यह सारंगी के समान होता है किन्तु इसकी तबली सारंगी की तबली की अपेक्षा चौडी व गोल तथा चमड़े से मढ़ी हुई होती है।
- कमायचा की चमड़े से मढ़ी हुई तबली पर खूँटी प्रणाली एवं घुड़च उपस्थित रहते है।
- कमायचा की तबली के चौड़ी एवं गोलाकार होने के कारण इसकी ध्वनि में भारीपन व गूँज होती है।
- इसे बनाजे का गज भी सारंगी की गज से लाभग डेढ़ा होता है एवं घोड़े की पूंछ के बालों से बना होता है।
- इसमें 27 तार होते है जिसमें से 3 तार घुड़च के ठीक ऊपर से निकलते है।
- इसका सर्वाधिक प्रयोग मुस्लिम शेख, जिन्हें मागणियार भी कहते है, लोकगीत व मांड गायन के दौरान करते है।
- साकर खाँ इस वाद्य के प्रसिद्ध कलाकार है जिन्हें अपनी इस अनूठी कला के लिए पद्मश्री मिल चुका है।

❖ **गुजरी**

- यह रावणहत्था से थोड़ा छोटा उसी प्रकार का वाद्य है एवं इसमें 5 तार होते है। इसका गज अर्द्धचंद्राकार होता है।

❖ **सुरिंदा**

- रोहिड़े की लकड़ी से बने इस वाद्य के गज पर घुंघुरू बंधे होते है एवं इसे गायन के साथ नहीं बजाया जाता है।

❖ **चिकारा**

- कैर की लकड़ी का बना इस वाद्य का एक सिरा प्याले के आकार का होता है जिसमें 3 तार बंधे होते है। इसे छोटी गज की सहायता से बजाया आता है।

CamScanner

❖ **दुकाको**

- इसे घुटनों के बीच रखकर बजाया जाता है। आमतौर पर भील जाति के लोगों द्वारा दीपावली के अवसर पर इस वाद्य को बजाया जाता है।

2.सुषिर वाद्ययंत्र– वे वाद्य जिन्हें फूँक कर बजाया जाता है सुषिर वाद्य–यंत्रों की श्रेणी में आते है। ये निम्न है–

❖ **बांसुरी**

- यह एक अति प्राचीन लोक वाद्य है जो समय के साथ परिष्कृत हो विभिन्न संगीत कलाओं का अभिन्न अंग बन चुका है।
- इसे पारंपरिक रूप से बाँस की पोली नली से बनाया जाता है। पोली नली में स्वरों को लिए छरू या सात छेद बनाया जाते है जिनकी दूरियाँ स्वरों की शुद्धता के लिए निश्चित रखी जाती है।
- बांसुरी के एक छोर पर एक छेद होता है जो वादक द्वारा फूँक देकर संगीत उत्पन्न करने हेतु होता है। आमतौर पर बांसुरी का यह छोर क्षैतिज रूप से नीचे की ओर तिरछा होता है।

THE NOTES HUB

❖ **अलगोजा**

- अलगोजा राजस्थान का राज्य वाद्य है। यह बांसुरी की तरह का होता है। इसमें दो बांसुरियों का जोड़ा होता है जो एक साथ बजाया जाता है।
- इसमें समान्यतरू एक बांसुरी का आकार दूसरी के बड़ा होता है एवं इन बांसुरियों में कुछ में 3 तथा कुछ में 5 छेद होते है जो स्वरों की शुद्धता के लिए निश्चित दूरी पर होते है।
- वादक दो अलगोजे मुँह में रखकर एक साथ बजाता है जिसमें एक अलगोजे पर 'सा' ध्वनि बजती रहती है तथा दूसरे पर भिन्न–भिन्न स्वर निकाले जाते है।वादक बिना रुके तेजी से इसमें फूँकता है जिससे ध्वनि उत्पन्न होती है एवं दोनों तरफ अपनी अंगुलियों का प्रयोग कर स्वरों में भिन्नता लाता है।
- यह वाद्य जैसलमेर, जोधपुर, बाड़मेर, बीकानेर, जयपुर, एवं टोंक आदि क्षेत्रों में मुख्य रूप से बजाया जाता है।
- अलगोजा को वीर तेजाजी की जीवन गाथा, डिग्गीपुरी का राजा, ढोला–मारू नृत्य और चक्का भवाई नृत्य में भी बजाया जाता है।
- इसका प्रयोग भील व कालबेलिया जातियाँ प्रधानता से करती है एवं जयपुर के पदमपुरा गाँव के प्रसिद्ध कलाकार रामनाथ चौधरी नाक से अलगोजा बजाते है।

❖ **पूँगी**

- इस वाद्य में सर्पकों मोहित करने की अद्भुत क्षमता होती है इसलिए मुख्यतरू सपेरों द्वारा प्रयोग में लिया जाता है।
- यह वाद्य घीया तुम्बे का बना होता है जिसका ऊपरी हिस्सा लंबा एवं नीचे का हिस्सा गोल होता है। गोल हिस्से में दो छिद्रित नालियाँ लगाई जाती है जिसमें हवा फूँकने पर एक नली में से "सा" स्वर बजता रहता है जबकि दूसरी नली से भिन्न–भिन्न स्वर उत्पन्न किए जाते है।
- यह कालबेलियों व आदिवासियों का प्रसिद्ध वाद्य है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010354

❖ **मुरला/मुरली**

- यह पूँगी का परिष्कृत रूप है। इसे नलीदार तुम्बे के नीचे चौड़े भाग में दो बाँस की नालियाँ फँसाकर बनाया जाता है एवं इन नालियों से ध्वनि उत्पन्न की जाती है।

❖ **शंख**

- समुद्र से प्राप्त इस वाद्य का प्रयोग देवी–देवताओं की आराधना के दौरान मंदिरों में किया जाता है। इसका प्रयोग युद्ध के प्रारम्भ के पूर्व भी किया जाता है।

❖ **शहनाई**

- यह सुषिर वाद्यों में सर्वश्रेष्ठ व सुरीला वाद्य है। इसकी ध्वनि शुभ मानी जाती है अतः प्राचीन राजा–महाराजाओं के यहाँ ये सदैव बजती थी एवं विवाह उत्सवों में मुख्यतरू इसे बजाया जाता है।
- इसे शीशम, सागवान या टाली लकड़ी से बनाया जाता है। इसका आकार चिलम के समान होता है। इसमें आठ छेद होते है एवं इसका पत्ता ताड़ के पत्ते का बना होता है। सामन्यतरू इसे नगाड़े की संगत में बजाया जाता है।
- मेवाड़ की माँगीबाई इस वाद्य की प्रसिद्ध लोकप्रिय कलाकार है।

❖ **सतारा**

- यह अलगोजा, बांसुरी व शहनाई का समन्वित वाद्य है।
- अलगोजे की भाँति इसमें दो लंम्बी बांसुरियाँ होती है जिनमें से एक आधार स्वर देती है तथा दूसरी बांसुरी के छरू छेदों को बजाकर भिन्न–भिन्न स्वर उत्पन्न किए जाते है।
- इस वाद्य की बड़ी विशेषता यह है कि किसी भी इच्छित छेद को बंद करके आवश्यकतानुसार सप्तक में परिवर्तित किया जा सकता है। इस सुविधा ने इस वाद्य को अत्यंत उन्नत बना दिया है।
- इस वाद्य को मुख्यतरू जैसलमेर व बाड़मेर की जन–जातियों द्वारा प्रयोग में लिया जाता है।

❖ **मोरचंग**

- यह लोहे का बना छोटा सा वाद्य है, जिसे ओठों के बीच रखकर बजाया जाता है।
- इसमें एक धातु के बने गोलाकार हैंडिल से दो छोटी व लंबी धातु की छड़े निकली होती है। इन दो छड़ों के बीच में लोहे की एक पतली लंबी रीड रहती है जिसके मुँह पर थोड़ा सा घुमाव दे दिया जाता है।
- इस वाद्य को ओठों से दबाने के बाद श्वास–प्रश्वास से रीड में कंपन्न होता है और इस तरंगित रीड के मुड़े हुए हिस्से पर अँगुली से आघात करके स्वर व लयपूर्ण ध्वनि निकाली जाती है।

❖ **बांकिया**

- यह पीतल से निर्मित बिगुल की आकृति समान वाद्य है जिसके एक ओर के छोटे मुँह में फूँक मारकर बजाया जाता है।
- यह सरगड़ों का खानदानी वाद्य है जिसे ढ़ोल व थाली की संगत में बजाया जाता है।

❖ **मशक**

- मशक को बकरी के चमड़े की सिलाई कर बनाया जाता है। इसमें एक ओर से मुँह से हवा भरी जाती है एवं दूसरी ओर आगी हुई नली के छेदों से स्वर निकाले जाते है।
- इसकी ध्वनि पूँगी की तरह है एवं इसका प्रयोग भेंरूजी के भोपें अधिक करते है।

❖ **भूंगल**

- यह मेवाड़ की भवाई जाति का प्रमुख वाद्य है जो गाँव में खेल शुरू होने से पहले जनता को एकत्रित करने के लिए बजाया जाता है।
- पीतल की लंबी नली से बना यह वाद्य बिगुल की भाँति युद्ध शुरू करने के पूर्व भी बजाया जाता है।

❖ **नागफणी**

- यह वाद्य पीतल की सर्पाकार नली का होता है जिसके पिछले हिस्से में एक छेद होता है।

❖ **करणा**

- यह पीतल का 7–8 फीट लंबा नोकदार वाद्य है । इस वाद्य के सकड़े मुँह पर एक छेद होता है जिसमें सुरनाई जैसी नली लगी होती है।

❖ **तुरही**

- यह पीतल की दो मुँहा नली से बना वाद्य है जिसकी आकृति नोकदार होती है। इसका एक मुँह छोटा एवं दूसरा मुँह चौड़ा होता है।

❖ **सुरनाई**

- इसकी आकृति शहनाई से मिलती है एवं इसके मुँह पर खजूर, ताड़ व कगौर के वृक्ष का सरकण्डा लगा होता है। इस वाद्य को गीला करके बजाया जाता है।
- ढोली, लंगा, मांगणियार, ढाढ़ी जाति के लोगो द्वारा इसे विवाह आदि मांगलिक अवसरों पर बजाया जाता है।
- अन्य सुषिर वाद्य– सींगी, टोटो, बरगू, हरनाई, नड़ आदि।

3.अवनद्ध वाद्ययंत्र– इस श्रेणी में चमड़े से मढ़े वे वाद्य आते है जिनके चमड़े वाले भाग पर आघात कर ताल उत्पन्न की जाती है।

❖ मृदंग

- ताल वाद्य यंत्रों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण वाद्य है। इसे बीजा, सुपारी, वट आदि वृक्षों की लकड़ी को खोखला करके बनाया जाता है। इस का एक मुँह सकड़ा एवं दूसरा मुँह चौड़ा होता है, दोनों मुँहों को बकरे की खाल से मढ़ा जाता है।
- दोनों मुँहों पर मढ़ी हुई बकरे की खाल को, मृदंग के परिधि पर चमड़े की बनी रस्सियों से परस्पर जोड़ा जाता है।
- धार्मिक उत्सवों पर इसका प्रयोग किया जाता है एवं राजस्थान में रावल और राविया जाति के लोग नृत्य के साथ भी इसका प्रयोग करते है।

❖ पखावज

- दो मुँहा खोखली लकड़ी के दोनों छोरों पर चमड़े को मढ़ कर इस वाद्य यंत्र को बनाया जाता है एवं इस वाद्य की आकृति प्राचीन मृदंग की आकृति के समान होती है।
- पखवाज के प्रसिद्ध वादक पण्डित पुरषोत्तम दास को अपनी अनूठी कलाकारी के लिए पद्मश्री से सम्मानित किया गया है।

THE NOTES HUB

❖ ढोलक

- यह लकड़ी को खोखला करके बनाया गया वाद्य है जिसके दोनों छोर लगभग समान व्यास के होते है।
- इसका मध्य भाग कुछ चौड़ा होता है एवं इस पर लगी रस्सियाँ, जो दोनों छोरों को जोड़ने का कार्य करती है, पर कड़ियाँ लगी रहती है।
- राजस्थान में नगारची, सांसी, कंजर, ढाढ़ी, मीरासी, कव्वाल, भवाई व विभिन्न संप्रदायों के साधु–संत आदि इसे बजाते है। भवाई नृत्य के दौरान प्रयोग ली जाने वाली ढोलक आकार में सबसे बड़ी होती है।

❖ ढोल

- यह एक दो मुँहे बैरल की आकृति का होता है इसे विभिन्न संगीत कलाओं में सहायक वाद्य के रूप में बजाया जाता है।

CamScanner

- यह वाद्य पहले लकड़ी का बनाया जाता था, किन्तु अकबर के समय से लोहे का बनने लगा। इस लोहे के खोल को दोनों ओर से चमड़े से मढ़ा जाता है।
- इसे एक मांगलिक वाद्य माना जाता है एवं राजस्थान में इसे बजाने के 12 प्रकार है जैसे– गैर का ढोल, नाच का ढोल, आरती का ढोल आदि।
- लोक नृत्यों में भी इसका प्रचुर प्रचलन है जैसे– जालौर का ढोल नृत्य, भीलों का गैर नृत्य एवं शेखवाटी का कच्छी घोड़ी नृत्य में इत्यादि।
- इसे हाथों एवं डंडों दोनों से बजाया जाता है एवं राजस्थान में ढोली, सरगड़े, भील, भांभीआदि इसे कुशलता से बजाते है।

❖ नगाड़ा

- यह वाद्य युगल रूप में होता है जिसमें से एक को नर नगाड़ा व दूसरे को मादा नगाड़ा कहा जाता है।
- यह सुपारी की आकृति जैसा होता है जिसका व्यास 1–2 फीट तक होता है। इस वाद्य को भैंसे की खाल से मढ़ा जाता है।
- ढोल, राणा, मीरासी जातियों के लोग इसे लोकनृत्यों में प्रधानता से बजाते है। लोकनृत्यों में नगाड़े के साथ शहनाई की संगत की जाती है।

❖ नौबत

- यह मंदिरों में प्रयुक्त होने वाला ताल वाद्य है एवं इसे बबूल या शीशम के डंकों का आघात करके बजाया जाता है।

❖ मादल

- प्राचीन लोक वाद्य, मादल की आकृति मृदंग के समान होती है एवं यह मिट्टी से बना होता है।
- मादल के दोनों मुँह, जिसमें एक मुँह छोटा व दूसरा बड़ा होता है, को हिरण या बकरे की खाल से मढ़ा जाता है।
- भील लोक गवरी नृत्य के साथ तथा शादियों में व ग्राम्य देवी–देवालयों में इसे बजाते है एवं इसे साथ थाली वाद्य भी बजाया जाता है।

❖ चंग

- यह राजस्थान का लोकप्रिय वाद्य है जिसे होली के अवसर पर मुख्यतरू शेखवाटी क्षेत्र में बजाया जाता है।
- यह लकड़ी के गोल घेरे के रूप में होता है जिसे एक ओर से बकरे या भेड़ की खाल से मढ़ा जाता है तथा दूसरी ओर को खुला छोड़ दिया जाता है।
- इसे बायें हाथ की हथेली पर टिकाकर दाहिने हाथ से गीत गाते समय बजाया जाता है।
- कालबेलिया जाति के लोग इसे प्रधानता से बजाते है एवं इस पर प्रमुखतरू कहरवा ताल बजायी जाती है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

❖ **खंजरी**

- आम की लकड़ी से बने इस वाद्य को, एक ओर से खाल से मढ़ा जाता है एवं इसे दाहिने हाथ से पकड़कर बायें हाथ से बजाया जाता है।
- कामड़ बालई, भील, नाथ, कालबेलिया आदि लोग इसे मुख्य रूप से बजाते है।

❖ **डमरू**

- यह दो मुँहा छोटे बैरल की आकृति का होता है जिसके दोनों मुँहों पर चमड़ा मढ़ा जाता है। इसके बीच के पतले हिस्से में चमड़े की दो डोरियाँ बँधी होती है जिनके सिरों पर घूघरू या मोती लगे होते है। इसे बजाने के लिए बीच से पकड़कर हिलना पड़ता है।

❖ **डैंरू**

- यह डमरू का बड़ा रूप है एवं आम की लकड़ी का बना होता है। इसे बायें हाथ से पकड़कर,दाहिने हाथ द्वारा लकड़ी की डंडी से आघात कर बजाया जाता है।
- आमतौर पर इसके संगत में थाली व काँसे का कटोरा भी बजाया जाता है।

❖ **ढाक**

- यह वाद्य डैंरूनुमा, किन्तु उससे आकार में बड़ा होता है। इस वाद्य को विभिन्न अवसरों व त्यौहारों पर गुर्जर जाति के लोगों द्वारा दोनों पैरों पर रखकर बजाया जाता है।

❖ **डफ**

- यह लोहे के बने गोल घेरे पर खाल मढ़कर बना वाद्य है जिसे एक हाथ द्वारा डंडे की सहायता से आघात कर बजाया जाता है। इसी वाद्य का छोटा रूप डफली होता है।

❖ **पाबू जी के माटे**

- मिट्टी के बड़े बर्तनों के मुख पर खाल मढ़कर एवं रस्सी से बाँधकर यह वाद्य बना जाता है। थोरी या नायक जाति के लोगों द्वारा पाबूजी के पवाड़े गाते समय इसे बजाया जाता है।

❖ **धौंसा**

- इसे आम की लकड़ी से बने घेरे पर भैंसे की खाल मढ़कर बनाया जाता है एवं लकड़ी के मोटे डंडों की सहायता से बजाया जाता है।

❖ **ताशा**

- यह लोहे या मिट्टी के छापते कटोरों पर बकरे की खाल मढ़कर बनाया जाता है एवं गले में लटकाकर दो पतली डंडियों से बजाया जाता है। यह वाद्य मुस्लिम समुदाय में अधिक प्रचलित है।

❖ **दमामा**

- यह कढ़ाई के आकार का लोहे का बहुत बड़ा नगाड़ा है जो भैंसे की खाल से मढ़ा जाता है। इसे दो बड़े व भारी डंडों से बजाया जाता है। इसे मुख्य रूप से युद्ध के वाद्यों के साथ बजाया जाता था।

CamScanner

❖ **घेरा**

- अष्ट भुजाकार आकृति वाले इस वाद्य के एक ओर चमड़ा मढ़ा जाता है। लकड़ी के डंडे के ऊपरी भाग पर कपड़ा लपेटकर इसे बजाया जाता है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

4.घन वाद्ययंत्र– धातु से निर्मित वाद्य इस श्रेणी के वाद्य होते है।

❖ **मंजीरा**

- यह पीतल व काँसे की मिश्रित धातु का छोटा गोलाकार वाद्य होता है।
- इसमें दो मंजीरों को आपस में घर्षित कर ध्वनि उत्पन्न की जाती है।
- होली व निर्गुण भक्ति के भजन गाते समय इनके साथ तंदुरे व एकतारे का प्रयोग भी किया जाता है। कामड़ जाति की महिलाएँ तेरहताली नृत्य के दौरान अपने शरीर पर 13 मंजीरे धारण कर मधुर ध्वनि उत्पन्न करती है। रामदेवजी के भोपें भी भजन गायन के दौरान इनका परयोग करते है।

❖ **झांझ**

- यह मंजीरे का बड़ा रूप है। यह शेखावाटी क्षेत्र का प्रसिद्ध वाद्य है एवं इसे कच्छी घोड़ी नृत्य में ताशे की संगत में प्रयोग लिया जाता है।

❖ **थाली**

- इसे काँसे की थाली के एक किनारे पर छेद कर एवं उसमें रस्सी बाँधकर अँगूठे से लटकाकर लकड़ी के डंडे के आघात द्वारा बजाया जाता है।
- भील, कालबेलिया आदि जातियाँ इसे विशेष रूप से बजाती है।

❖ **खड़ताल**

- खड़ताल शब्द करताल (हाथों से उत्पन्न ध्वनि) से बना है।
- इस वाद्य में दो लकड़ी की टुकड़ों में बीच में पीतक की छोटी–छोटी तश्तरियाँ लगी रहती है जो की लकड़ी के टुकड़ों के परस्पर टकराने से मधुर स्वर व ध्वनि उत्पन्न करती है।
- खड़ताल का प्रयोग विशेषतरू भक्तजनों व साधु–संतों द्वारा भजन व धार्मिक गीत गाते समय किया जाता है एवं इसे इकतारे की संगत में बजाया जाता है।
- बाड़मेर क्षेत्र के प्रसिद्ध कलाकार सदीक खाँ खड़ताल बजाने में दक्ष है एवं इन्हें खड़ताल का जादूगर कहा जाता है।

❖ **चिमटा**

- यह लोहे की दो पतली पट्टिकाओं से मिलकर बना होता है एवं इन पट्टिकाओं के बीच लोहे की गोल–गोल छोटी पत्तियाँ लगी होती है।

- इसे बायें हाथ में पकड़कर, दायें हाथ की अंगुलियों से भजन–कीर्तन के समय बजाया जाता है।

❖ घण्टा/घड़ियाल

- यह पीतल या अन्य धातु का गोलाकार वाद्य है जिसे डोरी से लटकाकर हथोड़े व इसके अंदर लटके हुए डंडे से आघात कर बजाया जाता है।
- इसका प्रयोग मुख्यतरू मंदिरों में किया जाता है एवं इसी का छोटा रूप घण्टी कहलाता है।

❖ भरनी

- यह वाद्य, मिट्टी के मटके के सकड़े मुँह पर काँसे की प्लेट ढँककर बनाया जाता है जिसे दो डंडियों की सहायता से बजाया जाता है।
- यह मुख्यतरू भरतपुर–अलवर क्षेत्र में लोकदेवताओं के यहाँ सर्प के काटे हुए व्यक्ति का इलाज करते समय बजाया जाता है।

❖ रमझोल

- इसमें चमड़े की पट्टी पर बहुत सारे छोटे–छोटे घुंघुरू सिले होते है। जिन्हें नृत्य करते समय दोनों पैरों पर बाँधा जाता है एवं इसमें लगे घुंघुरू शरीर के संचालन के साथ मधुर ध्वनि उत्पन्न करते है।
- होली पर गैर नृत्य करने वाले एवं भील लोग विभिन्न चक्राकार नृत्यों में इसका प्रयोग करते है।

❖ घुरालियो

- यह वाद्य बाँस की खपच्चियों से बनाया जाता है। इस खपच्ची को एक ओर से छीलकर उस पर धागा बाँध दिया जाता है।
- इसे दाँतों के बीच दबाकर धागे को ढील व तनाव देकर बजाया जाता है।

THE NOTES HUB
All Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

राजस्थान की प्रथाएँ एवं रीति–रिवाज

1.नाता प्रथा

यह भीलों व अन्य आदिवासी जातियों में प्रचलित प्रथा है जिसमें पत्नी अपने पूर्व पति को छोड़कर अपनी पसंद के किसी अन्य पुरुष के साथ जीवन व्यतीत करती है।

2.केसरिया

राजपूत योद्धाओं द्वारा पराजय की स्थिति में या शत्रु के समक्ष आत्मसमर्पण करने के बजाय केसरिया वस्त्र धारण कर शत्रु पर टूट पड़ना एवं मातृभूमि की रक्षार्थ शहीद हो जाना, केसरिया कहलाता था।

केसरिया का उद्देश्य शत्रु के समक्ष आत्मसमर्पण के बजाय युद्ध में लड़कर वीरगति को प्राप्त करना होता था।

3.जौहर

जब राजपूत योद्धाओं द्वारा केसरिया किया जाता था तब राजपूत वीरांगनाओं द्वारा शत्रु से अपने सतीत्व व आत्मसम्मान की रक्षार्थ किया जाने वाला सामूहिक अग्नि–स्नान, जौहर कहलाता है।

4. सती प्रथा

- इस प्रथा के अंतर्गत पत्नी स्वेच्छा से अपने पति के शव के साथ चिता में जीवित जलकर मृत्यु को वरण करती है।
- प्राचीनकाल में इस प्रथा को अद्वितीय एवं सर्वोच्च बलिदान का प्रतीक माना जाता था, किन्तु मध्यकाल में इसे स्त्री की इच्छा के विपरीत परिवार की मर्यादा एवं प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए किया जाने लगा अतः इस काल में इस प्रथा ने भयावह रूप धारण कर लिया था। इस प्रथा को सहगमन भी कहा जाता है।
- राजस्थान में सर्वप्रथम बूँदी रियासत ने 1822 ई. में इस प्रथा को गैर–कानूनी घोषित किया था।
- राजा राम मोहन राय के प्रयत्नो से 1829 ई. में गवर्नर जनरल लॉर्ड विलियम बैंटिक ने एक अधिनियम पारित कर इस प्रथा को अवैध घोषित कर दिया था।
- अलवर प्रथम राजपूत राज्य था जिसने 1829 ई. के कानून के बाद सबसे पहले 1830 ई. में इस प्रथा को गैर–कानूनी घोषित किया था।

निम्नलिखित रियासतों ने इस प्रथा पर प्रतिबंध लगाए थे

जयपुर– 1844 ई. में
जोधपुर– 1848 ई. में
उदयपुर– 1861 ई. में
कोटा– 1862 ई. में

THE NOTES HUB * Notes are Available * All Competition Books * 7300134518, 7610010054

CamScanner

5.मानव व्यापार/दासों का क्रय–विक्रय

राजस्थान में प्राचीन काल से ही मनुष्यों का व्यापार दासों की खरीद–फरोख्त के रूप में होता था। आम तौर में युद्ध के कैदियों को दास के रूप में बाजार में बेचा व खरीदा जाता था।

राजस्थान में मानव व्यापार पर प्रतिबंध सर्वप्रथम 1847 ई. में जयपुर रिजेन्सी कौंसिल के अध्यक्ष जॉन लुडलो के प्रयासों से लगाया गया था।

उदयपुर में 1863 ई. में एवं कोटा में 1867 ई. में इस प्रथा को गैर–कानूनी घोषित किया गया था।

THE NOTES HUB

6.समाधि प्रथा

इस प्रथा के अंतर्गत व्यक्ति मृत्यु को वरण करने के उद्देश्य से स्वयं को जल में डूबोकर एवं भूमि में दफनाकार अपने प्राण त्याग देता है। आमतौर पर साधू–महात्माओं एवं धार्मिक गुरुओं द्वारा इस प्रथा का पालन किया जाता था।

राजस्थान में सर्वप्रथम जयपुर रियासत द्वारा 1844 ई. में इस प्रथा को गैर–कानूनी घोषित किया गया था। यह कार्य जयपुर रिजेन्सी कौंसिल के अध्यक्ष जॉन लुडलो के द्वारा किया गया था।

7.कन्यावध

मध्यकाल में राजस्थान में विशेषतः राजपूतों में प्रचलित इस प्रथा में कन्या के जन्म लेते ही उसे मार दिया जाता था।

राजस्थान में ब्रिटिश शासन के अधिक प्रभावी होते ही अंग्रेज सरकार ने रियासतों को कन्यावध पर रोक लगाने के आदेश दिये।

कैप्टन हॉल ने केंद्रशासित क्षेत्र मेरवाड़ा की मेर–पंचायत में इस प्रथा पर प्रतिबंध लगवाया था।

राजस्थान में सर्वप्रथम हाड़ौती के पॉलिटिकल एजेंट एजेंट विलकिंसन के प्रयासों से कोटा रियासत ने 1834 ई. में इस प्रथा को गैर–कानूनी घोषित किया था एवं उस काल में महाराव उम्मेदसिंह कोटा के शासक थे।

8.डाकन प्रथा

इस प्रथा में स्त्रियों को डाकन होने के संदेह में शारीरिक एवं मानसिक यातनाएँ व निर्मम अत्याचार किए जाते थे। कई मामलों में डाकन होने के संदेह के स्थिति में स्त्रियों को मार भी डाला जाता था।

राजस्थान में कई जातियों विशेषकर मीणा एवं भील जातियों में यह प्रथा अधिक प्रचलित थी।

CamScanner

राजस्थान में सर्वप्रथम महाराणा स्वरूप सिंह ने ब्रिटिश सरकार की सलाह पर 1853 ई. में उदयपुर में इस प्रथा को गैर–कानूनी घोषित किया था। डाकन प्रथा पर यह प्रतिबंध भीलों द्वारा अपनी प्रथाओं व मान्यताओं पर अंग्रेजी हस्तक्षेप के रूप में माना गया। अतः यह आगामी जनजातीय आंदोलनों का प्रमुख कारण बना।

9.त्याग प्रथा

राजपूत परिवारों में कन्या के विवाह के समय कन्या के पिता द्वारा चारण, ढोली, भाट व अन्य जाति के लोगो को स्वेच्छा से दान–दक्षिणा दी जाती थी, जिसे त्याग कहा जाता था।

कालांतर में चारण, भाट आदि द्वारा हठपूर्वक मुँह–माँगी दान–दक्षिणा की माँग की जाने लगी जिसके फलस्वरूप यह वधू पक्ष के लिए अतिरिक्त बोझ बन गया। सर्वप्रथम जोधपुर राज्य द्वारा इस प्रथा को सीमित करने का प्रयास किया गया।

10.बाल–विवाह

इस प्रथा के अंतर्गत बच्चों की विवाह बिना ज्ञान व सहमति के कर दिया जाता है। राजस्थान में आज भी आखा तीज के दिन बड़े पैमाने पर बाल–विवाह होते है।

समाज सेवी हरविलास शारदा के प्रयत्नों से 1929 ई. में शारदा एक्ट पारित हुआ, जिसके अनुसार लड़कों एवं लड़कियों के लिए विवाह की न्यूनतम आयु क्रमशः 18 वर्ष व 15 वर्ष निर्धारित की गयी।

इस अधिनियम से पूर्व जोधपुर के प्रधानमंत्री सरप्रताप द्वारा इस प्रथा के विरोध में प्रतिबंधक कानून बनाया गया था।

11.विधवा विवाह

वर्तमान समय में भी विधवा का जीवन अत्यंत कष्टपूर्ण होता है। अतः हम कल्पना कर सकते है कि मध्यकाल में विधवा महिला का जीवन अत्यंत नारकीय एवं असहनीय रहा होगा।

समाज सेवी ईश्वरचंद विद्यासागर के अथक प्रयासों के फलस्वरूप लॉर्ड डलहोजी ने विधवाओं को इस दुर्दशा से मुक्त करने हेतु 1856 ई. में विधवा पुनर्विवाह अधिनियम बनाया था।

आर्य समाज के कार्यकर्ता चाँदकरण शारदा ने विधवा विवाह को प्रोत्साहित करने के लिए "विधवा–विवाह" नामक पुस्तक लिखी।

12.सागड़ी प्रथा/बँधुआ मजदूर प्रथा

इस प्रथा के अंतर्गत किसी व्यक्ति को स्थानीय जमींदारों, साहूकारों आदि के द्वारा उधार दी गयी राशि के बदले उम्र भर नौकर के रूप मे कार्य करने के लिए विवश किया जाता था एवं कार्य के बदले में उसे कोई वेतन नहीं दिया जाता था।

CamScanner

1961 ई. में राजस्थान सरकार ने सागड़ी निवारण अधिनियम पारित करके बंधुओं मजदूरों को पूँजीपति जमीदारों व महाजाओं के चुंगल से मुक्ति दिलवाने का प्रयास किया था।

13.हेलमो

यह सामूहिक सहयोग की एक द्वितीय परंपरा है, जिसमें सभी लोग मिलकर निःस्वार्थ रूप से एक दूसरे के कार्यों जैसे घर बनाना, खेत जोतना आदि में सहयोग करते है।

14.झगड़ा

यह एक प्रतिपूर्ति राशि होती है जिसे उस व्यक्ति द्वारा माँगी जाती है जिसकी पत्नी उसे छोड़कर किसी अन्य व्यक्ति के पास चली जाती है।

इस राशि का निर्धारण पंचायत द्वारा किया जाता है एवं दूसरे व्यक्ति को पूर्व पति को यह राशि देना अनिवार्य होता है।

15.दापा

यह प्रथा कई आदिवासी जनजातियों में प्रचलित है जिसमें वर पक्ष को शादी के लिए वधू के पिता को कुछ राशि का भुगतान करना होता है। इस राशि को ही दापा कहा जाता है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

16.मौताणा

यदि किसी आदिवासी की किसी दुर्घटना या अन्य कारण से मृत्यु हो जाती है तो आरोपी व्यक्ति को मृतक के परिवार को एक निश्चित राशि का भुगतान करना होता है। यह निश्चित राशि ही मौताणा कहलाती है।

इस राशि का निर्धारण पंचायत द्वारा किया जाता है। आरोपी को इसे मृतक के परिवार को देना अनिवार्य होता है एवं मौताणा मिलने पर ही मृतक का परिवार शव को घटना स्थल से उठाता है।

17.छेड़ा फाड़ना

यह प्रथा आदिवासियों द्वारा तलाक लेने का एक तरीका है जिसमें आदिवासी व्यक्ति पंचायत के सामने अपनी पत्नी की साड़ी एक हिस्सा फाड़ता है एवं ऐसा करना करना पति द्वारा अपनी पत्नी का त्याग करना समझा जाता है।

18.नातरा/आणा

आदिवासियों में विधवा स्त्री का पुनर्विवाह करना, नातरा/आणा प्रथा कहलाती है।

19.कूड़की रस्म

यह साँसी जाति की एक रस्म है जिसमें नवविवाहिता को विवाह उपरांत अपनी चारित्रिक पवित्रता की परीक्षा देनी होती थी।

20.टीका

विवाह निश्चित होने जाने पर लड़की के पिता या कन्या–पक्ष की ओर से लड़के के लिए दिये जाने वाले उपहार, टीका कहलाते है।

21.रीत

विवाह निश्चित होने पर लड़के वालों की तरफ से लड़की को भेजे जाने वाले उपहार, रीत कहलाते है।

22.सामेला

विवाह के दौरान जब वर वधू के यहाँ पहुँचता है तो वधू के पिता द्वारा अपने सगे–संबंधियों के साथ वर पक्ष का स्वागत किया जाता है इस प्रथा को सामेला कहा जाता है।

23.पीठी

'वर' व 'वधू' का सौंदर्य निखारने हेतु स्त्रियों द्वारा उनके शरीर पर लगाया जाने वाला हल्दी व आटे का उबटन, पीठी कहलाता है।

24.फेरा

वर वधू परिणय सूत्र में अग्नि के समक्ष सात फेरे लगाकर एक दूसरे को सात वचन देते है।

25.सीख

विवाह बाद वर–वधू एवं बारातियों को उपहार देकर विदा किया जाता है इन उपहारों को सीख कहा जाता है।

26.औलन्दी

नववधू के साथ जाने वाली लड़की अथवा स्त्री को औलन्दी कहा जाता है।

THE NOTES HUB
Notes are Available
All Competition Books
7300134518, 7610010054

27.जांनोटण

विवाह के दौरान वर–पक्ष की ओर से दिया जाने वाला भोज जांनोटण कहलाता है।

28.मौसर

मृत्यु भोज की प्रथा को मौसर कहा जाता है।

कुछ व्यक्ति जीवित अवस्था में ही मौसर करते है, जिसे जौसर कहते है।

29.मुगधणा

विनायक स्थापना के प्रश्चात भोजन पकाने के लिए काम में ली जाने वाली लकड़ियाँ, मुगधणा कहलाती है।

30. बढार का भोज

विवाह के मौके पर दिये जाने वाला समूहिक प्रतिभोज, बढार का भोज कहलाता है।

CamScanner

Self Notes

Self Notes

OUR TOPPERS RAS-2021

Kiran Pal Rank-3rd | Vishwajeet Rank-4th | Bharti Gupta Rank-5th | Aakansha Dubey Rank-6th | Satya Narayan Rank-10th | Shaheen Anjum Rank-12th | Deepshikha Rank-13th

Karamveer Singh Rank-15th | Divya Soni Rank-16th | Gaurav Sarswat Rank-18th | Divya Bishnoi Rank-19th | Sejal Shekhawat Rank-20th | Ishwar Lal Gurjar Rank-22nd | Pooja Pareek Rank-23rd

Narendra Rank-24th | Mohan Choudhary Rank-25th | Taniya Rinwa Rank-26th | Paramjeet Singh Rank-27th | Rajat Rank-28th | Neeraj Gupta Rank-31st | Kaushalya Bishnoi Rank-32nd

Vikash Sharma Rank-34th | Suhasi Jain Rank-36th | Ram Kumar Bhadu Rank-38th | Bhajan Lal Jangir Rank-39th | Bindia Bishnoi Rank-40th | Himanshu Singh Panwar Rank-41st | Prateek Sharma Rank-42nd

Shishpal Singh Rank-44th | Mukesh Kumar Rank-46th | Arjun Singh Rathore Rank-48th | Jagvindra Pal Singh Rank-51st | Vijay Pal Yadav Rank-56th | Swati Buri Rank-57th | Tarun Kant Tiwari Rank-58th

Suresh Bishnoi Rank-59th | Vinod Kumar Rank-60th | Shiva Joshi Rank-61st | Anusha Jain Rank-62nd | Om Prakash Godara Rank-64th | Ankit Kuri Rank-66th | Paras Mal Rank-67th

MAHECHA PUBLICATION

Contact Now :
7610010054
7300134518

ORDER NOW
SCAN QR CODE

NRT
Fix Price
160/-

Plot No. 58, West Way Heights, Bhankrota, Jaipur (Raj.)-302026

CamScanner